CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमर सेनानी

सावरकर जीवन झांकी

शिवकुमार गोयल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमर सेनानी सावरकर

जीवन-झांकी

•

शिवकुमार गोयल

'वीर सावरकर'—यह शब्द साहस, वीरता, देशभक्ति का पर्यायवाची बन गया है। 'वीर सावरकर' शब्द के स्मरण करते ही अनुपम त्याग, अदम्य साहस, महान वीरता एक उत्कट देशभक्ति से ओतप्रोत इतिहास के स्वर्णिम् पृष्ठ हमारे सामने साकार होकर खुल पड़ते हैं।

आशा है हिन्दूराष्ट्रपुरुष स्वातन्त्र्यवीर की यह जीवन झांकी पाठकों को उनके पावन जीवन का सिंहावलोकन कराने में सहायक होगी ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमर सेनानी सावरकर

लेखक - *वी. डी. सावरकर*

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 5

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

© हिन्दी साहित्य सदन

मूल्य 30.00
प्रकाशक
एवम्
वितरक हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. डी. चैम्बर्स , 10/54 देश बन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली - 5
फोन - 23553624 फैक्स - 011-25412417
संस्करण 1996
मुद्रक अजय प्रिण्टर्स , नवीन शाहदरा , दिल्ली -32

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो शब्द

'वीर सावरकर'—यह शब्द साहस, वीरता, देशभक्ति का पर्यायवाची बन गया है। 'वीर सावरकर' शब्द के स्मरण करते ही अनुपम त्याग, अदम्य साहस, महान वीरता एवं उत्कट देशभक्ति से ओतप्रोत इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हमारे सामने साकार होकर खुल पड़ते हैं।

वीर सावरकर का व्यक्तित्व साधारण नहीं असाधारण था। बचपन से लेकर मृत्युपर्यन्त उनके जीवन का एक-एक क्षण राष्ट्र-भक्ति, राष्ट्र-सेवा, साहित्य-सेवा समाज-सेवा एवं हिन्दूराष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए संघर्ष में व्यतीत हुआ। वह हिन्दूराष्ट्र हिन्दुस्थान को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने के लिए ही इस भूतल पर अवतरित हुए और अन्त में स्वाधीन किन्तु खण्डित हिन्दुस्थान को 'अखण्ड हिन्दूराष्ट्र' के रूप में प्रतिष्ठित कराने का महान स्वप्न देखते-देखते ही इस भूतल से विदा हो गये।

वीर सावरकर के असाधारण व्यक्तित्व और महान कृतित्व पर यदि कोई लेखक जन्मभर भी लिखता रहे तो वीरता, शूरता, देशभक्ति एवं साहित्य-सेवा का वह इतिहास कभी पूर्ण नहीं होगा। उनके जीवन के केवल एक पक्ष का सिंहावलोकन करने मात्र के लिए हजारों पृष्ठों का ग्रन्थ लिखा जा सकता है।

इस पर भी उस महान् सेनानी वीर सावरकर के पावन जीवन पर अति संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालने के लिए मैंने लेखनी उठाने का दुस्साहस किया है। यह स्वातन्त्र्यवीर के पावन व असाधारण जीवन की केवल एक झाँकी मात्र है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के भतीजे एवं महान् देशभक्त श्री डॉ० नारायण दामोदर सावरकर के सुपुत्र आदरणीय भाई विक्रम-नारायण सावरकर एवं वीर सावरकर जी के निजी सचिव श्री बाल सावरकर दोनों ही मेरे अत्यन्त घनिष्ठ मित्र हैं। दोनों महानुभावों ने सावरकरजी को अत्यंत निकट से देखा एवं अध्ययन किया है। मुझे उनसे सावरकरजी के सम्बन्ध में काफी प्रामाणिक जानकारी प्राप्त हुई है। मैं इसके लिए भाई विक्रमजी एवं श्री बाल सावरकर दोनों का ही हार्दिक आभारी हूँ।

आशा है हिन्दूराष्ट्रपुरुष स्वातन्त्र्यवीर की यह जीवन झाँकी पाठकों को उनके पावन जीवन का सिंहावलोकन कराने में सहायक होगी ?

पिलखुवा (गाजियाबाद) —शिवकुमार गोयलः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम परिच्छेद

उन दिनों भारत-अंग्रेज-साम्राज्यवादियों की गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारतमाता स्वाधीन होने के लिए तड़फड़ा रही थी। पराधीन माँ भारती देश के यौवन की ओर आशा से टकटकी लगाये निहार रही थी।

वीरभूमि महाराष्ट्र के नासिक जिले में एक छोटा-सा ग्राम है भगूर। इसी पवित्र ग्राम में चितपावन वंशीय ब्राह्मण श्री दामोदर सावरकर के घर २८ मई, सन् १८८३ ई० को एक बालक ने जन्म लिया और यह बालक ही आगे चलकर भारतीय स्वाधीनता संग्राम के जन्मजात योद्धा, हिन्दू-हृदय-सम्राट् स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के नाम से इतिहास में अमर हो गया।

बालक विनायक के पिता श्री दामोदर सावरकर एवं माता राधाबाई दोनों ही श्रीराम-कृष्ण के कट्टर भक्त एवं कट्टर हिन्दुत्वनिष्ठ विचारों वाले थे। बालक विनायक को माता-पिता रामायण, महाभारत की कथा सुनाते, हिन्दू सूर्य महाराणा प्रताप व छत्रपति शिवाजी की शौर्यगाथायें सुनाते तो विनायक का हृदय हिन्दू-जाति के गौरवमय इतिहास को सुनकर प्रफुल्लित हो उठता। वह हृदय में कल्पना करता कि मैं छत्रपति शिवाजी व महाराणा प्रताप की तरह वीर बनकर हिन्दू-पदपादशाही की स्थापना करूँगा; विदेशी शासकों के तख्त को चकनाचूर करके स्वतन्त्र हिन्दूराष्ट्र का नव-निर्माण करूँगा। बड़ी तेंजी के साथ बालक विनायक के हृदय में राष्ट्रीयता के अंकुर बढ़ते गये।

विनायक की माँ राधाबाई विनायक को दस वर्ष का छोड़कर स्वर्गवासी हो गयीं। पिता श्री दामोदर सावरकर ने दूसरा विवाह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं किया। राधाबाई के कार्यक्रमों में से रसोई तो उन्होंने स्वयं संभाली और शेष कार्य तीनों पुत्रों में वितरित कर दिये। तात्या (विनायक) के जिम्मे कुलदेवी सिंहवाहिनी दुर्गा की सेवा का काम पड़ा। तात्याराव बड़ी श्रद्धा-भक्ति से कुलदेवी माँ दुर्गा की पूजा आराधना करने लगा। वह देवी की स्तुति में मराठी पद रचता और देवी की प्रतिमा के सम्मुख श्रद्धानत होकर माँ भारती को विदेशी साम्राज्य के जुए से मुक्त कराकर 'स्वतन्त्र हिन्दूराष्ट्र' की स्थापना कराने का वर माँगता।

बालक तात्याराव गाँव के एक विद्यालय में दाखिल करा दिया गया। तात्या ने छोटे-छोटे बालकों का समूह बनाकर धनुषबाण चलाना, तलवार चलाना सीखना प्रारम्भ कर दिया। बालक एकत्रित होकर दो पार्टियाँ बना लेते और फिर नकली युद्ध करते। नकली दुर्ग बनाकर उन पर आक्रमण, प्रत्याक्रमण करते। धनुष-बाण बनाकर पेड़ों के फल-फूलों पर निशाना साधते। लिखने के कलमों को भाला बनाकर युद्ध करते। तात्या सभी बालकों का नेता बन गया।

पाँचवीं कक्षा तक की पढ़ाई गाँव में कर लेने पर तात्या को अंग्रेजी पढ़ने के लिए नासिक भेज दिया गया। नासिक में तात्या ने अपनी आयु के छात्रों की एक मित्र-मण्डली बनाकर छात्रों में राष्ट्रीय भावनाएँ भरनी प्रारम्भ कर दीं। उसने मराठी में देशभक्तिपूर्ण कविताएँ लिखीं जो मराठी के अनेक प्रमुख पत्रों में प्रकाशित हुईं।

तात्या ने अपने सहपाठियों के साथ मिलकर राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ करा दिया। 'केसरी' आदि राष्ट्रीय विचारों के समाचार-पत्रों को मँगाकर देश की स्थिति का अध्ययन किया जाने लगा। हृदय में राष्ट्रभक्ति के अंकुर शनैः-शनैः बढ़ने लगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन दिनों महाराष्ट्र में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक लहर दौड़ रही थी। युवकों में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध रोष फैला हुआ था। ऐसे वातावरण में सन् १८९७ में पूना में भयंकर प्लेग की बीमारी फैल गयी। जनता में चिन्ता की लहर दौड़ गयी। बाल-वृद्ध, नर-नारी काल ग्रास बनने लगे। अंग्रेजी अधिकारियों ने प्लेग की रोकथाम के लिए विशेष पग न उठये तो जनता में अंग्रेजों के विरुद्ध और भी क्षोभ की लहर दौड़ गयी। चाफेकर बन्धुओं ने सिर हथेली पर रखकर अंग्रेज प्लेग कमिश्नर व एक अन्य अधिकारी को गोली का निशाना बना डाला। अंग्रेज अधिकारियों की हत्या से समस्त देश में तहलका मच गया। दोनों चाफेकर बन्धुओं को फाँसी पर लटका दिया गया। चाफेकर बन्धुओं को फाँसी दिये जाने के समाचार से समस्त देश में रोष की लहर दौड़ गयी।

तात्याराव सावरकर ने समाचार-पत्र से चाफेकर बन्धुओं को फाँसी का समाचार पढ़ा तो उनका देशभक्त बाल हृदय क्रोध से काँप उठा। इस घटना ने बालक तात्याराव के हृदय में अंग्रेजी साम्राज्य के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह के बीज पैदा कर दिये। साम्राज्य ने कुलदेवी दुर्गा की प्रतिमा के सम्मुख जाकर कठोर व दृढ़ प्रतिज्ञा की—"देश की स्वाधीनता के लिए जीवन के अन्तिम क्षणों तक सशस्त्र क्रान्ति का झंडा लेकर, जूझता रहूँगा।"

तात्याराव सावरकर ने अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए योजनाएँ बनानी आरम्भ कर दीं। उन्होंने छात्रों को एकत्रित करके 'मित्र मेला' नामक संस्था बनायी। 'मित्र मेला' के तत्वावधान में सावरकर ने 'गणेशोत्सव', 'शिवाजी महोत्सव' आदि के कार्यक्रम आयोजित करके युवकों में सशस्त्र क्रान्ति का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। सावरकर ने ओजस्वी भाषणों द्वारा युवकों को प्रभावित करके अपने दल का सदस्य बना लिया।

२२ जनवरी, १९०१ को महारानी विक्टोरिया का देहान्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ तो समस्त देश में शोक सभाएँ होने लगीं। 'मित्र मेला' की बैठक में सावरकर ने शोक सभाओं का विरोध करते हुए कहा—"इंग्लैंड की रानी, हमारे दुश्मन देश की रानी है, अतः हम शोक क्यों मनाएँ ?"

विदेशी वस्त्रों की होली

सन् १९०१ में सावरकर ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् उन्हें पूना के फर्ग्युसन कालेज में दाखिल करा दिया गया।

फर्ग्युसन कालेज में सावरकर ने युवक छात्रों का शीघ्र ही एक दल बना लिया। उन्होंने कविताएँ एवं लेख लिखकर युवकों में राष्ट्रीय भावनाएँ भरनी प्रारम्भ कर दीं। उनकी रचनाएँ अनेक मराठी पत्रों में प्रकाशित हुईं व अनेक कविताओं पर पुरस्कार भी मिले। 'काल' के सम्पादक, श्री परांजपे सावरकर की रचनाओं से अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने सावरकर का परिचय महान् देशभक्त श्री लोकमान्य तिलक से करा दिया। लोकमान्य तिलक सावरकर की रचनाओं से भी अधिक उनके आकर्षक व तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। परिणामस्वरूप सावरकर श्री तिलक एवं श्री परांजपे के निकट सम्पर्क में आने लगे। उनकी मानसभूमि में राष्ट्रभक्ति के बीज तो पहले से विद्यमान थे ही, अब वे इन व्यक्तियों की तेजस्वी वाणी के अनुकूल जलवायु पाकर अंकुरित एवं पुष्पित हो उठे और उनकी रचनाओं में युवकों के लिए देश पर मर-मिटने का आह्वान प्रति-ध्वनित होने लगा।

सन् १९०५ में सावरकर बी० ए० की तैयारी कर रहे थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी बीच उन्होंने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का जोरदार आन्दोलन चला दिया। उन्होंने सबसे पहले पूना के बीच बाजार में सार्वजनिक रूप से विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने के कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वयं श्री लोकमान्य तिलक ने की। तिलकजी सावरकर की इस सफलता पर भारी प्रसन्न हुए। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने की घटना बिजली की तरह समस्त विश्व में फैल गई। समाचार-पत्रों में इस घटना की काफी आलोचना, प्रत्या-लोचना हुई। परिणामस्वरूप फर्ग्युसन कालेज के अधिकारियों ने सावरकर को कालेज से निष्कासित कर दिया। इस पर भी उनको बंबई विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा देने की अनुमति मिल गई और उन्होंने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सावरकर जी ने अपने विश्वस्त साथियों को एकत्रित करके एक गुप्त बैठक में भारत की स्वाधीनता के लिए सशस्त्र क्रान्ति करने के लिए 'अभिनव भारत, नामक एक संस्था की स्थापना की।

'अभिनव भारत' का प्रत्येक सदस्य निम्न प्रतिज्ञा लेता था—

"छत्रपति शिवाजी के नाम पर अपने पवित्र धर्म के नाम पर और अपने प्यारे देश के लिए पूर्व पुरुषों की कसम खाते हुए मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने राष्ट्र की पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए अन्तिम साँस तक संघर्ष करता रहूँगा। मैं न तो आलस्य करूँगा और न अपने उद्देश्य से हटूंगा। मैं 'अभिनव भारत' के नियमों का पूर्ण पालन करूँगा और संस्था के कार्यक्रम बिल्कुल गुप्त रखूंगा।"

युवक सावरकर ने स्थान-स्थान पर जाकर युवकों को संगठित किया व उनमें देशभक्ति की भावना भरी। सावरकर के ओजस्वी भाषणों ने महाराष्ट्र में तहलका मचा दिया। उन्होंने पूना की एक सभा में भाषण देते हुए कहा कहा —"छत्रपति शिवाजी की संतानो! जिस प्रकार शिवाजी ने मुगल साम्राज्य को विध्वंस किया, सदाशिव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राव भाऊ ने मुगल-तख्त को चकनाचूर किया, उसी प्रकार तुम्हें अब भारत माँ को दासता की बेड़ियों में जकड़ने वाले अंग्रेजों के अत्याचारी साम्राज्य को चकनाचूर करके स्वाधीन हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करनी है। सशस्त्र क्रांति के बल पर इस विदेशी साम्राज्य का तख्ता पलटना है।"

लन्दन को प्रस्थान

सुप्रसिद्ध देशभक्त पं० श्यामजी कृष्ण वर्मा लन्दन से 'इंडियन सोशियालाजिस्ट' नामक पत्र निकालते थे। उन्होंने अपने पत्र में प्रतिभाशाली भारतीय छात्रों को इंग्लैण्ड की पढ़ाई के लिए छात्र-वृत्तियाँ देने की घोषणा प्रकाशित की। श्री लोकमान्य तिलक ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को पत्र लिखकर 'शिवाजी छात्रवृत्ति' सावर-कर देने की सिफारिश की।

इस प्रकार विनायक दामोदर सावरकर कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैण्ड जाने की तैयारियाँ करने लगे। उनके श्वसुर श्री भाऊराव चिपलूणकर ने दो हजार रुपये की राशि उन्हें खर्च के लिए दी। इंग्लैण्ड के लिए वह ९ जून, सन् १९०६ को बम्बई बन्दरगाह से रवाना हुए। श्री लोकमान्य तिलक उन्हें विदाई देने स्वयं बन्दरगाह पर पहुँचे।

इंग्लैंड में पं० श्यामजी कृष्ण वर्मा 'इण्डिया हाऊस' का संचा-लन करते थे। वे आर्य समाजी व कट्टर हिन्दुत्वनिष्ठ राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे।

इंग्लैण्ड में रहकर भारत की स्वाधीनता के लिए वे प्रयत्नशील थे। इंडियन सोशियालाजिस्ट के माध्यम से भारतीयों में राष्ट्रीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावनाओं का प्रचार कर रहे थे। उन्होंने इंग्लैण्ड में 'होमरूल' का आन्दोलन भी चलाया हुआ था।

सावरकर जी इंग्लैंड में इनके 'इण्डिया हाऊस' में ही ठहरे।

सन् १९०६ में सावरकर ने 'फ्री इण्डिया सोसाइटी' की स्थापना की। भाई परमानन्द, सेनापति बापट, मदनलाल ढींगरा, ला० हरदयाल, बाबा जोशी, महेशचरण सिन्हा, कोरगांवकर, हरनामसिंह आदि भारतीय देशभक्त युवक इसके सदस्य बन गए। 'फ्री इण्डिया सोसाइटी' के तत्वावधान में बैठकों का आयोजन करके भारत की स्वाधीनता के लिए योजनाएँ बनाई जाने लगीं। सावरकर ने 'सोसाइटी' की पहली बैठक में अपना ओजस्वी भाषण देते हुए कहा—"अंग्रेजी साम्राज्य को भारत से तभी समाप्त किया जा सकता है जबकि भारतीय युवक के हाथों में शस्त्र लेकर मरने-मारने को कटिबद्ध हो जायें। सशस्त्र क्रांति के द्वारा ही भारत की स्वाधीनता संभव है। अतः हमें भारतीय को इसके लिए तैयार करना है, उनकी शस्त्रास्त्रों से सहायता करनी है।"

सावरकर ने लन्दन विश्वविद्यालय में कानून के अध्ययन के लिए प्रवेश लिया हुआ था। विश्वविद्यालय में वे नाम मात्र को जाते थे। अपना अधिकतर समय वे ब्रिटिश लायब्रेरी में बैठकर विभिन्न देशों की राजनीतिक स्थिति के अध्ययन में लगाने लगे। इटली के क्रांतिवीर मैजिनी के जीवन से वह बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने 'मैजिनी का जीवन चरित्र' लिखा। सन् १९०६ में उन्होंने विभिन्न ग्रन्थों का भारी अध्ययन करने के पश्चात् 'सिखों का स्फूर्तिदायक इतिहास' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा। इसी समय उन्होंने इंग्लैण्ड की विशाल 'लायब्रेरी' में अथक अध्ययन करने के पश्चात् '१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य समर' नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा।

अंग्रेज इतिहासकारों एवं अधिकारियों ने १८५७ के स्वातन्त्र्य समर को 'गदर', लूट' व 'विद्रोह' जैसे नाम देकर बदनाम किया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ था। सावरकर ने सबसे पहले ग्रन्थ, में पूर्ण तथ्य देकर यह सिद्ध किया कि १८५७ को क्रांति 'गदर' 'लूट' नहीं अपितु वीर मंगल पाण्डे, वीरांगना लक्ष्मीबाई, बिहारकेसरी बाबू कुंवरसिंह, तात्या टोपे आदि सैकड़ों हिन्दू वीरों द्वारा बलिदान देकर भारतीय स्वाधीनता के लिए किया गया पहला महान् युद्ध था।"

'१८५७ का स्वातन्त्र्य समर' सन् १९०८ में सबसे पहले मराठी में लिखा गया। सावरकर ने ग्रन्थ के कुछ महत्वपूर्ण परिच्छेद अंग्रेजी में अनुवाद करके 'फ्री इण्डिया सोसाइटी' की सभा में सुनाये। गुप्तचर पुलिस को जब इस पुस्तक का पता चला तो पुस्तक जब्त करने के आदेश जारी कर दिये गये। बड़ी सावधानी से पुस्तक की पाण्डुलिपि भारत भेज दी गयी। भारत में उसे गुप्त रूप से प्रकाशित करने का प्रयास किया गया, किन्तु पुलिस ने मुद्रणालयों पर छापे मारे, जिससे वह प्रकाशित न हो सकी। पुस्तक की पाण्डुलिपि पुनः सावरकर के पास सुरक्षित पहुँच गई। मराठी से अंग्रेजी में अनुवाद करके उसे सबसे पहले हॉलैंड में प्रकाशित किया गया। पुस्तक की हजारों प्रतियाँ फ्रांस भेज दी गयीं। ब्रिटिश सरकार ने इस महान् ऐतिहासिक पुस्तक को गैर-कानूनी घोषित करके प्रकाशित होने से पूर्व ही जब्त कर लिया था। पुस्तक प्रकाशित हुई तो पुस्तक की कुछ प्रतियाँ सभी देशों से पहुँच गई। भारत में भी कुछ प्रतियाँ पहुँचा दी गयीं।

इस महान् ऐतिहासिक ग्रन्थ का दूसरा संस्करण मैडम कामा, लाला हरदयाल आदि क्रान्तिकारियों ने प्रकाशित कराया। उर्दू, हिन्दी, पंजाबी आदि भाषाओं में भी अनुवाद प्रकाशित किये गये। लाला हरदयाल ने अमेरिका से प्रकाशित होने वाले अपने 'गदर' पत्र में इस ग्रन्थ को धाराप्रवाहिक प्रकाशित किया।

'१८५७ का स्वातन्त्र्य समर' इतना प्रसिद्ध हुआ कि क्रान्तिकारी उसे 'सशस्त्र कान्ति के तत्त्वज्ञान की गीता' कहकर पुकारने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगे।

इस महान् क्रान्तिकारी ग्रन्थ का तीसरा संस्करण सरदार भगतसिंह ने आगे चलकर गुप्त रूप से प्रकाशित कराया। क्रान्तिकारियों को इसके अध्ययन से भारी प्रेरणा प्राप्त हुई। यह ग्रन्थ इतना लोकप्रिय हुआ कि एक-एक प्रति तीन-तीन सौ रुपये तक में बिकी।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने '१८५७ के स्वातन्त्र्य समर' ग्रंथ से ही प्रेरणा पाकर वीर सावरकर से भेंट की और उनकी प्रेरणा से ही विदेश जाकर आजाद हिन्द सेना का निर्माण किया। आजाद हिन्द सेना का प्रत्येक सैनिक इस महान् ग्रंथ से प्रेरणा लेता था। सैनिक छावनियों में इस ग्रंथ की प्रतियाँ वितरित की जाती थीं।

'१८५७ के स्वातन्त्र्य समर' के प्रचार से भारतीय यौवन स्वाधीनता के लिए मचल उठा। वीर सावरकर ब्रिटिश शासन की आँखों में खटकने लगे। श्यामजी कृष्ण वर्मा 'इण्डिया हाऊस' का नेतृत्व सावरकर पर छोड़ फ्रांस चले गये। सावरकर ने खुलकर लेखों, कविताओं एवं भाषणों द्वारा भारत की स्वाधीनता के लिए सशस्त्र क्रांति की योजना का प्रचार साम्राज्य के गढ़ इंग्लैण्ड में फैलाना प्रारम्भ कर दिया। आयरलैंड, अमरीका आदि देशों के क्रांतिकारियों से सावरकर ने सक्रिय सम्बन्ध स्थापित किये और उनके अनुभवों का उपयोग किया। जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस हुई तो उसमें सावरकर ने सरदारसिंह राणा व श्रीमती रुस्तम भीखाजी कामा को भारत के प्रतिनिधि के रूप में भेजा। वीर सावरकर द्वारा निर्मित आठ कमलों और वन्देमातरम् मन्त्र से अंकित भारत का पहला तिरंगा झंडा श्रीमती कामा ने जर्मनी कांग्रेस में फहराया था।

सावरकर ने रूसी क्रांतिकारियों से बम बनाने की विधि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिखवाकर दो युवक भारत भेजे। उन युवकों के पास बम बनाने की विधि की रूसी से अनूदित पुस्तक की प्रतियाँ और पिस्तौलों का एक संग्रह था।

सावरकर ने बड़े-बड़े ग्रंथों को बीच से खोखला करके उनमें पिस्तौल-रिवॉल्वर छिपा कर भारत भेजे। वह भारत के क्रांतिकारियों को शस्त्रों से सुसज्जित कर देना चाहते थे। ब्रिटिश गुप्तचरों को संदेह हुआ और पिस्तौलों के एक-दो पार्सल पकड़े भी गये।

सन् १९०७ में '१८५७ के स्वातंत्र्य समर' की अर्धशताब्दी सावरकर ने बड़े समारोहपूर्वक मनाई। '१८५७ के शहीदों की जय' शब्दांकित बैज बनवाये गये। देशभक्त भारतीय विद्यार्थी १० मई को बैज लगाकर इंग्लैंड के बाजारों में निकले, यूनिवर्सिटी गये। अंग्रेज प्रोफेसर ने क्रुद्ध होकर जब १८५७ के शहीदों को डाकू व लुटेरे कहा तो भारतीय छात्र उनसे भिड़ गये। इस काण्ड ने एक आंदोलन का रूप ले लिया और भारतीय देशभक्त छात्रों ने अंग्रेजी यूनिवर्सिटी का बहिष्कार कर दिया। विश्व के सभी समाचार-पत्रों ने इस आंदोलन पर सम्पादकीय लेख तक लिखे।

इंग्लैण्ड में 'अभिनव भारत' के तत्वावधान में आयोजित सभा में तात्या टोपे, झांसी की वीरांगना लक्ष्मीबाई, बिहारकेसरी वीर कुंवरसिंह आदि देशभक्तों को श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं। सावरकर जी ने सभा में भाषण देते हुए कहा—"आज १८५७ के महान् स्वातन्त्र्य समर की अर्धशताब्दी के ऐतिहासिक दिन हमें, छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के सम्मुख, क्रान्तिवीर तात्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, वीर कुंवरसिंह, मंगल पाण्डे आदि हुतात्माओं के मार्ग का अनुसरण करके, अंग्रेजी साम्राज्य को ध्वस्त करने की प्रतिज्ञा लेनी है। अंग्रेजी साम्राज्य को भारत से ध्वस्त किये बिना हम चैन से न बैठेंगे।"

इंग्लैंड के ब्रिटिश अधिकारियों को जब इस समारोह की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रिपोर्ट मिली तो उन्होंने पुलिस विभाग से सिफारिश की कि सावरकर की प्रत्येक गतिविधि पर अत्यन्त सतर्कतापूर्वक निगरानी रखी जाये। यह भारतीय युवक ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारी व भयंकर षड्यंत्र रच रहा है।

सावरकर ने रूस, फ्रांस, स्पेन, चीन, अमेरिका, जर्मनी आदि के समाचार-पत्रों में भारत की स्वाधीनता के पक्ष में तर्कसंगत लेख लिखे। कलकत्ता के 'युगान्तर' एवं बम्बई के मराठी 'बिहारी' में भी वह नियमित लेख भेजते थे। उनके लेखों को पढ़कर विदेशों के अनेक समाचार-पत्रों, राजनीतिज्ञों एवं क्रान्तिकारियों ने भारत की स्वाधीनता का समर्थन किया। इंग्लैंड के अनेक पत्रकार तक सावरकर से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने पत्रों में स्पष्ट लिखा—"भारतीयों की स्वाधीन होने की माँग बिल्कुल न्यायोचित है। अब उन्हें अधिक समय तक पराधीन नहीं रखा जा सकता।"

करजन वायली का वध

इण्डिया हाऊस के कमरे में सावरकर के सम्मुख एक पंजाबी भारतीय युवक मदनलाल ढींगरा बैठा हुआ था। युवक ढींगरा पंजाब से अध्ययन के लिए इंग्लैंड आया था।

युवक ढींगरा ने सावरकर से, भारत की स्वाधीनता के महान् कार्य में योग देने की इच्छा प्रकट की। सावरकर ने कहा कि "क्रांति के मार्ग पर चलना अत्यन्त कठिन है। बड़े-बड़े साहसी व्यक्ति भी इस मार्ग से फिसल जाते हैं। यदि तुम कुछ करना ही चाहते हो तो पहले परीक्षा दो।"

मदनलाल ढींगरा बलि-पथ का वास्तविक राही था। अंग्रेजों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारा किये गये भारतीयों पर अत्याचारों ने उसके हृदय को झकझोर डाला था। वह अपना बलिदान देकर अत्याचारी अंग्रेजों से बदला लेने के लिए उतावला हो रहा था। उसने सावरवर से कहा कि मैं मातृभूमि के चरणों में अपना सर्वस्व ही निछावर करना चाहता हूँ। आप मेरी कठोर-से-कठोर परीक्षा ले सकते हैं।

सावरकर ने युवक ढींगरा को आजमाने के लिए उसकी हथेली में पैना सुआ घुसेड़ दिया। वीर ढींगरा के माथे पर शिकन तक न आई। वह धैर्य के साथ मुस्कराता रहा। सावरकर उसकी दृढ़ता से बड़े प्रभावित हुए और उसे अपने दल में सम्मिलित कर लिया।

१ जुलाई, सन् १९०९ को लन्दन के इम्पीरियल इंस्टीट्यूट के जहाँगीर हाल में मदनलाल ढींगरा ने सर करजन वायली नामक एक अंग्रेज अधिकारी को गोली को निशाना बना दिया। अंग्रेजों की भरी सभा में एक भारतीय हिन्दू युवक के इतने साहस को देखकर अंग्रेज काँप उठे। सभा में सन्नाटा छा गया और भगदड़ मच गई। मदनलाल ढींगरा को गिरफ्तार कर लिया गया।

अंग्रेज-भक्त कुछ भारतीयों ने अंग्रेजों की सहानुभूति अर्जित करने के हेतु, वायली की हत्या की निन्दा के लिए एक सार्वजनिक शोकसभा का आयोजन किया। सभा के अध्यक्ष सर आगाखां थे। सभा की समाप्ति पर सभाध्यक्ष आगाखां ने शोक प्रस्ताव पढ़ते हुए कहा—"इस हिंसक व निन्दनीय कार्य की सर्वसम्मति से कड़ी भर्त्सना की जाती है।" इसी बीच सभा में सावरकर गरज उठे—"सर्वसम्मति से नहीं, मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ।"

उपस्थित व्यक्तियों ने देखा कि पीछे सावरकर निर्भीकतापूर्वक खड़े हुए इस प्रस्ताव का विरोध कर रहे हैं। अंग्रेज एक भारतीय हिन्दू युवक का इतना अनुपम साहस देखकर जल-भुन उठे। पामर नाम के एक अंग्रेज ने सावरकर पर घूंसा मारा। प्रत्युत्तर में सावरकर के एक भारतीय साथी ने अपनी छड़ी से उस अंग्रेज का सिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फोड़ दिया। शोक प्रस्ताव बीच में ही अधूरा रह गया।

ब्रिटिश अधिकारियों को यह निश्चय हो गया कि मदनलाल ढींगरा ने सावरकर की प्रेरणा से ही वायली की हत्या की है।

सावरकर ने 'टाइम्स' में एक लेख लिखकर शोकसभा की वैधता को चुनौती देते हुए कहा—"जब तक मिस्टर ढींगरा के अभियोग का अदालती निर्णय न हो जब तक इस प्रकार का कोई भी प्रस्ताव पास करना गैर-कानूनी है। इस प्रस्ताव से अभियोग पर प्रभाव पड़ सकता था, इसलिए मैंने इसका विरोध किया।" वीर सावरकर की तर्कबुद्धि को देखकर अंग्रेज चकित हो उठे।

मदनलाल ढींगरा पर मुकदमा चलाया गया और १६ अगस्त, सन् १९०९ को फाँसी दे दी गई। फाँसी से पूर्व शहीद ढींगरा ने अपना विस्तृत वक्तव्य देते हुए कहा—"एक हिन्दू के नाते मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरे देश का अपमान साक्षात् ईश्वर का अपमान है और मैं देश का अपमान करने तथा हिन्दू युवकों को गोलियों से भूनने के जिम्मेवार अंग्रेज अधिकारी का वध करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।"

तीनों भाई जेल में

सावरकर के क्रान्तिकारी साहित्य ने विशेषकर महाराष्ट्र में युवकों में स्वाधीनता के लिए मर मिटने की भावनाएँ जागृत कर दीं। पूना के जिलाधीश मि० रैण्ड को क्रान्तिकारी युवकों ने गोली से उड़ा दिया। स्थान-स्थान पर अंग्रेज अधिकारियों को समाप्त किया जाने लगा।

१९ अप्रैल, सन् १९०९ को नासिक के जिलाधीश मि० जक्सन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को विदाई पार्टी दी जा रही थी। विजयानंद नाट्य-गृह नासिक में मि० जैक्सन अपनी पत्नी के साथ आनन्द-मग्न हुए नाटक देख रहे थे कि १६ वर्षीय बालक कान्हेरे ने उनको गोली से भून डाला। क्रान्तिवीर कान्हेरे ने जिस पिस्तौल से जैक्सन की हत्या की थी, वह सावरकर द्वारा लन्दन से भेजी गई पिस्तौल थी। वीर कान्हेरे गीता हाथ में लेकर फाँसी पर चढ़ गया। उधर ब्रिटिश अधिकारियों ने अनुमान लगाया कि भारत में जो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या की जा रही है, उसका एकमात्र कारण सावरकर ही हैं। उन्हीं की प्रेरणा पर ये घटनाएँ घटित हो रही हैं।

महाराष्ट्र सरकार ने सावरकरजी के बड़े भाई श्री गणेश दामोदर सावरकर को देशभक्तिपूर्ण साहित्य प्रकाशित कराने एवं क्रांतिकारियों का संगठन करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। उनका संबंध जैक्सन हत्याकांड से भी जोड़ा गया। अंग्रेज सरकार ने उन्हें २० वर्ष के लिए कारावास का दण्ड देकर जेल भेज दिया। महाराष्ट्र सरकार ने सावरकर बन्धुओं की तमाम सम्पत्ति भी जब्त कर ली।

इंग्लैंड में जब सावरकर ने अपने बड़े भाई की गिरफ्तारी और सम्पत्ति जब्त किये जाने का समाचार सुना तो उन्होंने अपने साथियों से मुस्कराकर कहा—"अभी तो कुछ नहीं हुआ, अभी तो स्वातन्त्र्य-लक्ष्मी की आराधना के लिए हमें अपने प्राणों की बलि चढ़ानी हैं, सर्वस्व समर्पित करना है।"

"कुछ ही दिन बाद सावरकर को समाचार मिला कि उनके छोटे भाई श्री नारायण दामोदर सावरकर को भी अंग्रेज सरकार ने क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया है। सावरकर ने उक्त समाचार सुनते ही कहा—"चलो, इससे ज्यादा गौरव की बात और क्या होगी कि हम तीनों भाई ही स्वातन्त्र्य-लक्ष्मी की आराधना में लीन हैं।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीर सावरकर को अपने बड़े भाई के गिरफ्तार होने के बाद अपनी पूज्य भाभी के दुःख का आभास हुआ तथा चिन्ता हुई। उन्होंने अपनी भाभी को सांत्वना देने के लिए 'सांत्वन' काव्य लिखा। इसमें उन्होंने लिखा।—

"तरी जें गजेन्द्रशुंडेने उपटिलें,
श्री हरि साठी नेलें।
कमल फूल तें अमर ठेलें,
मोक्षदातें पावन ।।"

अर्थात्—"अनेक पुष्प उत्पन्न होते हैं और सूख जाते हैं, कोई उनकी गिनती नहीं करता। किन्तु हाथी की सूँड द्वारा भगवान के श्री चरणों में समर्पित पुष्प अमर हो जाता है। इसी प्रकार हम तीनों भाई कमल पुष्प की तरह भगवान् श्री हरि (मातृभूमि) के चरणों में समर्पित होकर अमर हो जाएँगे।"

वीर सावरकर के इस 'सांत्वन' काव्य से न केवल उनसे परिवार को अपितु अनेक क्रांतिकारियों के परिवारों को भी सांत्वना मिली।

जब सावरकर ने देखा कि उनके तीनों भाइयों को ही अण्डमान भेजकर सरकार उनके वंश का बीज-नाश करना चाहती है तो उन्होंने अपनी भाभी को धैर्य देने के लिए लिखा—

"देवकार्य के हेतु बीजनाश (निर्वंश) होने वाली वंशलता अमर हो जाती है और उसकी 'लोकहित परिमल' की सुगंध से समस्त दिशाएँ व्याप्त हो जाती हैं।"

इंग्लैण्ड में ब्रिटिश पुलिस अधिकारी सावरकर के पीछे हाथ धोकर पड़ गए। जब उनकी गतिविधियों पर पुलिस का नियन्त्रण हो गया तो मित्रों के आग्रह से वह पैरिस चले गए। पैरिस में उनका मन न लगा। इंग्लैण्ड के साथियों को खतरे में छोड़कर स्वयं सुरक्षित रहना उन्हें उचित न जँचा। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उन्हें पैरिस में ही रहने का सुझाव दिया, किन्तु वह इंग्लैण्ड को रवाना हो गए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३ मार्च, सन् १९१० को लंदन के रेलवे स्टेशन पर पहुँचते ही उनको गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर निम्न पांच अभियोग लगाये गए—

(१) भारत के अंग्रेजी शासन के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना।

(२) ब्रिटिश सम्राट को प्रभुसत्ता से वंचित कराने का प्रयास करना।

(३) अवैध शस्त्राओं का संग्रह, वितरण करना तथा जैक्सन व करजन वायली की हत्या की प्रेरणा देना।

(४) लंदन में शस्त्रों का संग्रह तथा भारत को निर्यात।

(५) भारत में जनवरी, १९०६ से मार्च, १९०६ तक तथा लंदन में १९०८ से १९०९ तक राजद्रोहात्मक भाषण देना।

ऐतिहासिक मृत्यु-पत्र

वीर सावरकर को ब्रिकस्ट जेल में बंद कर दिया गया। उन्होंने मन में विचार किया कि उन्हें अनेक भयंकर आरोपों के कारण फाँसी पर निश्चित लटकाया जायेगा। उन्होंने अपनी पूज्या भावज को अपने अन्तिम पत्र के रूप में 'मृत्युपत्र' लिखा। वह ऐतिहासिक मृत्यु-पत्र' मराठी काव्य में लिखा गया। उन्होंने इसमें निम्न भावनाएँ व्यक्त कीं—

"आकाश पर वैशाख मास का चन्द्रमा हास्य कर रहा था। उसकी चाँदनी चहुँ ओर छिटकी हुई थी। जिस माँ की लता का बाल ने जल-सिंचन किया था वह अपने छोटे फूलों की महक से फूल रही थी। गोकुल की तरह घर में आनन्द मंगल हो रहा था क्योंकि सभी आदरणीय सम्बन्धी आये हुए थे। उन नवयुवकों की आदर्श

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीप्ति, तेज और धैर्य देखकर स्वयं कीर्ति भी नाचती है। नवयौवन के प्रेम से हम लोगों के हृदय पुष्प खिल रहे थे और सच्चरित्रता की सुगन्ध से सुगन्धित हो रहे थे; दिव्य लता और वृक्षों से हमारा घर उद्यान की तरह शोभा पाता था। ऐसे समय प्रिय भाभी! तुम्हारी कुशलता के कारण भोजन और भी स्वादिष्ट बनता था। हम लोग वार्तालाप करते हुए चाँदनी में भोजन करने बैठते थे। उस समय कभी-कभी श्री रामचन्द्र जी के बनवास की कथा, इटली देश के स्वतंत्र होने का इतिहास कोई कहने लगता, वीरवर तानाजी के वीर गीत हम लोग गाने लगते, कभी-कभी चितौड़गढ़ और पुणे के शनिवार-वाड़े की वार्तालाप होने लगती। ऐसे समय जब अनाथ माता का स्मरण आता तो शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करने हेतु अत्यन्त द्रवित हृदय होकर मैं उभारा करता। प्यारी भावज! वह रमणीक अवसर, वह प्रिय जनों का मधुर सहवास, वह चंद्रप्रकाश, वे नव-कथाएँ, वे स्मरणीय रातें, राष्ट्र को बन्धन मुक्त कराने का वह दिव्य लक्ष्य, उनकी पूर्ति के लिए किये गए दृढ़ निश्चय, आदि बातों का तुझे स्मरण है। तुझे स्मरण है देवि बहिनी! उस समय युवक संघ ने कहा था—'हम बाजीप्रभु बनेंगे' और युवतियों ने भी गर्व के साथ कहा था, 'हम भी चित्तौड़ की वीरांगनाएँ बनेंगी।' बहिनी! हमने व्रत अंधेपन में स्वीकार नहीं किया है। आज तक का इतिहास जिसको प्रकट रूह से दिव्य दाहक कहता है उसी 'सतीव्रत' को प्यारी भावज, हमने सोच-समझकर ही धारण किया है।

"देवि बहिनी! उस समय प्रियजनों के साथ की हुई प्रतिज्ञाएँ स्मरण करो तथा आज की अवस्था देखो, तुम देखोगी पूरे आठ साल भी नहीं होने पाए कि हमारा उद्देश्य इतना अधिक सफल हो गया है। ऐसे समय, बताओ, मन में उल्लास क्यों न हो? देखो कन्या-कुमारी से लेकर हिमालय तक इस देश में हलचल मच गई है और यह राष्ट्र, दीनता को त्याग वीरता को ग्रहण कर रहा है। रघुवीर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के चरणों में भक्तों की अपार भीड़ लगी हुई है और उधर यज्ञ कुण्ड में हुताशन भी प्रदीप्त हो रहा है। उस यज्ञ को करने के लिए जो लोग दीक्षा ले चुके हैं उनकी परीक्षा का समय आने पर पूछा जाता है—'समग्र विश्व की मंगल कामना हेतु कौन आहुति डालने के लिए तैयार है?' साध्वी भाभी ! इस दिव्यार्थ निमंत्रण को पाकर हमने गर्ज कर कहा 'हमारा कुल प्रस्तुत है'। यह कहकर हमने ईश्वरीय सम्मान प्राप्त किया है। हम लोग कह चुके हैं कि हमारे शरीर धर्म के लिए निछावर किये जाएँगे। भाभी ! वह कहना अर्थहीन नहीं था। अनन्त यातनाओं को सहकर भी हमारा धैर्य नहीं टूटा और निष्काम कर्मयोग भी हमारा खंडित नहीं हुआ ! उस समय प्रियजनों के साथ की हुई प्रतिज्ञाएँ सत्य हो रही हैं। अपनी माँ को बंधनमुक्त करने के लिए, प्रज्वलित अग्निकुण्ड में अपना सर्वस्व जलाकर हम आज कृतार्थ हो गए हैं।

"मातृभूमि ! तेरे चरणों पर मैं अपना मन अर्पण कर चुका हूँ। मेरा वक्तृत्व, वाग्वैभव, मेरी नई कविता सभी तेरे चरणों में अर्पित करता हूँ। मेरे लेखों में भी कोई अन्य विषय नहीं ! तेरे स्थंडिल पर प्यारे मित्र संघ को डाल चुका हूँ, अपना तन मन धन यौवन सभी दे चुका हूं। तेरा कार्य ईश्वरीय कार्य है, इसीलिए तेरी सेवा में भगवान् की सेवा दिखाई दी। प्रज्वलित अग्नि में अपनी भावज, पुत्र, कान्ता और अग्रज को भी भेंट कर चुका हूँ और मैं स्वयं अपना शरीर चढ़ाने के लिए प्रस्तुत हूँ। यही क्या ! यदि हम सात भाई भी होते तो उनका बलिदान तेरे चरणों में होता। इस भारत भूमि की तीस करोड़ सन्तान हैं। जो मातृभक्ति में लगे हुए हैं वे धन्य हैं। हमारा कुल भी उनमें ईश्वरीय अंश के समान है। निर्वंश होकर भी हमारा वंश अखंड हो गया।

"वंश चाहे अखंड हो चाहे न हो, पर मातृभूमि ! हमारे उद्देश्य पूरित हों। प्रज्वलित अग्नि में माता के बन्धन तोड़ने के लिए अपना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वस्व जलाकर हम कृतार्थ हो गए हैं। प्यारी भावज ! इस तरह सोचकर अपने कुल की सफलता समझिए ! श्री पार्वती जी ने हिमगिरि की चोटियों पर तप किया है और कई राजपूतनियाँ हँसते-हँसते प्राणों की आहुति दे चुकी हैं। प्यारी भावज ! भारतीय ललनाओं में वह तेज बल आज भी नष्ट नहीं हुआ है, इस बात को प्रमाणित करने के लिए, भावज ! तुम्हारा समस्त व्यवहार वीरांगना की तरह होना चाहिए। देवि, यहाँ से मेरा तुझे यही सन्देश है, तेरे वत्सल चरणों को यहीं से प्रणाम करता हूँ। मेरा प्रेमपूर्वक प्रणाम स्वीकार करो। मेरी प्यारी पत्नी को आलिंगन कह देना। आज तक का इतिहास जिसको प्रकट रूप से दिव्य-दाहक कहता है उसी 'सतीव्रत' को, प्यारी भावज ! हमने सोच-समझकर स्वीकार किया है।"

समुद्र-तरण

लन्दन में मजिस्ट्रेट ने सावरकर पर भारत ले-जाकर मुकदमा चलाने का निर्णय दिया। सावरकर को इंग्लैण्ड में मोरिया जलयान द्वारा भारत लाया जा रहा था। जहाज पर गोरों का बड़ा सख्त पहरा था। पिंजड़े में बन्द सिंह लाल मुँह के फिरंगियों के चंगुल से मुक्त होने की योजना में तल्लीन था।

वीर सावरकर के मस्तिष्क में छत्रपति शिवाजी द्वारा औरंगजेब के कारागार से मुक्त होने की योजना घूम गई। उन्होंने विचार किया कि अंग्रेजी साम्राज्य की जेलों में यातनाएँ सहन करने की अपेक्षा मुक्त होकर मातृभूमि को स्वाधीन कराने में योग देना कहीं अच्छा है। फाँसी पर चढ़ने की अपेक्षा अंग्रेज अधिकारियों से दो-दो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ करते हुए शहीद हो जाना कहीं अधिक सुन्दर है। उन्होंने गोरों के चंगुल से मुक्त होने का निश्चय कर लिया।

८ जुलाई सन् १९१० को मार्सेल बन्दरगाह के निकट जहाज पहुँचने ही वाला था कि सावरकर शौच के बहाने से जहाज के पाखाने में जा घुसे। बड़ी फुर्ती से वे उछलकर, पोर्टहोल को पकड़कर छेद से 'जयस्वातन्त्र्य लक्ष्मी' का उद्घोष कर समुद्र में कूद पड़े।

जैसे ही पुलिस अधिकारियों को जहाज में इस रोमांचकारी घटना का पता लगा, वे काँप उठे। एक हिन्दू युवक के इस प्रकार के अदम्य साहस व अनुपम बहादुरी को देखकर गोरे अधिकारियों ने आश्चर्य से दाँतों तले अंगुली दबा ली। सावरकर तैरते हुए, डुबकी लगाते हुए किनारे की ओर बढ़ने का प्रयास करने लगे। उधर गोरे सावरकर पर गोलियों की बौछार कर रहे थे, किन्तु सावरकर एक विजयी सिंह की भाँति मीलों तैरने के बाद सागर तट पर आ गए। सागर तट फ्रांस की सीमा में था। उन्होंने तट के पास खड़े एक फ्रांसीसी सिपाही से खुद को गिरफ्तार कर लेने के लिए कहा। उधर गोरे सिपाही व अधिकारी मोटर बोटों में सावरकर का पीछा करते हुए तट पर आ पहुँचे। गोरों ने 'चोर'-'चोर' का शोर करके उनका पीछा किया। फ्रांसीसी सिपाही ने अंग्रेजों के प्रभाव में आकर सावरकर को उन्हें सौंप दिया। सावरकरजी ने गोरे सिपाहियों से गुत्थमगुत्था भी की, किन्तु वह अकेले उनका कब तब सामना कर सकते थे। अन्त में गोरों ने उन्हें हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़कर जहाज पर चढ़ाया और भारत की ओर ले चले।

सावरकर के अदम्य साहस की यह रोमांचकारी घटना समस्त विश्व में बिजली की तरह फैल गई। ब्रिटिश साम्राज्य के ही नहीं अपितु विश्व-भर के सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने मुखपृष्ठ पर प्रमुख रूप से इस रोमांचकारी समाचार को प्रकाशित किया। अनेक पत्रों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने एक भारतीय युवक के इस अदम्य साहस को दैवी घटना तक लिखा। अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस व रूस आदि देशों के समाचार-पत्रों ने तो यहाँ तक लिखा कि 'सावरकर जब फ्रांस की सीमा में पहुँच गए तो उन्हें पुनः गिरफ्तार करने का अंग्रेजों को कोई भी अधिकार नहीं था। अंग्रेजों ने यह अवैधानिक कार्य किया है।"

फ्रांस की भूमि में गिरफ्तारी वैध थी अथवा अवैध ? इस प्रश्न पर निर्णय के लिये हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में मुकदमा गया। किन्तु निर्णय सावरकर के विरुद्ध ही हुआ।

अंग्रेज पत्रकार भी बन्दी

लन्दन में वीर सावरकर के तेजस्वी व्यक्तित्व व तर्कपूर्ण लेखों का इतना प्रभाव पड़ा था कि न केवल भारतीय ही अपितु अनेक उच्चकोटि के अंग्रेज राजनीतिज्ञ, विद्वान व पत्रकार भी उनके विचारों से प्रभावित हुए बिना न रह सके। इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री गाय आल्ड्रेड ने न केवल खुलकर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का ही समर्थन किया अपितु ब्रिटिश शासन की जेल में यातनाएँ भी सहन कीं।

'हेराल्ड आफ रिव्होल्ट', 'फ्री वूमन' एवं 'जस्टिस' आदि पत्रों के सम्पादक, प्रकाशक व प्रतिनिधि श्री गाय आल्ड्रेड ने इंडिया हाऊस की सभा में '१८५७ का स्वातन्त्र्य समर' विषय पर प्रथम भाषण सुना तो वीर सावरकर के व्यक्तित्व और वक्तव्य से आकर्षित हुए और उन्होंने 'हेराल्ड आफ रिव्होल्ट नामक' अपने पत्र में लिखा—"वीर सावरकर के तर्कपूर्ण भाषण को सुनकर मेरा भ्रम चकनाचूर हो गया। १८५७ में भारत में जो संघर्ष हुआ वह वस्तुतः भारत की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वाधीनता का पहला महान् संग्राम था। भारतीयों की स्वाधीनता की मांग अत्यन्त न्यायपूर्ण व माननीय है। उन्हें अब अधिक समय तक गुलाम नहीं रखा जा सकता।"

गाय आल्ड्रेड के उपर्युक्त लेख को पढ़कर ब्रिटिश सत्ता के कान खड़े हो गये। गुप्तचर पुलिस उनके पीछे लगा दी गयी।

वीर सावरकर के '१८५७ के स्वातन्त्र्य समर' के ग्रंथ के प्रकाशन पर ब्रिटिश शासन ने रोक लगा दी। एक आदेश द्वारा सरकार ने मुद्रणालयों पर १८५७ का स्वातन्त्र्य समर मुद्रित करने पर भी रोक लगा दी। शासन के आदेश से आतंकित होकर जब श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के 'इंडियन सोशियालाजिस्ट' पत्र को छापने से इंग्लैण्ड के सभी प्रेसों ने मना कर दिया तो श्री गाय आल्ड्रेड ने ब्रिटिश शासन के आदेश की चिन्ता न करके निर्भीकतापूर्वक 'इंडियन सोशियालाजिस्ट' पत्र को अपने मुद्रणालय में मुद्रित किया। श्री आल्ड्रेड को सरकार के आदेश की अवहेलना करने पर समस्त ब्रिटिश सत्ता क्रोध में तमतमा उठी।

ब्रिटिश शासन ने श्री गाय आल्ड्रेड को गिरफ्तार करके ब्रिस्टन जेल में बन्द कर दिया। उन पर वीर सावरकर का समर्थन करने, '१८५७ के गदर' को भारत का महान् स्वातन्त्र्य समर बताकर लेख लिखने आदि के आरोप लगाकर अदालत में मुकदमा चलाया गया। श्री आल्ड्रेड ने अदालत में अपने मुकदमे की स्वयं पैरवी करते हुए स्पष्ट वक्तव्य दिया—"१८५७ में हुए भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य-संग्राम को 'बलवा' या 'बगावत' कहना, वास्तविक घटना को छिपाना व इतिहास के साथ अन्याय करना है। वास्तव में १८५७ का आन्दोलन भारतीय स्वातन्त्र्य का महान आन्दोलन था।"

श्री आल्ड्रेड ने बोस्ट्रीट तथा बेली न्यायालयों में स्पष्ट रूप से भारत को स्वाधीनता दिये जाने का तर्कपूर्ण समर्थन किया। उनके बयानों से समस्त विश्व में तहलका मच गया। ब्रिटिश साम्राज्य-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वादी संस्थाओं ने श्री गाय आल्ड्रेड को 'देशद्रोही' बताकर कड़ी भर्त्सना की।

श्री गाय आल्ड्रेड को ब्रिटिश शासन ने 'देशद्रोहिता' व 'वीर सावरकर के ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी कार्यों का समर्थन करने' के आरोप में सजा दे दी। वह ब्रिस्टन जेल में बन्दी कर दिये गये।

उधर वीर सावरकर को भी लन्दन में गिरफ्तार करके ब्रिस्टन जेल में बन्द कर दिया गया था। वीर सावरकर व गाय आल्ड्रेड दोनों एक साथ कष्ट सहन कर रहे थे। जेल अधिकारियों को शासन का आदेश था कि—"सावरकर और गाय आल्ड्रेड किसी भी अवस्था में एक-दूसरे से मिलने न पायें।"

गाय आल्ड्रेड ने जेल से मुक्त होने पर भी वीर सावरकर के प्रति श्रद्धा व सहानुभूति न छोड़ी। जब वीर सावरकर ने समुद्र में जहाज से कूदकर वीरता का परिचय दिया तो गाय आल्ड्रेड ने यह साहसिक समाचार सुनकर कहा—"वीर सावरकर ने इस महान् साहसिक घटना से यह सिद्ध कर दिखाया है कि वह एक अद्वितीय दैवी शक्ति-सम्पन्न वीर पुरुष हैं।"

आगे चलकर गाय आल्ड्रेड वीर सावरकर के भक्त बन गये। उन्होंने एक लेख में लिखा—"मेरी यह धारणा है कि वीर सावरकरजी की पीढ़ी में उनके समान कोई प्रभावी, साहसी, दृढ़ देशभक्त भारतवर्ष में पैदा नहीं हुआ है। वीर सावरकर ने जो अनन्वित कष्ट सहे हैं उसी के फलस्वरूप भारतवर्ष ने स्वाधीनता प्राप्त की। आदर्श सिद्धान्तों को निभाने के लिए जी-जान से प्रयत्न करने वालों में वीर सावरकर का स्थान बहुत ऊँचा है। सावरकरजी अभ्यासु तथा बुद्धिमान होने से महान् पंडित भी हैं। वीर सावरकर केवल हिन्दी देशभक्त ही नहीं अपितु समस्त विश्व के प्रेरणा स्रोत देशभक्त हैं। मैं तो मानवसमाज के दर्शनकार के रूप में उन्हें देखता हूँ। भारतीय जनता का यह आद्य कर्तव्य है कि सम्पूर्ण स्वतन्त्रता के जनक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के रूप में उनका सत्कार करे।''

दो आजन्म कारावासों का दण्ड

बम्बई के एक विशेष न्यायाधिकरण में श्री सावरकर पर मुकदमा चलाया गया। १५ सितम्बर, सन् १९१० को मुकदमा प्रारम्भ हुआ। उन पर तीन अलग-अलग मुकदमे चलाये गये। पहले मुकदमे में ३८ अभियोगी थे तथा दूसरे में सावरकर जी तथा श्री गोपालराय पाटणकर थे। तीसरे मुकदमे में अकेले सावरकर ही अभियोगी थे।

मुकदमे में सावरकर आदि की ओर से श्री गोविन्दराय गाडगिल, श्री चित्र इत्यादि विधिज्ञों ने पैरवी की और सावरकर की ओर से एडवोकेट जनरल जार्डिन, श्री वेलिंगकर तथा मि० निक्सन आदि ने मुकदमा लड़ा।

सावरकर जी को पहले अभियोग में अजन्म कारावास का दण्ड सुना दिया गया। साथ ही जैक्सन की हत्या की प्रेरणा देने के आरोप में दूसरा मुकदमा भी चलाया गया। २३ जनवरी, सन् १९११ को मुकदमा प्रारम्भ हुआ और ३१ जनवरी को उन्हें पुनः आजीवन कारावास का दण्ड सुना दिया गया। जजों ने अपने निर्णय में सावरकर को अंग्रेजी साम्राज्य के लिए भयंकर षड्यन्त्रकारी एवं महान चतुर एवं दुस्साहसी बताते हुए यह भी लिखा कि "सावरकर को फांसी का दण्ड भी कम था, किन्तु हम आजन्म कारावास का दण्ड ही देते हैं।"

जिस समय न्यायालय ने सावरकर को दो जन्मों (५० वर्ष) का कारावास दण्ड सुनाया तो उन्होंने हँसते हुए कहा—"मुझे बहुत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसन्नता है कि ईसाई (ब्रिटिश) सरकार ने मुझे दो जीवनों का कारावास दण्ड देकर पुनर्जन्म के हिन्दू सिद्धान्त को मान लिया है।"

अदालत के बाहर सावरकर जी के मुकदमे का निर्णय सुनने के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित थे। सावरकर जी ने निर्णय सुनने के पश्चात् अपने एक साथी से कहा—"तप, बलिदान एवं त्याग से ही स्वातन्त्र्य-लक्ष्मी प्रसन्न होगी। भारतीयों को अब अपना सर्वस्व मातृभूमि के चरणों में निछावर कर देना चाहिए, तभी हम अंग्रेजी साम्राज्य को ध्वस्त करने में सफल होंगे।"

युवक सावरकर ने बैरिस्ट्री का काला गाउन पहनने के बदले कैदियों के कपड़े पहनने स्वीकार किये। उन्होंने सुख-सम्पत्ति के मार्ग को छोड़कर सिर पर काटों का ताज पहन लिया। हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़कर उन्हें कालापानी भेजने से पूर्व डोंगरी कारावास में भेज दिया गया।

वीर सावरकर को दो आजन्म कारावास का दण्ड दिये जाने के समाचार से समस्त देश में क्षोभ की लहर दौड़ गई। अंग्रेज सरकार के पास कई हजार विरोध पत्र भेजकर सावरकर को मुक्त करने की माँग की गई। किन्तु अंग्रेज सरकार अपने निर्णय से टस-से-मस न हुई।

पचास वर्ष आजन्म कारावास का दण्ड देकर सावरकर को अण्डमान भेजने से पूर्व डोंगरी कारागृह में भेजा गया था। डोंगरी जेल में उन्हें उसी ऐतिहासिक बैरक में रखा गया, जिसमें श्री लोकमान्य तिलक को दो बार रखा गया था।

बन्दी-जीवन

डोंगरी जेल में सावरकरजी को रस्सी कूटने का काम दिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया।

जेल में सावरकर जी ने महाकाव्य रचने का निर्णय किया। महाकाव्य लिखने की उनकी बचपन से ही इच्छा थी। किन्तु लेखन-सामग्री के अभाव में किस प्रकार कुछ लिखा जाये, यह समस्या आई। उन्होंने निर्णय किया कि दस-बीस कविताएँ रचकर उन्हें कंठस्थ कर लिया जाये और फिर आगे रची जायें।

सावरकर जी ने गुरु गोविन्दसिंह जी पर कवितायें रचनी प्रारम्भ कर दीं। उन्होंने काफी कवितायें लिखकर कंठस्थ कर डालीं।

एक दिन अचानक सावरकर जी की १६ वर्षीया पत्नी श्रीमती माई सावरकर एवं साला डोंगरी जेल में उनसे भेंट करने आये। सौ० माई ने देखा कि लोहे के मोटे-मोटे सींखची के पीछे उनके पति कैदियों के मोटे कपड़े एवं हथकड़ियों-बेड़ियों के आभूषण पहने खड़े हैं। चार वर्ष पूर्व जब पत्नी अपने पति को विदेश के लिए विदा करने बन्दरगाह पर पहुँची थी, तो यह कल्पना की थी कि चार-पाँच वर्ष बाद वह बैरिस्टरी की पदवी धारण कर वापस लौटेंगे। किन्तु आज पति को कैदियों के वेश में, लोहे की जंजीरों से जकड़ा देखकर आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो उठी।

सावरकर ने अपनी कोमल-सी नन्ही पत्नी की आँखों में अश्रु-देखे तो वह स्वयं भी विह्वल हो उठे। उन्होंने धीरज बँधाते हुए कहा—"क्या तुमने मुझे देखकर पहचान लिया? ये कपड़े केवल बदल दिये गये हैं, मैं तो वही हूँ। इन मोटे कपड़ों से तो ठंड तक नहीं लग पाती, बड़े सुखदायी कपड़े हैं ये!"

सौ० माई महान् पतिव्रता एवं देशभक्त हिन्दू नारी थीं। उन्होंने पति-भक्ति एवं देशभक्ति दोनों को ही जीवन का लक्ष्य बनाया हुआ था। जहाँ पति को कष्ट में देखकर उन्हें भारी दुःख होता था, वहां उनके मातृभूमि के लिए किये बलिदानों पर भारी गौरव का भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुभव होता था।

सावरकर ने अपनी तरुणा पत्नी को धीरज बँधाते हुए कहा—"चिंता न करो, यदि ईश्वर की कृपा हुई तो पुनः भेंट होगी ही। तब तक यदि सामान्य संसार का भय होने लग जाये तो ऐसा विचार करो कि बेटे-बेटियों की संख्या बढ़ाना तथा चार तिनके (लकड़ियाँ) जमा करके घर घर बाँधना ही यदि संसार कहलाता है तो ऐसा संसार तो कौवे, चिड़ियाँ भी बसाती रहती हैं। परन्तु यदि परिवार का महान् अर्थ 'मानव का परिवार' लेना हो तो उसे सजाने में तो हम पूर्ण सफल हुए हैं। माना कि अपना सुखी जीवन हमने अपने हाथों ही ध्वस्त कर डाला, किन्तु भविष्य में सहस्रों घरों में, परिवारों में सुख की वर्षा होगी। क्या तब हमें अपना बलिदान सार्थक न लगेगा ?

सुखी संसार की कल्पना करने वाले अनेक लोग प्लेग के शिकार बन जाते हैं, उनका घर बेचिराग हो जाता है। विवाह-मंडप तक से पति-पत्नी को काल दबोचकर ले जाता है। अतः संकटों का सामना करना सीखो, धैर्य रखो।"

तरुण पत्नी ने अपने वीर पति के मुख से उपर्युक्त वीरतापूर्ण शब्द सुने तो उसका हृदय गर्व से उछलने लगा। उसने लोहे की सीखचों में हाथ देकर अपने पूज्य-पति के चरण स्पर्श किये। वीर पत्नी ने दृढ़ता से कहा—"आप चिंता न करें। मुझे क्या यह कम सुख है कि मेरा वीर पति मातृभूमि की सेवा के लिए कठोर साधना कर रहा है।"

पति-पत्नी की वह भेंट बड़ी रोमांचकारी थी।

डोंगरी जेल से सावरकरजी को भायखला जेल ले जाया गया। भायखला जेल में भी उनसे रस्सी कुटवाई जाती, परिश्रम करवाया जाता। जेल की दीवार पर पत्थर के नुकीले टुकड़े से उन्होंने कई कविताओं की भी रचना की। दीवार पर लिखी रचनाओं को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्होंने कंठस्थ कर लिया।

भायखला जेल से सावरकर जी को ठाणो के बन्दीगृह में भेज दिया गया। ठाणो बन्दीगृह के कष्टों का वर्णन सावरकर जी ने 'माझी जन्मठेप' पुस्तक में निम्न प्रकार किया है—

"ठाणे बन्दीगृह में मुझे जिस कमरे में रखा गया था, उस पर दुष्टों में प्रख्यात मुसलमान वार्डर रखे गये थे। एकदम एकान्त। भोजन आया, कौर भी निगल न सका। बाजरे की बेकार रोटी, न मालूम कैसी खट्टी तरकारी! मुँह में रखना भी कठिन। रोटी का टुकड़ा काटा जाय, थोड़ा चबाया जाय, ऊपर घूंट-भर पानी पिया जाय और उसी के साथ कौर निगल लिया जाय। इस रीति से कुछ कौर निगल पाता।"

छोटे भाई भी उसी जेल में

ठाणे के कारागृह में सावरकर जी यातनाएँ सहन कर रहे थे कि एक दिन एक वार्डर से गुप्त रूप से उन्हें समाचार मिला कि उनके छोटे भाई डा० नारायण दामोदर सावरकर भी इसी बन्दीगृह की एक कोठरी में यातनाएँ सहन कर रहे हैं। २० वर्षीय डा० नारायण दामोदर सावरकर अहमदाबाद में लार्ड मिन्टो पर बम फेंकने के आरोप में गिरफ्तार किये थे। सावरकर जी के बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर पहले ही कालापानी भेजे जा चुके थे।

सावरकर जी ने वार्डर के हाथों अपने भाई डा० नारायण दामोदरसावरकर को एक पत्र लिखकर भिजवाया। पत्र में उन्होंने लिखा—"यदि आगामी पाँच-सात वर्षों में मुझे अण्डमान में अपने कुटुम्बियों को लाने की अनुमति मिली तो मैं उन्हें अपने साथ लेकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान के व्यसंग में अपना जीवन व्यतीत करूँगा। और यदि मैं पुण्य-भू भारत के किनारे पर कदम रख सका तो भी मैं जिस काव्य की रचना कर रहा हूँ, उस महाकाव्य को जैसे "ततः प्राचेतसः शिष्यतै रामायणमित-स्ततः मैथिलेयौ कुशलवौ जगतुर्ग सचोदितौ" उसी प्रकार दूसरों को कंठस्थ कराकर देश भर में प्रख्यात कराऊँगा। किसी एक जीवन की सफलता सम्पादन करने में यह एक ही कार्य समर्थ होगा। इस कार्यक्रम को साकार देखने की लालसा से ही मैं अण्डमान में जिन्दा रहूँगा। किन्तु यदि मुझे एक जन्म का कारावास काट लेने पर भी मुक्त न किया गया तो मुक्ति या मृत्यु यही मेरा निर्धार है।

"तू मेरे बारे में चिंता बिल्कुल न कर, न मन को खिन्न बना। वाष्पयंत्र को प्रेरणा देने के लिए अपने देह का इंधन बनाकर यदि किसी को जलते रहना है तो वह स्थान हम ही क्यों न लें ? जलते रहना भी तो एक कर्म है। इतना ही नहीं यह एक महत् कर्म है।"

श्री नारायण सावरकर ने अपने बड़े भाई के कर कमलों द्वारा लिखित पत्र पढ़ा तो उनके हृदय में धैर्य व साहस की भावना दौड़ गयी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

आखिर एक दिन 'महाराजा' नामक जलयान से वीर सावरकर अण्डमान (कालापानी) की ओर भेज दिये गये। पोर्ट ब्लेयर की काल-कोठरी नं० १२३ में उन्हें रखा गया। अण्डमान में बंग-केसरी क्रांतिवीर श्री आशुतोष लाहिड़ी, भाई हृदयरामसिंह, देवतास्वरूप भाई परमानन्द, पं० परमानन्द झाँसी आदि अनेक देशभक्तों को वीर सावरकर के साथ रहने का अवसर मिला।

अण्डमान में वीर सावरकर, देवतास्वरूप भाई परमानन्द एवं अन्य क्रांतिकारियों ने जो अमानवीय यातनाएँ सहन कीं, उन्हें लिखते हुए लेखनी काँप उठती है। इन महान् क्रांतिवीरों ने मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए क्या-क्या कष्ट न सहे?

वीर सावरकर ने अण्डमान की नारकीय यातनाओं का बड़ा ही रोमांचकारी वर्णन 'मेरा आजीवन कारावास' नामक अपनी आत्मकथा में किया है। उन्होंने लिखा है—

"अण्डमान में राजबन्दियों को अलग-अलग तन्हाई (एकान्त) कोठरियों में रखा गया था। यदि वे परस्पर बोलने का प्रयास करते तो उन्हें हथकड़ियाँ व बेड़ियाँ डाल दी जातीं। स्नान के हौद पर अथवा भोजन करते समय, यदि केवल इशारे से भी कोई बातचीत का प्रयास करता तो उसे सात-सात दिन तक बेड़ियाँ-दण्डी पहनाकर खड़ा रहने का दण्ड दिया जाता।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोल्हू पेरने का वर्णन

वीर सावरकर ने अपनी कारावास कहानी में अण्डमान की यातनाओं पर प्रकाश डालते हुए कोल्हू में बैल की तरह जुत कर तेल पेरने का बड़ा सजीव वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है—

"हमें तेल का कोल्हू चलाने का काम सौंपा गया, जो बैल के ही योग्य माना जाता है। जेल में सबसे कठिन काम कोल्हू चलाना ही है। सवेरे उठते ही लंगोटी पहनकर कमरे में बन्द होना तथा सायं तक कोल्हू का डण्डा हाथ से घुमाते रहना। कोल्हू में मरी के पड़ते ही वह इतना भारी चलने लग जाता कि हृष्ट-पुष्ट शरीर के व्यक्ति भी उसकी बीस फेरियाँ करते रोने लग जाते। राजनीतिक कैदियों का स्वास्थ्य खराब हो या भला, ये सब सख्त काम उन्हें ही दिये जाते थे। चिकित्सा शास्त्र भी इस प्रकार साम्राज्यवादियों के हाथ की कठपुतली हो गया। सवेरे दस बजे तक लगाकर चक्कर लगाने से श्वास भारी हो जाती और प्रायः सभी को चक्कर आ जाता या कोई-कोई बेहोश हो जाते। दोपहर को भोजन आते ही दरवाजा खुल पड़ता, वन्दीवान थाली भर लेता और अन्दर जाता कि दरवाजा बन्द।

"यदि इस बीच कोई अभागा कैदी यह चेष्टा करता कि हाथ-पैर धोले या बदन पर थोड़ी धूप लगा ले तो नम्बरदार का पारा चढ़ जाता था। वह माँ-बहन की सैंकड़ों गालियाँ देनी शुरू कर देता था। हाथ धोने को पानी नहीं मिलता था, पीने के पानी के लिए तो नम्बरदार के सैंकड़ों निहोर करने पड़ते थे। कोल्हू को चलाते-चलाते पसीने से तर हो जाते, प्यास लग जाती। पानी माँगते तो पानी वाला पानी नहीं देता था। यदि कहीं से उसे एकाध चुटकी तम्बाकू की दे दी तो अच्छी बात है, नहीं तो उलटी शिकायत होती कि ये पानी बेकार बहाते हैं, और जेल में यह एक बड़ा भारी जुर्म है। यदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी ने जमादार से शिकायत की तो वह गुस्से में कह उठता—'दो कटोरी का हुक्म है, तुम तो तीन पी गया और पानी क्या तुम्हारे बाप के यहाँ से आएगा ?' नहाने की तो कल्पना ही अपराध थी। हां, वर्षा हो तो भले ही नहा लें।

"केवल पानी ही नहीं अपितु भोजन की भी वही स्थिति थी। खाना देकर जमादार कोठरी बन्द कर देता और कुछ ही देर में हल्ला करने लगता—"बैठो मत, शाम को तेल पूरा हो, नहीं तो पीटे जाओगे और जो सजा मिलेगी सो अलग।" वह यह नहीं देखते कि बन्दी ने अभी खाना खाया है कि नहीं ? ऐसे वातावरण में बन्दियों को खाना निगलना भी कठिन हो जाता। बहुत से ऐसा करते कि मुंह में कौर रख लिया और कोल्हू में चलने लगे। कोल्हू पेरते-पेरते, थालियों में पसीना टपकाते-टपकाते, उसी कौर को उठा-उठाकर मुंह में भरकर निगलते-निगलते ही कोल्हू पेरते रहते।

'सौ में से एकाध ऐसे थे जो दिन-भर कोल्हू में जुतकर ३० पौण्ड तेल निकाल पाते। जो कोल्हू चलाते-चलाते थककर हाय-हाय कर देते उन पर जमादार, वार्डर की मार पड़ती। तेल पूरा न होने पर ऊपर से थप्पड़ पड़ रहे हैं, लाठियाँ खा रहे हैं, आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है।

ज्वर में भी कोल्हू

सावरकर ने अण्डमान में अंग्रेज नरपिशाचों द्वारा क्रांतिवीरों पर किए गए अमानवीय अत्याचारों का आगे वर्णन करते हुए लिखा है—छात्र तथा अध्यापक श्रेणी के राजनीतिक कैदियों को भी कोल्हू पेरने को मिला तो वे बीमार हो गए। किन्तु अण्डमान की जेल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में १०२ डिग्री से कम बुखार नहीं माना जाता था। उसे न अस्पताल भेजा जाता न काम से छुट्टी ही मिल पाती। जिस बदकिस्मत को बुखार, दस्त या कै न होकर सिर दर्द, हृदय रोग या ऐसा कोई अप्रत्यक्ष रोग होता, उसकी तो शामत आ जाती। सिर दर्द एवं हृदय रोग आदि की शिकायत करने वाले बन्दी को तुरन्त 'ढोंगी' या 'बहानेबाज' की पदवी दे दी जाती।

"मेरे भाई गणेश सावरकर को बचपन ही से आधे सिर दर्द की बीमारी थी। कोल्हू में जुतने एवं कष्ट सहने से उसकी बीमारी बढ़ गई। सुबह उठकर वह कोल्हू में जोता जाता, जैसे-जैसे दिन चढ़ता उसका सिर दर्द भी बढ़ता जाता। वेदनाएँ फूट निकलतीं। गरमी असह्य हो उठती। जैसे-जैसे दिन चढ़ता, मस्तक-शूल तीव्रतर बन जाता। उधर जमादार बुरी तरह धमकी देता—"कोल्हू पीसो, तेजी से चलो।" गोरे अधिकारी के आने पर जब गणेश सावरकर ने उनसे सिर दर्द की शिकायत की तो उत्तर मिला—"यह मेरा प्रश्न नहीं है, डाक्टर से पूछो।" डाक्टर से कहा गया तो उसने ताप-मान देखकर कह दिया—"कोई भी बीमारी नहीं है, बदमाशी व ढोंग है।"

"एक बार डाक्टर ने गणेश पंत की असह्य वेदनाएँ देखीं तो उन्हें दो दिन के लिए अस्पताल भेजने का हुक्म दे दिया। गणेश पंत बिछौना उठाकर अस्पताल वार्ड की ओर चलने लगा कि इतने में ही अंग्रेज अधिकारी बारी वहाँ आ गया और लाठी पटककर चिंघाड़ता हुआ बोला—'ऐ बम्बगोले वाला! किधर जाता है?' साथ के जमादार ने कहा कि—'डाक्टर के आदेश से बीमार होने के कारण इन्हें अस्पताल वार्ड ले जा रहा हूँ'। तो उत्तर सुनते ही बारी ने गरजते हुए कहा—'वह साला डाक्टर हुक्म देने वाला कौन होता है? ले जाओ इसे और कोल्हू में जुतवा दो।' श्रीगणेश सावरकर को फिर कोठरी में बन्द करके कोल्हू में लगवा दिया गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस अधशिर का असह्य शूल सहन करते हुए, दिन-भर कोल्हू चलाते हुए, शाम के समय मेरे ज्येष्ठ बंधु (गणेश सावरकर) तेल नापकर, आह खींचकर, उस लकड़ी पर शरीर लिटा देते तो सारा शरीर वेदनाओं से भर आया करता। आँखें झपक ही नहीं पाती थीं कि पुनः सवेरा हो जाता और पुनः कोठरी में कोल्हू में लग जाना पड़ता।"

मल-मूत्र विसर्जन पर भी रोक

वीर सावरकर जी ने अण्डमान में अंग्रेज साम्राज्यवादियों के अमानवीय अत्याचारों का भण्डाफोड़ करते हुए अंग्रेज के एक बड़े ही पैशाचिक कार्य का वर्णन किया है। वह लिखते हैं —

"कष्टों का कितना वर्णन किया जाए! मगर केवल एक उदाहरण से कुछ कल्पना करना संभव समझ कर ही यह घटना लिख रहा हूँ। अण्डमान में बन्दी के लिए काम करना, कोल्हू में जुतना, मारपीट सहन करना, ये सब कष्ट तो थे ही, किन्तु एक और भयंकर तकलीफ थी, जिसको कहते संकोच होता है। वह थी मल-मूत्र पर भी रोक-टोक। सुबह-शाम व दोपहर को छोड़कर अन्य समय शौच जाना भी अपराध माना जाता था। इस कोठरी में एक रात को ही कैदी रहता था तथा पेशाब करने के लिए एक मटका कोठरी में रखा रहता। रात के १२ घण्टों में कोई शौच न कर पाता था। यदि किसी को शौच लगता तो उसे डाक्टर से कहकर बारी से आज्ञा लेनी पड़ती। दूसरे दिन बारी उससे कहता—"साला, तुम्हें रात को ही टट्टी लगता है?"

इस त्रस्त परिस्थिति में कुछ बंदी मलावरोध करना अशक्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होने से उसी कोठरी में जमीन पर शौच कर लेते। उस आठ-दस फुट के कमरे में रात भर उसी मल को सिरहाने रखे, सवेरे भंगी के अंदर आते ही तमाखू का लालच देकर मल को उठवाने की विनती करते। यदि भंगी न मानकर जमादार से कह देता तो जमादार उस बंदी को ठोकरें लगाता हुआ बारी के पास ले जाता। बारी उसे कमरा गंदा करने के आरोप में या तो मल अपने हाथों से धोने या तीन-चार दिन दिन-भर खड़े रहने की सजा देता। फिर उस खोड़े में खड़ा रहने में मल-मूत्रादि धोने का अवरोध करना पड़ता। सवेरे छः से दस और दोपहर को बारह से पाँच तक हथकड़ी में खड़ा होना पड़ता। उस समय तक शौच तो दूर पेशाब तक करना मना था।"

अमानवीय यातनाएँ

वीर सावरकर के अण्डमान के साथी क्रांतिवीर श्री शांतिभानु लहरी ने अपने अण्डमान के संस्मरण में सावरकर के कष्टमय जीवन के विषय में लिखा है—

"एक दिन मैंने टहलते-टहलते आगे जाकर देखा कि लोहे का आड़ा डंडा पैरों पर पड़ा है, दोनों हाथों फैले हुए हैं तथा हथकड़ियों से बंधे हुए हैं जिन्हें वह किसी भी भाँति मोड़ नहीं सकते। एक अधिकारी पहरे पर खड़ा है, जो किसी को भी उनसे बातें नहीं करने देता। मैंने वहाँ के एक पुराने बंदी से प्रश्न किया—"यह कौन है ?" बंदी ने उत्तर दिया—"आप नहीं जानते इन्हें, यह सावरकर बाबू हैं। इन्हें इसी भाँति खड़े-खड़े कई दिन व्यतीत हो गए। सावरकर बाबू यह कष्ट दूसरों के लिए सहन कर रहे हैं।" सावरकर को यह कष्ट पाते देखकर मेरी आँखों से अश्रुकण छलक पड़े।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीर सावरकर व देवतास्वरूप भाई परमानन्द को कई दिनों तक लोहे के पिंजड़ों में भी खड़ा किया गया। ऊँचे स्थान पर हथकड़ियों से हाथ लटकाकर घंटों-घंटों खड़े रहने की यातनाएँ भी दी गईं। अनेक बार पीठ पर कोड़े भी बरसाये गए। इन सब अमानवीय यंत्रणाओं से भी सावरकर अपने पथ से विचलित न हो सके। अण्डमान की अमानवीय यातनाओं से त्रस्त होकर अनेक युवक क्रांतिकारियों ने आत्महत्या का भी निश्चय किया। इन्दुभूषणराय नामक एक राजबंदी ने तो आत्महत्या कर भी ली। उल्हासकरदत्त यातनाओं मे पागल तक हो गए। देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी एवं बंग केसरी क्रांतिवीर श्री आशुतोष लाहिड़ी आदि कुछ क्रांतिकारियों ने अमानवीय जेल यातनाओं के विरुद्ध आमरण अनशन करके प्राण त्याग देने का निश्चय किया। वीर सावरकर 'अनशन', 'सत्याग्रह' जैसी रीति पर किंचित् भी विश्वास नहीं करते थे--उन्होने भाई परमानंदजी को समझाते हुए कहा—"यदि कोई कार्य ही करना है तो शत्रुपक्ष की हानि अधिक हो ऐसा कार्य करो। स्वयं भूखा रहकर प्राण त्यागने से क्या लाभ ?" भाईजी मान गए और उन्होंने अनशन त्याग दिया।

धर्मवीर रामरक्खा का बलिदान

पंजाबी ब्राह्मण रामरक्खा द्वारा अपने यज्ञोपवीत धारण करने के धार्मिक अधिकार की रक्षा के लिये अनशन कर प्राणोत्सर्ग करने की घटना अण्डमान कारागृह के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगी।

सावरकर जी ने लिखा --"रामरक्खा एक तेजस्वी राष्ट्रभक्त था। उसने भारतीय सेना में राष्ट्रभक्ति के विचार पैदा करने के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्देश्य से चीन, जापान, बर्मा आदि देशों की यात्रा की थी। रंगून और स्याम तक पहुँचकर हिन्दुस्तानी सैनिकों में विद्रोह की भावना भड़काने का प्रयास किया था। उसे ब्रिटिशराज के विरुद्ध विद्रोह फैलाने के आरोप में कठोर सजा देकर अण्डमान भेजा गया। अण्डमान पहुँचते ही उसके गले में पड़ा यज्ञोपवीत(जनेऊ) निकालने का प्रयास किया गया तो उस ब्राह्मण वीर का स्वाभिमान जाग उठा—"यह मेरा धार्मिक चिह्न है। इसे धारण करने के मेरे धार्मिक अधिकार को कोई चुनौती नहीं दे सकता"—वह दहाड़ उठा। वार्डरों ने उसे धर दबोचा तथा जबरदस्ती गले का जनेऊ तोड़ डाला।

रामरक्खा स्वाभिमानी और तेजस्वी ब्राह्मण था। उसने शपथ ले ली—"जब तक यज्ञोपवीत नहीं मिलेगा वह अन्न-ग्रहण नहीं करेगा।" राजबन्दियों में इस बात पर रोष था कि अधिकारी मुसलमान बन्दियों को तो मजहबी अधिकारों के नाम पर हर प्रकार की छूट देने को तत्पर रहते हैं किन्तु हिन्दू बन्दियों की धार्मिक भावनाओं को आघात पहुँचाने में कदापि नहीं हिचकिचाते।

रामरक्खा ने अन्न के साथ-साथ जल भी त्याग दिया तथा दृढ़ता के साथ अपने धार्मिक चिह्न को धारण किये जाने के अधिकार की माँग को लेकर अनशन पर डट गया। पन्द्रह दिन बाद जबरदस्ती उसे नाक के माध्यम से दूध चढ़ाया गया। दिनोंदिन उसका स्वास्थ्य गिरता गया। उसकी छाती में भीषण दर्द रहने लगा और अन्त में डाक्टरों ने उसे राजयक्ष्मा (टी० बी०) से पीड़ित घोषित कर दिया।

मैंने रामरक्खा को पत्र लिखा कि उस जैसे साहसी क्रांतिकारी को अपने जीवन को यों ही नहीं गँवाना चाहिए। किन्तु वह पंजाब की उस मिट्टी में पैदा हुआ था, जिसके वीर झुकना नहीं जानते थे। उसने स्पष्ट कह दिया, 'जब तक कन्धे पर पवित्र यज्ञोपवीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुनः न आ जायेगा वह अन्न-जल ग्रहण नहीं करेगा।' दो माह के अन्दर इस स्वाभिमानी वीर ब्राह्मण ने धार्मिक स्वातन्त्र्य की रक्षा के लिये 'हुतात्मा' पद प्राप्त कर लिया। उसका निधन हो गया।

अधिकारी चाहते थे कि रामरक्खा के निधन के असली कारणों पर पर्दा डालकर उसे बीमारी से मृत्यु का ग्रास बना सिद्ध कर दिया जाये। किन्तु यह मामला हिन्दुस्तान के समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते ही चर्चा का विषय बन गया। हिन्दुस्तानी राजबन्दियों की स्थिति जानने के लिये गठित विशेष आयोग के सामने तक यह मामला आया। इस वीर ब्राह्मण के बलिदान का यह परिणाम निकला कि हिन्दू बन्दियों को अपने धार्मिक प्रतीक यज्ञोपवीत पहनने की अनुमति दे दी गई।

जोतीशचन्द्र भी काल का ग्रास बना

जोतीशचन्द्र नामक बंगाली युवक भी जेल अधिकारियों की हठधर्मी तथा यातनाओं के कारण पहले पागल हुआ और तदनन्तर उसे काल का ग्रास बन जाना पड़ा।

जोतीशचन्द्र बंगाल के क्रांतिकारी संगठन का सक्रिय सदस्य था। क्रांतिकारियों के साथ पुलिस की हुई मुठभेड़ में पुलिस की गोली उसके पैर में लग गई तथा वह गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। बाद में उसे कठोर सजा देकर अण्डमान भेज दिया गया। हड़ताल के दौरान एक दिन शाम को वार्डर उसकी कोठरी में उसे भोजन देने गया कि जोतीशचन्द्र ने अनुरोध किया कि कोठरी में मल से भरे कमोड को बाहर निकालने के बाद ही भोजन अन्दर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेना संभव होगा क्योंकि भारी दुर्गन्ध के कारण कोठरी में खड़े रहना भी मुश्किल हो रहा है। वार्डर अपनी हठधर्मी पर अड़ गया तथा उसने जमादारों की सहायता से उसे कोठरी में धकेल दिया तथा खाने से भरी थाली भी अन्दर रख दी। बारी को इस अन्याय-पूर्ण घटना की सूचना दी गई किन्तु उसने कोई ध्यान नहीं दिया।

जोतीशचन्द्र के मस्तिष्क पर इस ज्यादती का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा तथा वह रात भर भूखा-प्यासा दुर्गन्धमय वातावरण में पड़ा रहा। राजबन्दियों के साथ इस प्रकार की घटनाएँ पहले भी होती रहती थीं, किन्तु इस भावुक बंगाली युवक के मस्तिष्क को यह सहन नहीं हुआ। दूसरे दिन उसने रात का रखा भोजन फैंक दिया तथा अनशन की घोषणा कर दी। कुछ ही दिनों में उसे रक्तिम पेचिश हो गई तथा शरीर तेजी से गिरने लगा। उसे अस्पताल में दाखिल कराया गया।

हम सब उसकी दयनीय हालत को देखकर चिन्तित हो उठे। मैंने उसके पास जाकर उसे समझा-बुझाकर अनशन त्यागने को राजी कर अन्न ग्रहण कराया। उसका शरीर तो बुरी तरह से अशक्त हो ही चुका था। मन-मस्तिष्क पर भी इस घटना का भारी कुप्रभाव पड़ा। हमारे देखते-ही-देखते कुछ ही महीनों में वह 'पागल' हो गया।

उसे बंगाल भेजकर मानसिक चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। एक वर्ष तक वहाँ यातनाएँ भोगता रहा तथा अन्त में काल का ग्रास बन गया। एक दिन एक समाचार-पत्र में चार लाइनों का का समाचार पत्र छपा--'क्रांतिकारी जोतीशचन्द्र का बरहामपुर के पागलखाने के अस्पताल में देहान्त हो गया।' बताया जाता है वि अन्तिम समय में उसका पागलपन कुछ कम हो गया था तथा मृत्यु से कुछ ही क्षण पूर्व उसने अपने रिश्तेदारों के नाम एक सन्देश लिखा था जिसमें कहा था, **'यह न समझना कि मृत्यु के पश्चात् मेरी**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आत्मा स्वर्ग में खर्राटे लेती पड़ी रहेगी। यदि मेरा मातृभूमि के प्रति प्रेम वास्तविक होगा तो शीघ्र जन्म लूंगा और अपने देश की स्वाधीनता और सेवा के पुनीत कर्तव्य मार्ग पर पुनः बढ़ जाऊँगा।'

बेचारा जोतीश ! कहते हैं कि मृत्यु के समय उसका मस्तिष्क पुनः चैतन्यमय हुआ था। उसके अन्तिम सन्देश को पढ़कर तो लगता है कि वह 'पागल' नहीं अपितु मातृभूमि का 'दीवाना' बन चुका था और माता के सच्चे दीवाने 'पागल' ही तो होते हैं जो बलि-पथ के सच्चे राही कहलाते हैं।

पागलपन का शिकार

कारागृह की अमानवीय यातनाओं ने एक और लाला रामचरणदास नामक बन्दी को भी पागलपन के कगार तक पहुँचा डाला था। रामचरणदास पंजाबी राजनीतिक बन्दी था तथा दृढ़ हिन्दू संगठनवादी विचारों का उदार हृदय राष्ट्रभक्त था। यातनाओं के कारण वह राजयक्ष्मा (टी० बी०) के बाद अनिद्रा तथा मस्तिष्क व्यथा से पीड़ित हो गया। एक दिन उसने मुझे पत्र लिखा—'जीवन-भार असह्य हो रहा है—केवल आत्महत्या ही उससे मुक्ति दिला सकती है।' पत्र पढ़ते ही मैं चिन्तित हो उठा तथा उसके पास जाकर उसे धैर्य दिया कि राष्ट्रसेवा के महान यज्ञ में कष्ट तो सहन करने ही पड़ते हैं। अपने लिये नहीं, अपितु अपने राष्ट्र की सेवा के लिये तुम्हें अभी और जीवित रहना चाहिए। मेरी बात उसकी समझ में आ गई। कुछ ही दिनों में उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा तथा उसका जीवन बच गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भानसिंह पर अत्याचार

हमारे साथ भानसिंह नामक एक सिख राजनीतिक बन्दी था। टंडेल तथा पेटी अफसर से उसका किसी बात पर झगड़ा हो गया। मारपीट की नौबत के बाद भानसिंह को कोठरी में बन्द कर दिया गया तथा बारी को बुलवा लिया गया। बारी ने कोठरी में घुसते ही जैसे ही भानसिंह को गाली दी कि उस वीर सिख ने ईंट का जवाब पत्थर से देने वाली और बड़ी तथा वीभत्स गाली उसे सुना दी। अब क्या था—बारी आगबबूला हो उठा तथा उसने वार्डरों, टंडेलों व अपने अन्य चमचों को इशारा कर दिया कि इस निर्भीक सिख को पूरा मजा चखा डालो। हरी झंडी मिलते ही दस-बारह लोग लाठियां-डंडे लिये कोठरी में घुस गये और भानसिंह पर पिल पड़े। उस अकेले सरदार ने हमले का डटकर प्रतिकार किया। लात-घूंसों व बाजुओं से प्रहार किये किन्तु निहत्था उनसे कब तक भिड़ता। सभी एकसाथ उस पर टूट पड़े तथा जमीन पर गिरा कर डंडों से उसे लहूलुहान कर डाला। पिटता-पिटता वह जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगा। पूरी जेल उसकी करुणाजनक चीखों से गूंज उठी—'मारा—भाइयो, मेरे को मार रहे हैं···मारा···।' भानसिंह की चीखें सुनकर उसी वार्ड के बन्दी क्रोध में भर उठे तथा आगबबूला होकर हाथ में जो आया उसे लेकर ऊपर की ओर दौड़ पड़े। बारी ने भानसिंह की कोठरी का दरवाजा बन्द कराया हुआ था और हाथ में डंडा लिये खड़ा था। बन्दियों को अपनी ओर आता देखकर बारी के होशो-हवास उड़ गये तथा वह पिछवाड़े के जीने से भाग खड़ा हुआ।

भानसिंह की चीखें सुनकर मैं समझ गया कि आज किसी को 'ठीक' किया जा रहा है। मैं तो कोठरी में बन्द था, अतः कर ही क्या सकता था! बाद में भानसिंह के साथ की गई मारपीट की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बात सुनकर मुझे अपार कष्ट हुआ। बारी के आदेश से जो अधिकारी भानसिंह की पिटाई करने उसकी कोठरी में गये थे, उनमें से एक ने मानसिंह पर प्रहार नहीं किया था। उसने स्वयं मुझे स्वीकार किया था कि बारी ने जानबूझकर यह अत्याचार कराया था। मैंने निश्चय किया कि इस घटना का कड़ा विरोध किया जायेगा। हमने इस घटना के विरोध में उच्च अधिकारियों को आवेदन-पत्र भेजे। बारी ने राजबन्दियों को आतंकित करने के लिये भानसिंह पर लाठी-प्रहार कराया था किन्तु इससे राजबन्दी आतंकित होने के बजाय हड़ताल करने तथा अन्याय का प्रतिकार करने को उद्यत हो उठे।

बारी को मेरी चेतावनी

बारी को जब हड़ताल के निर्णय तथा प्रबल प्रतिक्रिया का पता चला तो वह घबड़ा उठा। शाम को वह मुझसे मिलने आया। मैंने उससे स्पष्ट रूप से कहा—'तुम्हारे अत्याचार सीमा पार कर चुके हैं। तुम्हें इसका परिणाम भयंकर रूप में भुगतना पड़ेगा।' बारी ने इस घटना का दोष भानसिंह के मत्थे मढ़ते हुए कहा—'भानसिंह ने मुझे दाँतों से काट लिया तब मजबूरी में पिटाई करानी पड़ी।' मैंने कहा—यदि काट लेने की बात सत्य हो तो भी उसे नियमानुसार सजा दी जानी चाहिए थी। लाठी-डंडों से उसे इतना पिटवाना कि मुंह से खून जाने लगा, असहनीय है। तमाम राजबन्दी अब अत्याचारों का डटकर विरोध करने का निर्णय कर चुके हैं।

दूसरे दिन सुपरिटेंडेंट निरीक्षण के लिये आया तो राजबन्दियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने भानसिंह की निर्ममता से की गई पिटाई का मामला उठाते हुए बारी को दंडित किये जाने की माँग की। उस पर हमारी माँग का भला क्या प्रभाव पड़ना था ? उलटे माँग करने वाले राजबन्दियों को सजा की धमकी दी गई। जिन्होंने भानसिंह को बारी के चंगुल से बचाने का प्रयास किया था उन्हें भी धमकियाँ दी जाने लगीं। अन्त मे राजबन्दियों को हड़ताल का निर्णय करने को विवश होना पड़ा।

भानसिंह शहीद हो गया

बारी तथा उसके 'चमचों' का हम राजबन्दियों में फूट डालने का हर प्रयास असफल हो गया। हड़ताल पूरे जोर-शोर से जारी थी। भानसिंह पिटाई कें बाद से शैया से उठ ही नहीं सका। रक्त-वमन के बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। मैं भी अस्वस्थ होने के कारण अस्पताल में भर्ती हो गया। वहां हम दोनों मिले तो उसने अपने शरीर पर लाठी-डंडों के निशान दिखाये। कितने बर्बर तरीके से बारी ने उसे पिटवाया था, यह मुझे उसे देखकर ही पता चल पाया। अस्पताल में उसकी हालत बिगड़ती गयी तथा चोटों के साथ-साथ उसे क्षय रोग भी लग गया। एक महीने में ही भानसिंह ने दम तोड़ दिया। भानसिंह एक अशिक्षित किसान था, परन्तु उस जैसा उत्कट देशभक्त सुशिक्षितों में भी मिलना दुर्लभ है। बेचारा अपने देश की स्वाधीनता के लिये जूझता हुआ गिरफ्तार होकर, आजन्म कारावास की सजा पाकर अण्डमान आया और वहीं ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों से जूझता-जूझता चल बसा। उसने देशहितार्थ 'हुतात्मा' जैसा उच्च पद प्राप्त किया। मेरी आँखें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके परलोक प्रयाण की दुखद घटना से नम हो गईं। प्रत्येक राजबन्दी का सिर उस वीर के चरणों में झुक गया।

पृथ्वीसिंह आजाद का अनशन

हड़ताल के बाद दूसरा चरण भूख हड़ताल का था। जब अधिकारी ने ज्ञापन लेने से इनकार कर दिया तो योजनानुसार दो राजबन्दी नेता अन्न छोड़कर भूख हड़ताल पर बैठ गये। उसमें एक थे साठ वर्षीय सिख सरदार सोहनसिंह तथा दूसरे पंजाब के तेजस्वी राजपूत युवक पृथ्वीसिंह आजाद। पूरे बारह दिन तक दोनों बिना अन्न-जल ग्रहण किये जेल की कोठरी में पड़े रहे। उनके अनशन से अधिकारी घबड़ा उठे और दोनों के लिखित ज्ञापन को स्वीकार करने को तैयार हो गये। इस ज्ञापन में इंग्लैण्ड की तरह उन्हें राजनीतिक बन्दियों की तरह मान्यता व सुविधाएँ दिये जाने से लेकर सिख बन्दियों को केश धोने के लिये साबुन-तेल तथा पानी दिये जाने जैसी माँगें शामिल थीं। ज्ञापन स्वीकार करते ही सरदार सोहनसिंह ने तो अन्न ग्रहण कर लिया किन्तु राजपूत युवक पृथ्वीसिंह आजाद अनशन पर डटा रहा। दो सप्ताह बाद जब उसकी हालत बिगड़ने लगी तो अधिकारियों ने नाक में नली डालकर उसे जबरदस्ती दूध पहुँचाया। अन्न त्याग के कारण भले ही उसका शरीर निर्बल हो गया था किन्तु उसका राजपूती रक्त ठंडा होने के बजाय और उफनने लगा था। उसने कपड़े पहनना त्याग दिया, चादर ओढ़ना छोड़ दिया। निराहार, नंगधड़ंग, भीषण ठंड व हवा में वह कोठरी के सीमेन्ट के फर्श पर पड़ा रहता था। किसी से एक शब्द भी न बोलता था। जो अधिकारी उसकी उपेक्षा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करते थे, भला वह उनसे क्यों बोले ? कमिश्नर तक उसके पास आया। उसका यही उत्तर था—'मैंने ज्ञापन में सबकुछ लिखकर दे रखा है। अत: बातचीत करने का क्या लाभ ?'

एक-दो माह नहीं पूरे छह माह तक क्रांतिकारी राजपूत युवक पृथ्वीसिंह विना खाये, विना कपड़े पहने, विना एक शब्द वोले उस घोर तपस्या में लगा रहा। उसका सुगठित शरीर हड्डियों का ढाँचा वनकर रह गया था। मैंने उस राष्ट्रभक्त ईमानदार तथा दृढ़ संकल्पी युवक का अमूल्य जीवन बचाने का भरसक प्रयास किया। आखिर एक दिन मैं उसके पास तक जाने में सफल हो गया। मैंने उसे महान् स्वातन्त्र्य सेनानी तथा अकबर से जूझते रहने वाले हिन्दू सूर्य महाराणा प्रताप की कथा सुनाई कि किस प्रकार अनेक बार उन्हें रणनीति के अनुरूप युद्ध के मैदान से चार-पाँच मील तक पीछे भी हटने को विवश होना पड़ता था। किस प्रकार हल्दीघाटी युद्ध में वीरशिरोमणि प्रताप को दुश्मन से जूझते हुए इधर-उधर जाने को विवश होना पड़ा था। परिस्थिति के अनुरूप कुछ पीछे हटना भी शूरता का ही लक्षण है। मैंने पृथ्वी-सिंह को समझाया कि एकान्त में भूखे-प्यासे रहकर प्राण दे देने से राष्ट्र का अहित ही होगा। तुम जैसे साहसी व दृढ़ संकल्पी योद्धा को अपने अमूल्य प्राणों की, इस प्रकार हठ में पड़कर बलि दे देने से कोई लाभ कदापि नहीं होगा। अन्त में इसे 'आत्महत्या' ही मान लिया जायेगा। मेरी बातचीत का उस राजपूत वीर पर प्रभाव पड़ा। उसने वचन दिया कि वह आत्महत्या का पाप नहीं करेगा। तब मैं तनावमुक्त होकर निश्चिन्त हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुपरिन्टेंडेंट पर हमला

पंजाबी बन्दियों में चतरसिंह नामक एक सिख था जो पंजाब के सिख हाईस्कूल में अध्यापक था। वह क्रांतिकारी संगठन का सदस्य था। एक दिन अंग्रेज इंस्पेक्टर विद्यालय का निरीक्षण करने आया तो चतरसिंह ने उस पर हमला कर चाकू मार दिया। इस मामले में उसे आजन्म कारावास की सजा देकर अण्डमान भेजा गया था।

कारागार में सिख बन्दियों को केश धोने के लिये तेल-साबुन भी नहीं मिलता था तथा काम के समय उन्हें तरह-तरह की गालियाँ दी जाती थीं। इस उत्पीडन को देखकर चतरसिंह चिढ़ा हुआ था। एक दिन वन्दियों का वजन लिया जा रहा था कि सुपरिन्टेंडेंट वहां आ गया। उसे देखते ही चतरसिंह का पारा चढ़ गया तथा उसने सुपरिन्टेंडेंट पर हमला कर कुर्सी से नीचे गिरा दिया। पूरी जेल में यह खबर फैल गई और वार्डरों तथा टंडेलों ने तुरन्त चतरसिंह को पकड़कर पीट-पीटकर अधमरा कर डाला। यदि सुपरिन्टेंडेंट बीच में आकर उसे न बचाता तो वह मार ही डाला जाता।

बारी ने आक्रमण की इस वारदात से भी मेरा नाम जोड़ दिया। उसने कहा कि सावरकर ने ही चतरसिंह को आक्रमण के लिये भड़काया होगा। सावरकर ही पंजाबी बन्दियों को विद्रोह के लिये भड़काता रहता है। सुपरिन्टेंन्डेंट पर इस हमले के बाद कुछ राजवन्दियों ने सहानुभूति में उसके पास जाकर चतरसिंह के कृत्य की निन्दा की थी, परन्तु मैं निन्दा करने नहीं गया। इससे भी कहा गया कि मैंने हमले की भर्त्सना क्यों नहीं की? बारी ने जब मुझसे पूछा कि तुमने चतरसिंह के इस कृत्य की निन्दा क्यों नहीं की तो मैंने उत्तर दिया—'आप लोगों ने ही कहा था कि किसी भी बन्दी को दूसरे बन्दी के मामले में दखल नहीं देना चाहिये। मेरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्येष्ठ भ्राता जब बीमार हुए और मैंने आप लोगों से उनके बारे में बातें कीं तो आपने कहा था, उनके बारे में बोलने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। अतः चतरसिंह के कृत्य के बारे में मुझे कुछ कहने की क्या आवश्यकता थी।'

मैंने एक अन्य तर्क दिया कि चतरसिंह ने हमला किया तो साथ-साथ उसकी बुरी तरह पिटाई कर दी गई। बाद में उसे बेंत लगाने की सजा का भला क्या औचित्य था? मेरे इस तर्क से तो बारी का यह विश्वास और दृढ़ हो गया कि चतरसिंह को मैंने ही भड़काया था तथा उसके प्रति मेरी सहानुभूति है। चतरसिंह को वर्षों तक लोहे के पिंजड़े में बन्द रखा गया तथा अमानवीय यातनाएँ दी जाती रहीं।

भाई परमानन्द जी को एक दिन एक ऐसा कागज हाथ लगा जिसमें स्पष्ट लिखा था कि बारी सुपरिन्टेंडेंट को भड़काता रहा कि आप पर हमले के पीछे सावरकर का ही दिमाग था। सावरकर-बन्धु ही जेल में अशांति फैलाते रहे हैं। सावरकर को राजनीतिक बन्दियों में विद्रोह व अशांति की भावना पैदा करने में बहुत आनन्द आता है। भाई परमानन्द जी ने यह संस्मरण अपनी 'आप बीती' में दिया है।

गम्भीर रूप से बीमार

सन् १९१५-१६ के बीच मैं एकाएक अस्वस्थ होता चला गया। सन् १९१० में पहली बार इंग्लैण्ड में गिरफ्तारी के बाद जेल गया तबसे हिन्दुस्तान के अनेक कारागृहों में कष्ट उठाने के बाद अण्डमान कारागृह में बन्दी रहा। इन सभी कारागृहों में अनेक शारीरिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कष्ट उठाने के साथ-साथ चिन्ता, मानसिक तथा अपौष्टिक व खराब भोजन के कारण शरीर में व्याधियाँ पनपने लगीं। पारिवारिक चिन्ताओं का भी शरीर पर कुप्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। अध-कच्चा तथा अपौष्टिक भोजन करते-करते पाचनशक्ति क्षीण होती चली गई। मैंने सुपरिन्टेन्डेंट से अपनी अस्वस्थता की बात कही तो उसने भी कोई ध्यान नहीं दिया।

मुझे तीव्र बुखार चढ़ गया, परन्तु अन्य बन्दियों की तरह मुझे भी अस्पताल में दाखिल नहीं किया गया। मरीजों को दिया जाने वाला भोजन नहीं दिया गया। बुखार उतरते ही फिर से काम पर भेज दिया गया। वही अधकच्चा तथा अपौष्टिक भोजन दिया जाता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि मुझे दस्त होने लगे। साधारण बन्दियों को साधारण बीमारी में भी दूध दे दिया जाता था, परन्तु मुझे दूध नहीं दिया गया। चपाती कच्ची मिलती थी, जो पचती ही नहीं थी। मैंने चपाती खाना ही छोड़ दिया। दाल-भात ही लेता था किन्तु दाल तो निरा पानी ही होती थी। चावल भी अधकच्चे होते थे। चावल पानी के साथ निगलकर पेट की क्षुधा शान्त करने का प्रयास करता किन्तु अधकच्चे चावल भी पचने बन्द हो गये। पेट में दर्द होने लगता, असमय ही शौच का जोर होने लगता। पेट में दर्द होता, शौच जाने की तीव्र इच्छा होती, परन्तु जेल में तो असमय पर शौच जाना भी दंडनीय अपराध था।

बुखार ने शरीर में घर कर लिया था। पेचिश अर्थात् रक्त-मिश्रित दस्त होने लगे थे। डाक्टर ने भी तभी से यदा-कदा गुप्त रूप से मुझे भी चपाती तथा सब्जी भेजनी शुरू कर दी। आगे चलकर मुझे भी अपना भोजन बनाने की अनुमति मिली, परन्तु अस्वस्थता के कारण भोजन बनाना मुश्किल हो जाता था। मुझे भोजन बनाने के लिये कोई सहयोगी दिया नहीं गया था। ज्येष्ठ बन्धु नारियल के ऊपरी छिलके में छिपाकर मेरे लिये चपाती-सब्जी भेजने में सफल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाते तो मैं उस अमृततुल्य सुस्वाद भोजन को रुचि के साथ कर लिया करता अन्यथा पानी के सहारे अधपके चावल निगलकर क्षुधा बुझानी पड़ती।

पेचिश व बुखार आ जाने के कारण मेरा शरीर दिन-ब-दिन दुर्बल होने लगा। रात को निरन्तर बुखार चढ़ जाता परन्तु, रात के समय डाक्टर को दिखायें तो कैसे ? दिन निकलते ही बुखार गायब हो जाता था। डाक्टर को बुखार होने का प्रमाण न दे पाने की स्थिति में न ओषधि मिलनी संभव थी, न दूध, न विश्रांति। बन्धु को भी पुनः आधा शीशी का दर्द सताने लगा। उनका शरीर भी गिरने लगा। अन्त में जब हम दोनों को थोड़ा-थोड़ा दूध दिया जाने लगा तो हमारी पाचनशक्ति इतनी क्षीण हो चुकी थी कि पेचिश के कारण उसने पचना ही बन्द कर दिया।

हिन्दुत्व की ज्योति

वीर सावरकर यद्यपि जन्मजात कट्टर हिन्दुत्व-निष्ठ विचारों के थे किन्तु जब उन्होंने अण्डमान जेल में बंदी मुसलमानों की धर्मान्धता को देखा तो उनके हृदय में और भी अधिक उग्र हिन्दूराष्ट्रवाद की ज्वाला धधक उठी। उन्होंने 'माझी जन्मठेप' में लिखा है—

"अण्डमान में हम हिन्दू राजबन्दियों पर पापी, कुकर्मी व चुगलखोर तीन वार्डर रखे गये। वे तीनों के तीनों पठानी, बलूची मुसलमान थे। वे तीनों क्रूर मुसलमान वार्डर हिन्दुओं पर दबदबा जमाने की नीति रखते थे। 'हिन्दुओं को त्रस्त करने से सर्व पाप विनश्यति' का पाठ जन्म से ही पढ़े हुए। वे कुकर्मी मुसलमान वार्डर हिन्दूराजबंदियों को तरह-तरह से पीड़ा देते थे। अंग्रेजी बारी उन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पापी मुसलमानों का ही पक्ष लेता था। अतः समस्त सिन्धी मुसलमान, पठान मुसलमान, पंजाबी मुसलमान एक होकर हिन्दुओं को परेशान करते थे।"

वीर सावरकर ने जब देखा कि ये धर्मान्ध शरारती मुसलमान हिन्दुओं को परेशान करते हैं तो उन्होंने हिन्दू कैदियों को संगठित करके उनका गौरव जगा दिया। एक दिन पठान वार्डर ने एक मद्रासी हिन्दू कैदी को गालियाँ देते हुए कह दिया—"यह काफिर है साला, इसकी चोटी उखाड़नी चाहिए।" उस दुष्ट पठान ने मद्रासी की चोटी भी पकड़ ली। फिर कहा था, उस मद्रासी का हिन्दुत्व जागृत हो उठा। उसने दुष्ट पठान की दाढ़ी पकड़कर जमीन पर गिरा दिया और उसकी छाती पर बैठकर इतने घूंसे जमाये कि वह बेहोश हो गया। वीर सावरकर ने उस मद्रासी को बाद में इस साहसिक कार्य के लिए बधाई भी दी।

अण्डमान में कुछ मुसलमान कैदी हिन्दुओं को त्रस्त करके व बाद में सहानुभूति दिखाकर उन्हें 'इस्लाम धर्म' स्वीकार करने को बाध्य करते। पठानों ने जब एक-दो हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया तो सावरकरजी ने प्रत्युत्तर में शुद्धि का कार्य प्रारम्भ कर दिया। मुसलमानों की इस शरारत ने ही वीर सावरकर के हृदय में हिन्दू राष्ट्रवाद की ज्योति को और अधिक प्रज्वलित करने में सहयोग दिया।

भाई से भेंट

वीर सावरकर को यह तो पता था कि उनके बड़े भाई श्री गणेश दामोदर सावरकर भी अण्डमान में नारकीय यातनाएं सहन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर रहे हैं, किन्तु अधिकारियों ने दोनों भाइयों को एक-दूसरे से एक क्षण के लिए भी मिलने नहीं दिया।

एक दिन विनायक सावरकर के हृदय में अपने ज्येष्ठ भाई के दर्शनों की तीव्र लालसा उत्पन्न हुई। वीर सावरकर ने विदेश को प्रस्थान करते समय ही अपने पूज्य भाई के दर्शन किये थे। उसके बाद दर्शन न हो सके थे। उन्होंने वार्डर व पेटी अफसर से भी भाई से मिलने की प्रार्थना की किन्तु बारी के आतंक के कारण कोई भी भेंट कराने को तैयार नहीं हुआ।

एक दिन सावरकर सायंकाल के समय जैसे ही अपना पेरा हुआ तेल नपवाकर वापस कोठी की तरफ को लौट रहे थे कि अचानक उनकी अपने पूज्य भाई श्री गणेश सावरकर से भेंट हो गई। क्षण-में ही दोनों भाईयों की आँखें मिलीं और ज्येष्ठ भ्राता के मुख से निकल पड़ा—

"तात्या ! तुम यहाँ कैसे ?"

वीर सावरकर ने अपने पूज्य भ्राता के मुख से उक्त प्रेम भरे शब्द सुने तो उनकी आँखें भर आईं। बारी को पता चल जाने की आशंका से वार्डर ने दोनों भाइयों को बातें न करने दीं। दोनों भाई भारी मन से अलग-अलग कोठरियों में बन्द कर दिये गये।

श्री गणेश दामोदर सावरकर ने दूसरे दिन वार्डर के हाथों एक पत्र अपने छोटे भाई के नाम भिजवाया। उसमें उन्होंने लिखा—
"प्रिय तात्या ! तुम बाहर रहकर मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए कार्य करते रहोगे, ऐसी मुझे आशा थी। उस आशा के बल पर ही मैं अपने कालापानी के दण्ड को खुशी-खुशी से भोग रहा था। मन उन कष्टों को हेय मानता था। हम दोनों भाई तो जेलों में बन्द कर दिये गए और केवल तुम ही बाहर रहकर मातृभूमि की आराधना में लीन हो, यही कल्पना मुझको धीरज दिया करती, कष्ट की सफलता साकार करती। मगर तुम पैरिस में कार्य करते-करते इनके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथों न जाने कैसे पड़ गये ? अब उस क्रांति-ज्योति को कौन जलाएगा ? और 'बाल अपना 'बाल' अब किसका मुंह तकेगा ? मैंने तुम्हें प्रत्यक्ष देखा है, फिर भी विश्वास नहीं होता—हाय ! आह ! तुम यहाँ कैसे आये ?"

वीर सावरकर ने अपने पूज्य भाई का पत्र पढ़ा तो उनका हृदय रो उठा। बड़े भाई के हृदय के प्रत्येक तन्तु में, शरीर के प्रत्येक रोम-रोम में उन्हें राष्ट्रभक्ति की ज्योति का दिग्दर्शन हुआ। वीर सावरकर ने भी एक वार्डर के हाथों अपने पूज्य भ्राता को निम्न पत्र भिजवाया—

"लौकिक तथा भाग्योदय की राख शरीर में मलकर जूझते रह जाना, यही तो अलौकिक भाग्य है। तो फिर दुःख क्यों ? यदि मैं परीक्षा में ही बेकस सिद्ध होता तो मेरी योग्यता तथा कर्तव्य मिट्टी में मिल जाता। यदि 'सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्वक्चैव परिदह्यते' इस स्थिति में होकर मैं कर्तव्यच्युत हो जाता, तो किसे मुख दिखाता ? परन्तु उस प्रकार की कुछ भी घटना न होकर तथा प्राप्त संकटों का सामना करने के लिए तथा स्वार्थों को तिलांजलि देकर मैं स्वयं संकट झेलने के लिए सिद्ध हुआ हूँ। मैंने भारतीय जनता को जो संकटों को झेलने का उपदेश दिया था, यदि मैं स्वयं उन संकटों से डरकर भागने लगता तो क्या मैं कर्तव्यभ्रष्ट न हो जाता ? वास्तव में, संकटों को झेलने में ही हम सबकी योग्यता, कर्तव्यनिष्ठा समाविष्ट है। यशापयश केवल योगायोग की बात है। जीवनभर युद्ध करते-करते, लोदी के पुल उतरते-उतरते तथा आस्टरलीट्झ को जीतकर भी नेपोलियन बिछौने पर चल बसता है। इसी प्रकार स्वातन्त्र्य-युद्ध में रणरागिनी लक्ष्मीबाई तलवार के एक घाव से स्वर्ग सिधार जाती है। कोई सैनिक केवल प्रथम वार से ही कट मरता है, उनका कर्तव्य योगायोग पर प्रायः निश्चित नहीं होता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मैं युद्ध में पीछे रहकर छिपकर जिन्दा रह जाऊँ और अन्य आगे बढ़कर युद्ध जीते व जीतते-जीतते मर जाएँ तो फिर उस जीत का उपभोग करने के लिए मैं पीछे रह जाऊँ? ऐसी दुष्ट तथा जनहित विघातक कायर इच्छा मन में साधारण न करते हुए, वह सैनिक जब आवश्यकता पड़ी तब अन्यों के साथ-साथ अचलता से सैन्य के अग्र में जूझते रहा या नहीं? इसी प्रकार उसकी सच्ची योग्यता व कर्तव्यनिष्ठ निर्भर करती है। मैं समझता हूँ कि उस कसौटी पर हम सब उतरे हैं। संकटों से सामना करना, कारागृह में सड़ते रहना, जिनके लिए इतने कष्ट सहन किये उनके शाप से मरते रहना यही अब अपने जीवन का ध्येय है। यह उतना ही महान् है जितना कि बाहर रहकर कीर्ति तथा दुन्दुभियों के तल पर जूझते रहना महान माना जाता है। क्यों कि अन्तिम विजय-प्राप्ति में ज्ञात रूप से जूझते रहना तथा दुन्दुभियों की ध्वनि का निनादित होना जितना आवश्यक माना जाता है—उतना ही कन्दराओं में, वन्दीगृहों में कराहते रहना तथा अज्ञातस्वरूप में प्राणोत्क्रमण करना आवश्यक माना जाता है।

"मैंने न्यायालय में दो आजन्म कारावासों की सजा सुनते समय जो पद रचा था, वही आज उसी कठोर सजा की कराल द्रंष्ट्राओं में पीसे जाते समय मेरे हृदय का विश्वास तथा भावना सुखासीन कर रहा है। वह महान पद है—

"सारथी जिसे अभिमानी, कृष्णजी औ' राम सेनानी! ये कोटि-कोटि तव सेना, कभी नहीं रुकना।"

अपने छोटे भाई के हाथों लिखा उक्त महान् पत्र जब गुप्त रूप से श्री गणेश सावरकर ने पढ़ा तो वह अपने भाई की अटूट देशभक्ति एवं कर्तव्यपथ पर बलिदान हो जाने की महान भावना देखकर खुशी से नाच उठे। उपर्युक्त ऐतिहासिक पत्र से वीर सावरकर के हृदय की महान राष्ट्रीय भावनाओं का दिग्दर्शन होता है। अण्ड-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मान की अमानवीय यातनाएं भी उन्हें अपने क्रांति पथ से विचलित न करा सकीं।

चाँदनी में खांसते बन्धु

हमारी हड़ताल की सफलता के बाद उस तेल गोदाम ने भी एक लम्बे समय के उपरान्त स्वाधीनता की साँस ली। गोदाम के बन्दियों, कर्मचारियों को सवेरे से पहले कोठरियों से मुक्त किया जाने लगा। अब दस वर्षों में पहली बार उन्हें शीतल चांदनी में खड़े होकर आनन्द लेने का अवसर मिला था। पहले दिन जब वे कोठरी से बाहर निकलकर चांदनी में आये तो वे प्रफुल्लित हो उठे किन्तु चांदनी पर छाया तो कारावास की थी—कारावासीय चांदनी श्मशानवत् थी।

एक दिन मैंने देखा कि मेरे बन्धु (गणेश सावरकर) भी मुक्त होकर चांदनी का उपयोग करने आ गये हैं तो भारी प्रसन्नता हुई। मैं उनके साथ बैठा उनके सान्निध्य को सौभाग्य ही मान रहा था कि वे खाँसने लगे तो घण्टों तक खांसते ही रहे। यह उनके शरीर पर राजयक्ष्मा (टी० बी०) के प्रकोप का परिचायक था। मैं आज भी उनकी वह मूर्ति सामने देख रहा हूं—खांसती, बेंत की टूटी कुर्सी पर बैठी—धैर्य की हँसी चेहरे पर टिकाये—कष्ट भोगी—महान देशभक्त की वह अनुपम-आकर्षक मूर्ति। एक पायजामा लटकाये, और बदन पर कोट ओढ़े आज भी वह मूर्ति मेरी आंखों में समाई हुई है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अण्डमान में काव्य-रचना

अण्डमान में कोल्हू चलाते-चलाते,वीर सावरकर का कवि-हृदय बुझा नहीं। अपने जीवन में महाकाव्य लिखने की उनकी भारी इच्छा थी, अतः उन्होंने काव्य-रचना प्रारंभ कर दी।

इसी बीच सावरकर को समाचार मिला कि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर को 'विश्वकवि' की उपाधि से विभूषित किया जा रहा है। एक भारतीय को 'विश्वकवि' की उपाधि मिलने में सावरकर ने गौरव का अनुभव किया। उनका कवि-हृदय श्री टैगोर को बधाई देने के लिए मचल उठा। उन्होंने श्री टैगोर के अभिनन्दनार्थ एक कविता लिखी। उन्होंने लिखा—

"रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गौरव में भारत का गौरव अनुस्यूत है। भारतीय भाषा 'समरवाष्परथ' में आरूढ़ होकर राजधानी की ओर वापस लौट रही थी। उनके स्वागतार्थ कवियों का समूह आगे बढ़ा। मैं भी कवि हूँ, इस विश्वास से मैं भी उस कवि समूह सम्मिलित होने के लिए आगे बढ़ा। परन्तु माता की आज्ञा हुई कि क्रांति के वाष्पयंत्र के कक्ष में काम करने वालों की कमी है, वहां जा। इस आज्ञा के कारण मुझे 'कवि' कक्ष में सम्मिलित होने का अवसर न मिला।"

अण्डमान में इतनी पाबन्दियों के पश्चात् लेखन-सामग्री कैसे उपलब्ध हो सकती थी ? सावरकर जी ने जेल कोठरी की दीवार पर पत्थर के नोकीले टुकड़े से काव्य की पंक्तियाँ लिखीं। वे दीवार पर लिखते और उन पंक्तियों को कंठस्थ कर लेते तथा मिटा डालते। अण्डमान के कारावास में उन्होंने जो काव्य लिखे उनकी पंक्तियाँ दस हजार के लगभग हैं।

अण्डमान में वीर सावरकर ने 'कमला' 'गोमान्तक' एवं 'विरहोच्छ्वास' काव्यों की रचना की।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सावरकर जी ने अण्डमान में वीररस प्रधान कवितायें ही अधिक लिखीं। वैसे शृंगार और प्रकृति वर्णन पर भी कई कवितायें उन्होंने रचीं। अण्डमान की काल कोठरी से उन्होंने उद्घोष किया—

अनादि मी, अन्त मी,
अवध्य मी भला।
मारिलरिपु, जगति असा,
कवण जन्मला।।

अर्थात् मैं अनादि हूँ, अनन्त हूँ, अत: विश्व में कौन ऐसा शत्रु है कि जो मुझे मार सके ?

अण्डमान की काल कोठरी में जब वह कोल्हू में बैल की तरह जुत कर तेल पेरते थे तो सायंकाल बजने वाली जेल की घंटी की ध्वनि सुनकर उनका कवि हृदय गा उठता। जेल की घंटी को संबोधित करते हुए उन्होंने एक कविता लिखी—

"ऐ संध्या की घण्टी ! तेरा स्वागत मैं किस प्रकार करूँ ? तेरी ध्वनि निश्चय ही स्वतंत्रता को पास लाएगी। तेरी आवाज मुझे तो आजादी के नगरों में, स्वतंत्रता का एक मधुर निनाद प्रतीत होता है।"

सावरकर ने यौवन काल में सुख-सम्पत्ति को लात मारकर, स्त्री-बच्चों का मोह त्यागकर काँटों का ताज पहना। मृत्यु को सम्बोधित कर उन्होंने एक कविता में कहा—

"ऐ मृत्यु ! तुम अकेली चली आओ। अपने साथ रोगों की उत्पीड़क सेना मत लाना। यदि तुम अपनी रोगों की उत्पीड़क सेना को साथ लायीं तो भी मैं उसका सामना करने को बिल्कुल तैयार हूँ। मैं मानता हूँ कि यदि मैंने विलास में कुछ क्षण बिताये हैं, तो उसके कारण मुझे इन बीमारियों से लड़ना पड़ेगा। अत:. मैं तुम्हें यह सलाह देती हूँ कि तुम अकेली ही आओ। मैंने तो सोच-समझ-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर ही अपने जीवन को संकटों की खाई में झोंक दिया है। अतः मैं तुम्हारी रोगों की सेना से कदापि भयभीत होने वाला नहीं हूँ।"

अण्डमान में मानसिक उलझनों एवं शारीरिक कष्टों के बावजूद भी सावरकर ने बड़े ही सुन्दर काव्य लिखे। देश के साहित्यकारों को बड़ा आश्चर्य हुआ था कि अण्डमान के नारकीय जीवन में तिल-तिल करके घुलने वाला एक व्यक्ति भी इस प्रकार की रचनाएँ कर सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय परिच्छेद

अण्डमान से रत्नागिरि

पूरे १० वर्षों तक अण्डमान में नारकीय यातनाएँ सहन करने के बाद २१ जनवरी, सन् १९२१ को वीर सावरकर को कालापानी से भारत के लिए रवाना कर दिया गया। अण्डमान से रवाना होने से पूर्व सभी हिन्दू कैदियों ने मिलकर उनका स्वागत किया व विदाई दी। वह महाराजा बोट से भारत के लिए रवाना किये गये। उनके हृदय में भारत की पवित्र भूमि के दर्शनों की आकांक्षा हिलोरें लेने लगीं। उनके साथ ही उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री गणेश दामोदर सावर-कर भी लाये गये।

भारत आने पर सावरकरजी को महाराष्ट्र के रत्नागिरि नगर में नजरबंद कर दिया गया। उन पर राजनीतिक गतिविधियों में भाग देने, वक्तव्य व भाषण देने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

रत्नागिरि में सावरकर जी ने हिन्दू राष्ट्रीयता से ओतप्रोत साहित्य की रचना का कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने अपने छोटे-भाई श्री नारायण सावरकर को प्रेरणा देकर 'श्रद्धानन्द' व 'हुतात्मा, नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित कराए। सावरकर जी ने छद्म नामों से लेख व रचनाएँ पत्रों में दे दीं। उनकी ओजस्वी रचनाओं से युवकों ने देशभक्ति की भारी प्रेरणा प्राप्त की।

'हिन्दुत्व,' हिन्दू पदपादशाही.' 'उःशाप,' 'उत्तर क्रिया', 'सन्यस्त खड्ग' आदि प्रमुख ग्रन्थ उन्होंने रत्नागिरि में ही लिखे। उन्होंने रत्नागिरि में स्थानबद्ध रहकर अन्य अनेक पुस्तकें व सैकड़ों लेख भी लिखे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुद्धि आन्दोलन

रत्नागिरि में हिन्दू महासभा की स्थापना कराकर सावरकर ने शुद्धि का बिगुल बजाया। उन्होंने जब देखा कि ईसाई व मुसलमान हिन्दुओं को बहकाकर, फुसलाकर लोभ देकर एवं भयभीत करके धर्म परिवर्तन कर रहे हैं तो उनका हिन्दू हृदय कराह उठा। उन्होंने सैकड़ों ईसाई व मुसलमानों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। उन्होंने अछूतों की एक सभा में भाषण देते हुए कहा—"हरिजन हिन्दू जाति के अटूट अंग हैं। आज जो हरिजनों को हिन्दुत्व से च्युत करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है, उसे कदापि सहन न किया जायेगा।"

सावरकर जी की प्रेरणा से मसूरकर जी महाराज ने गोआ जाकर, पुर्तगालियों द्वारा ईसाई बनाये गये हजारों हिन्दुओं को पुनः शुद्ध करके हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। विनायक मसूरकर महाराज के शुद्धि-कार्य से ईसाई पादरियों में खलबली मच गई और पुर्तगाली शासकों ने उन्हें गिरफ्तार करके जेल में बन्द करवा दिया। स्वामीजी की गिरफ्तारी का समाचार सुनकर वीर सावरकर को भारी दुःख हुआ। उन्होंने लगभग एक हजार रुपये एकत्रित करके स्वामीजी की सहायतार्थ भिजवाये। सावरकर जी ने हिन्दू महासभा के नेता डा० मुंजे व श्री केलकर को गोआ भेजकर स्वामीजी की रिहाई का प्रयास करवाया। बंबई विधान सभा तक में श्री विनायक मसूरकर महाराज की गिरफ्तारी पर रोष प्रगट किया गया। अंत में विवश हो पुर्तगाली शासकों को स्वामी जी को रिहा करना पड़ा।

स्वामी विनायक मसूरकर महाराज ने लगभग पन्द्रह हजार इसाईयों को शुद्ध करके हिन्दू धर्म में दीक्षित किया था। उन्होंने एक लेख में लिखा था—"मुझे शुद्धि-कार्य में सर्वाधिक सहयोग वे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रेरणा वीर सावरकर से ही मिली।"

वीर सावरकर ने ईसाई व मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को पुन: शुद्ध करके हिन्दू धर्म में दीक्षित करने का आन्दोलन चलाया तो मुसलमान व ईसाई उनसे चिढ़ गये। ब्रिटिश (ईसाई) शासनाधिकारियों के भी कान खड़े हुए। ईसाई मिशनरियों ने बम्बई के अंग्रेज राज्यपाल से मिलकर सावरकर के शुद्धिआन्दोलन पर प्रतिबंध लगाने की माँग की। जब महाराष्ट्र सरकार ने सावरकर जी से इस शिकायत का स्पष्टीकरण माँगा तो उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया—"जब आपके शासन में धर्म परिवर्तन किये जाने की स्वतन्त्रता है तो हिन्दुओं के शुद्धि कार्य के लिये प्रतिबन्ध कसे लगाया जा सकता है? हिन्दुओं को ईसाई बनाना बन्द किया जाय, तब फिर शुद्धि-कार्य को बन्द करने का विचार किया जा सकता है।"

भाषा-शुद्धि आन्दोलन

रत्नागिरि में ही सावरकर जी ने हिन्दी भाषा के प्रचार का बिगुल बजाया। उन्होंने सब से पहले 'भाषा शद्धि आन्दोलन' प्रारम्भ किया। आन्दोलन के प्रचार के लिए उन्होंने 'भाषा शुद्धि' नामक विस्तृत लेख लिखा। उन्होंने लिखा—"अपनी हिन्दी भाषा को विशुद्ध बनाने के लिये हमें सबसे पहले हिन्दी भाषा में घुसाये गये अंग्रेजी व उर्दू के शब्दों को निकाल बाहर करना चाहिए। संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही हमारी विशुद्ध राष्ट्रीय भाषा है। हिन्दी में अंग्रेजी व उर्दू शब्दों के मिश्रण से वह वर्णसंकरी भाषा बन गई है।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"उन्होंने देवनागरी लिपि को ही भारत की एकता का आधार बनाते हुए लिखा—

"भारत के सब भाषा-भाषी लोग यदि नागरी लिपि में अपनी भाषाओं को लिखना आरंभ कर दें तो भारत की भाषायी समस्या बड़ी सुविधापूर्वक हल हो सकती है।"

राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास टंडन ने एक लेख में लिखा था, "मुझे संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के आन्दोलन की प्रेरणा वीर सावरकर से ही प्राप्त हुई। सावरकर ने ही सबसे पहले विशुद्ध हिन्दी अपनाओ' आन्दोलन प्रारम्भ किया था।"

सावरकर जी की प्रेरणा से ही उनके क्रांतिकारी साथी श्री गणेश रघुनाथ वैशंपायन ने पूना में 'हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना की। समस्त महाराष्ट्र में उन्होंने हिन्दी के प्रचार का आन्दोलन चलवाया।

गांधी जी ने हिन्दी-उर्दू मिश्रित 'हिन्दुस्तानी' भाषा के नाम पर जब भगवान् श्री राम को 'शहजादा राम', महाराजा दशरथ को 'बादशाह दशरथ', माता सीता को 'बेगम सीता' एवं महर्षि बाल्मीकि' को 'मौलाना बाल्मीकि' शब्दों से सम्बोधित कराया तो सावरकर जी ने गांधीजी की इस अनुचित भाषा की कड़ी आलोचना करते हुए इसे हिन्दुत्व पर घोर प्रहार बताया। पूना में जब टंडन जी की अध्यक्षता में हिन्दी राष्ट्र भाषा सम्मेलन हुआ तो गांधी जी की 'हिन्दुस्तानी भाषा' का प्रस्ताव गिरा दिया गया और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का प्रस्ताव पारित हो गया।

यह बहुत कम व्यक्तियों को ज्ञात है कि वीर सावरकर ने एक हिन्दी शब्दकोष की भी रचना की। उन्होंने हिन्दी के कई हजार नये शब्दों की रचना की। 'शहीद, के स्थान पर 'हुतात्मा', 'प्रूफ' के स्थान पर 'उपमुद्रित', 'मोनोपोली' के लिए एकत्व', 'मेयर' के लिए 'महापौर' आदि शब्द सावरकर की ही देन हैं। सावरकर जी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने अनेक बार 'परकीय शब्दों का बहिष्कार करो' का नारा लगाकर शुद्ध हिन्दी अपनाने पर जोर दिया।

रत्नागिरि में ही उनसे सेनापति बापट, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संचालक डा० हेडगेवर हिन्दू महासभा के नेता डा० मुंजे प्रसिद्ध इतिहास-लेखक श्री सरदेसाई ने भेंट की व प्रेरणा प्राप्त की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के 'हिन्दूराष्ट्र' के सिद्धांत के प्रति सावरकर जी ने शुभ कामना प्रकट की।

रत्नागिरि में वीर सावरकर पर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने पर प्रतिवन्ध लगा हुआ था। अतः उस समय की केवल धार्मिकता तक सीमित संस्था हिन्दू महासभा के द्वारा उन्होंने हिन्दू युवकों से सम्पर्क स्थापित करके गुप्त रूप से देश की स्वाधीनता एवं राजनीति के विषय में प्रचार किया। उन्होंने 'हिन्दूराष्ट्र' की पुनर्स्थापना त स्वप्न को साकार करने के लिए ही 'हिन्दुराष्ट्र एवं 'हिन्दूपदपादशाही' जैसे ग्रन्थ लिखे। 'हिन्दुत्व' लिखकर हिन्दुत्व की वास्तविक परिभाषा उन्होंने राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत की। सुषुप्त हिन्दू समाज को झकझोरने के लिए ही सावरकर ने 'वीर वन्दा वैरागी' की ओजस्वी जीवनी लिखी।

हिन्दुत्व', 'हिन्दू-पदपादशाही' एवं 'वन्दा वैरागी' पुस्तकों ने महाराष्ट्र के हिन्दू युवकों में हिन्दुत्व की ज्योति प्रज्वलित कर दी।

रत्नागिरि में वीर सावरकर ने हिन्दू युवकों को शस्त्र-संचालन की शिक्षा दिलवाई। जब एक बार मस्जिद के सम्मुख बाजा बजने पर मुसलमानों ने शरारत की तो वीर सावरकर की प्रेरणा पर पहली बार हिन्दू युवकों ने प्रतिकार किया।

वीर सावरकर के 'शुद्धि-आन्दोलन' के विरुद्ध मुसलमानों ने गांधी जी को पत्र लिखकर स्वाधीनता आन्दोलन से अलग होने की धमकी दी तो गांधी जी ने अपनी दब्बू नीति के अनुसार यह प्रयास किया कि मुसलमानों की बात मान ली जाय। वीर सावरकर जी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने स्पष्ट रूप से पत्रक प्रकाशित कराकर कहा—"मुसलमान तो स्वाधीनता आन्दोलन से पहले ही दूर हैं। हम उन्हें प्रसन्न करने के लिए अपनी जाति का ह्रास कदापि स्वीकार नहीं कर सकते।"

रत्नागिरि हिन्दू सभी के तत्वावधान में वीर सावरकर गणेशोत्सव, शिवाजीउत्सव, कृष्णाष्टमी, रामनवमी, विजयादशमी, मकरसंक्रान्ति आदि पर्वों का आयोजन करके हिन्दुओं में नवचेतना का संचार करते। उन्होंने उत्सवों में गाने के लिए 'हिन्दुओं की एकता-गीत' लिखा। हिन्दू महादेव भगवान् की प्रार्थना करते हुए कहते—"हम सब हिन्दू, विशाल हिन्दू जाति रूपी सागर के बिन्दु बन जायेंगे और हिन्दू समाज की रक्षा करेंगे। हिन्दू जाति की यह नौका आगे चलने के लिए हम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बिना भेद भाव के साथ जुटे रहेंगे।"

रत्नागिरि में ही वीर सावरकर ने हिन्दू महासभा को कृपाण स्वास्तिक, ओंकार व कुण्डलिनी से युक्त भगवाध्वज दिया।

पूरे १३ वर्षों तक सावरकरजी रत्नागिरि में स्थानबद्ध रहकर हिन्दू समाज व साहित्य की सेवा करते रहे। रत्नागिरि में बैठे-बैठे ही वह समस्त देश के हिन्दुओं को प्रेरणा देते रहे।

सन् १९३७ में जब श्री जमनादास मेहता व श्री धनजीशा कूपर को सरकार ने मंत्रिमण्डल में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया ती श्री मेहता ने सरकार के सम्मुख यह स्पष्ट शर्त रखी कि वे मंत्रिमण्डल में सम्मिलित होते ही सबसे पहले वीर सावरकर को ससम्मान, बिना शर्त मुक्त करेंगे। शासन ने यह शर्त स्वीकार कर ली और १० मई, सन् १९३७ को रत्नागिरि रूपी पिंजड़े में बन्द सिंह मुक्त कर दिया गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

रत्नागिरि से मुक्त होने के समाचार से समस्त देश में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। अनेक संस्थाओं के नेताओं ने तार देकर वीर सावरकर जी की मुक्ति का स्वागत किया।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने वीर सावरकर को तार देकर कांग्रेस का नेतृत्व संभालने की प्रार्थना की। कांग्रेस के अनेक नेताओं ने भी उनसे कांग्रेस में सम्मिलित होकर देशसेवा करने का सुझाव दिया।

वीर सावरकर जन्मजात हिन्दुत्वादी थे। हिन्दुत्व की शिक्षा उन्हें छुट्टी में ही पीने को मिली थी। उसके पश्चात् मुसलमानों के अत्याचार एवं धर्मान्धता को देखकर उनके विचार और भी कट्टर हिन्दुत्वनिष्ठ हो गये थे।

कांग्रेस ओर गांधी जी को मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति से सावरकर जी भली-भाँति सुपरिचित थे। गांधी जी ने अनेक बार सशस्त्र क्रांति के मार्ग को 'पागलपन व हिंसा का रास्ता' बताकर विरोध किया किया था। अत: सावरकर जी का उनके विचारों से तीव्र विरोध था। सावरकर जी ने कांग्रेस में सम्मिलित होने से स्पष्ट इन्कार कर दिया।

राजनैतिक जीवन

वीर सावरकर ने देखा कि हिन्दू-संगठन का कार्य केवल हिन्दू

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महासभा ही कर सकती है, अतः वे हिन्दू महासभा में सक्रिय रूप से सम्मिलित हो गये। हिन्दू महासभा उस समय तक केवल सामाजिक व धार्मिक संस्था के रूप में ही थी। सावरकर जी ने हिन्दू महासभा को नया राजनीतिक रूप दिया, हिन्दुओं की राजनीतिक प्रतिनिधि संस्था के रूप में खड़ा किया। वह हिन्दू महासभा के बरार प्रांतीय सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा हिन्दू जनता में जागृति उत्पन्न की। उन्होंने सम्मेलन में भाषण करते हुए कहा—

"हिन्दुस्थान पूर्णरूपेण स्वतन्त्र होना चाहिए। हमारे इस ध्येय-प्राप्ति के अनेक साधन हो सकते हैं। जनता को हृदय से यह भ्रम निकाल देना चाहिए कि केवल अहिंसावादी, गांधी-भक्त ही देशभक्त हो सकते हैं। स्वराज्य में यदि हिन्दू समाज की दृढ़ता नहीं रहेगी तो स्वराज्य टिक नहीं सकेगा। इसलिए स्वाधीनता आंदोलन हिन्दुराष्ट्रवादी विचारधारा के नियंत्रण में चलाना आवश्यकता है। हिन्दू जाति यह एक स्वयमेव राष्ट्र है, जिसकी समान सभ्यता है, समान भाषा (देववाणी संस्कृत) है, और समान भूमि है। हमारा धर्म एक है और हमारा इतिहास एक है। हिन्दू जाति की अस्मिता सुरक्षित रखने के लिए हम गत १२०० वर्षों से विदेशी, विधर्मी आक्रमणकारियों के विरोध में संघर्ष करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं।"

वीर सावरकर ने महाराष्ट्र की अनेक सभाओं में ओजस्वी भाषण देते हुए हिन्दुत्व का निनाद-घोष किया। उन्होंने हिन्दू युवकों को शस्त्र चलाना सीखने और सेना में भरती होने की प्रेरणा दी।

३० दिसम्बर, सन् १९३७ को अहमदाबाद में अ० भा० हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ। वीर सावरकर सर्व सम्मति से हिन्दू महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उन्होंने अधिवेशन में पहली बार मंच से 'हिन्दू' की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा करते हुए घोषणा की—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आसिन्धु सिन्धु पर्यन्त यस्य भारत भूमिका।
पितृभू: पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृत: ।।

अर्थात्—सिन्धु से लेकर समुद्र तक फैली इस भारतभूमि को जो अपनी पितृभूमि, पुण्यभूमि मानता है, वही हिन्दू है।

उन्होंने अधिवेशन में, "महात्मा गांधी' द्वारा 'मुसलमानों को साथ लिये बिना स्वराज्य मिलना असंभव है' के प्रचार को मुस्लिम तुष्टीकरण वाला बताते हुए सौदेबाजी करने वाले मुसलमानों को चेतावनी देते हुए कहा—

"If you come, with you, if you don't come, with out you, and if you oppose. inspite of you, the Hindus will continue to fight for their national freedom as best as they can."

अर्थात्—मुसलमानो ! यदि तुम साथ आते हो तो तुम्हें साथ लेकर, यदि तुम नहीं आते तो अकेले ही, और यदि तुम हमारा विरोध करोगे तो तुम्हारे विरोध को कुचलते हुए हम हिन्दू देश की स्वाधीनता का युद्ध लड़ते रहेंगे।"

सावरकर जी ने कहा कि कांग्रेसी नेताओं ने शरारती मुसलमानों की खुशामद कराकर के जो सिर पर चढ़ाया है, उसका परिणाम भयंकर निवलेगा। उनकी भविष्यवाणी आगे जाकर अक्षरश: सत्य सिद्ध हुई।

आज मुसलमान जो देश में उर्दू भाषा व अल्पसंख्यकों के हितों के नाम पर विष फैला रहे हैं, उसकी भविष्यवाणी भी वीर सावरकर ने आज से २१ वर्ष पूर्व ही अहमदाबाद अधिवेशन में कर दी थी। उन्होंने कहा था—

"मुसलमानों ने मुस्लिम लीग की लखनऊ की बैठक में जो उर्दू को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रस्ताव पास किया है वह घोर साम्प्रदायिक व घृणा पर आधारित है। मुसलमानों को 'वन्देमातरम्' का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राष्ट्र गीत भी असह्य हो गया है। हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए चिन्तित कांग्रेसियों ने मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए 'वन्दे-मातरम्' को काट-छाँट भी दिया किन्तु वह 'वन्देमातरम्' इस शब्द को भी स्वीकार नहीं करते। यह बात हिंदुओं को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि मुसलमानों की इस कुचाल का कारण केवल यही है कि हिंदुओं को ही हिंदू-मुस्लिम एकता रूपी पिशाच दीपिका के पीछे पड़ने की लग्न लगी हुई है। जिस दिन हमने मुसलमानों के मन में यह भ्रम पैदा कर दिया कि उनके सहयोग दिये बिना स्व-राज्य का मिलना असम्भव है, उसी दिन से उन्होंने हमारे सिर पर चढ़ना प्रारम्भ किया है।"

वस्तुतः वीर सावरकर द्वारा अहमदाबाद अधिवेशन में की गई उपर्युक्त भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू व कांग्रेस द्वारा तुष्टीकरण की नीति अपनाने का दुष्परिणाम पाकिस्तान के रूप में सामने आया।

ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा

अहमदाबाद अधिवेशन के पश्चात् सन् १९३८ में वीर सावरकर ने १८५७ के स्वातन्त्र्य-समर की क्रांतिभूमि के रूप में प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा की। ३ अप्रैल, १९३८ को कानपुर की एक सार्वजनिक सभा में ओजस्वी भाषण देते हुए उन्होंने कहा—"यह वही क्रांतिभूमि, ऐतिहासिक नगर कानपुर है कि जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की पराजय देखी थी। इस पवित्र भूमि पर सेनापति तात्या टोपे ने ब्रिटिश सेना का गर्व चूर-चूर किया था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरठ, कानपुर व बनारस इन ऐतिहासिक नगरों के दर्शनों की तीव्र इच्छा मेरे हृदय में बचपन से ही थी। क्रांतिवीर नाना साहब व तात्या टोपे की हिन्दू सेना के युद्ध उद्‌घोष तथा उनकी तोपों की गड़गड़ाहट की ध्वनि मैं बचपन में अपने स्वप्नों में सुना करता था। आज मेरा महान् सौभाग्य है कि मैं उस पुण्यभूमि के प्रत्यक्ष दर्शन कर रहा हूँ।"

वीर सावरकर ने, जिस भगवान् शिव के मन्दिर में सेनापति तात्याटोपे ने शंख ध्वनि कर पहली युद्ध घोषणा की थी, उसके दर्शन किये। गंगा जी के उस घाट को जाकर प्रणाम किया जहाँ भारतीय रणबाँकुरों ने अंग्रेज आततायियों को मौत के घाट उतारा था।

बाराबंकी, फैजाबाद, लखनऊ आदि नगरों में हिन्दुत्व का उद्‌घोष करते हुए वीर सावरकर आगरा पहुँचे। आगरा में उन्होंने उस किले को देखा जहाँ छत्रपति शिवाजी महाराज ने औरंगजेब से भेंट की थी।

सावरकर जी ने १८५७ में स्वातन्त्र्य-समर ग्रन्थ में मेरठ को 'क्रान्ति-भूमि' कहकर गौरव के साथ सम्बोधित किया है। वे मेरठ पहुँचे तथा कालीपलटन के बाबा औघड़नाथ मन्दिर तथा उस प्याऊ के दर्शन किये जहां से पानी पिलाने वाले के रूप में एक राष्ट्रभक्त ब्राह्मण ने भारतीय सैनिकों को विधर्मी विदेशी अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की प्रेरणा दी थी।

मेरठ में मुस्लिम लीग तथा अंग्रेजों के षड्‌यन्त्र के परिणाम-स्वरूप उनकी शोभायात्रा पर हमला किया गया जिसमें कई व्यक्ति मारे गये। सावरकर जी ने मेरठ के मन्दिर में १८५७ के सेनानियों की स्मृति में पुष्पांजलि अर्पित की।

उत्तर प्रदेश के पश्चात उन्होंने पंजाब का भ्रमण करके हिन्दुत्व पर अपने ओजस्वी भाषण दिये। लाहौर में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की प्रतिमा को पुष्पहार पहनाये। अमृतसर में सिखों के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वर्ण मन्दिर के दर्शन किये। अजमेर, ग्वालियर, जोधपुर आदि का दौरा करते हुए वह सिंध चले गये।

हैदराबाद आन्दोलन में योगदान

हैदराबाद में निजाम द्वारा किये गये अत्याचारों से वहाँ की हिन्दू जनता आर्त्तनाद कर रही थी। निजाम ने राज्य के हिन्दुओं के सभी धार्मिक अधिकारों पर रोक लगा दी थी। हिन्दू ने यज्ञोपवीत पहन सकते थे, न हवन कर सकते थे। मन्दिरों में घण्टे घड़ियाल बजाना, कीर्तन करना, रामायण, गीता व महाभारत की कथा कहना सभी को निजाम ने गैर-कानूनी घोषित कर दिया। हिन्दुओं पर मुस्लिम गुण्डे मनमाने अत्याचार करते और हिन्दू स्त्रियों का अपहरण एक साधारण-सी बात हो गई थी।

निजाम के राज्य ने बिल्कुल औरंगजेबी राज्य का रूप धारण कर लिया तो छत्रपति शिवाजी की आत्मा के रूप में वीर सावरकर का हिन्दू हृदय चीत्कार कर उठा। शोलापुर में आर्य समाज ने, निजाम के अत्याचारों का प्रतिकार करने के लिए एक आर्य महा-सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे श्री बापू जी अणे और संयोजक थे महात्मा नारायण स्वामी सरस्वती। वीर सावरकर तुरन्त शोलापुर पहुँचे और उन्होंने सम्मेलन में घोषणा की—"आर्यसमाज हैदराबाद आन्दोलन में अपने को अकेला न समझे। हिन्दू महासभा अपनी सम्पूर्ण शक्ति आर्य समाज के साथ लगाकर निजाम की हिन्दू विरोधी नीति व कार्यकलापों को चकनाचूर करके ही दम लेगी।" वीरसावरकर ने २२ जनवरी, सन् १९३९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को समस्त देश में 'निजाम निषेध दिवस मनाने' की भी प्रेरणा दी।

आर्य समाज के आन्दोलन में हिन्दू महासभा ने पूर्ण सहयोग दिया। वीर सावरकर की प्रेरणा पर सनातनधर्मी विचाराधारा के भी अनेक व्यक्ति हैदराबाद आन्दोलन में जेल गये। पूना जाकर उन्होंने हिन्दू महासभा का विशाल जत्था पं० नाथूराम गोडसे के नेतृत्व में हैदराबाद भिजवाया।

गांधी जी व अन्य कांग्रेसी नेताओं ने हैदराबाद आन्दोलन को साम्प्रदायिक वताया। गांधी जी के इस वक्तव्य का जव समस्त देश में विरोध हुआ तो उन्होंने अपयश से वचने के लिए कह दिया—"धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए चलाये गये आन्दोलन से तो मुझे सहानुभूति है, किन्तु हिन्दू महासभा द्वारा आन्दोलन में कूद पड़ने से यह साम्प्रदायिक हो गया है।"

वीर सावरकर व डा० मुंजे ने गांधी जी के वक्तव्य का उत्तर देते हुए कहा—"गांधी जी यह बतायें कि 'वन्देमातरम्' को सहन न करने वालों, हिन्दी भाषा का विरोध करने वालों एवं स्वाधीनता संग्राम में योग न देने की धमकी देने वालों की चापलूसी करना, उन्हें सिर पर चढ़ाना क्या वड़ा भारी धर्म, निष्पक्षता व न्याय है? क्या वह साम्प्रदायिकता का पोषण करना नहीं है?'

वीर सावरकर ने अनेक स्थानों पर जाकर हैदरबाद आंदोलन के प्रचार में भाषण किए और सत्याग्रही भिजवाये।

नागपुर में वीर सावरकर की अध्यक्षता व अ० भा० हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ तो उन्होंने हैदराबाद आंदोलन के सम्बन्ध में भाषण देते हुए कहा—"हैदराबाद के निजाम के अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध समस्त देश की हिन्दू जनता को एक सूत्र में संगठित होकर धर्मयुद्ध में कूद पड़ना चाहिए। यदि निजाम की धर्मान्धता का विषैला फन कुचला न गया तो भोपाल व अन्य मुस्लिम बाहुल्य स्थानों पर भी हिन्दुओं पर अत्याचार किए जायेंगे।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खुलना में हिन्दू परिषद हुई तो वीर सावरकर का भी भाषण हुआ। उनके ओजस्वी भाषण को सुनकर खुलना में ही पहली बार डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी प्रभावित हुए और हिन्दू महासभा में सम्मिलित हो गये। खुलना से भी सावरकर जी की प्रेरणा पर हैदराबाद आंदोलन में जत्था गया।

हैदराबाद आंदोलन में अनेक हिन्दू वीर शहीद हुए। उनका बलिदान रंग लाया और निजाम सरकार को आर्य समाज के साथ समझौता करना पड़ा।

गवर्नर जनरल से भेंट

विश्व युद्ध छिड़ा तो ९ अक्टूबर, सन् १९३९ को गवर्नर जनरल लार्ड लिनलिथगो ने वीर सावरकर को बड़े सम्मानपूर्वक भेंट के लिए आमन्त्रित किया। वीर सावरकर ने दिल्ली में उनसे भेंट की। लार्ड लिनलिथगो ने उनसे कहा—"विश्वयुद्ध के सम्बन्ध में आपकी क्या नीति है?" सावरकर ने स्पष्ट उत्तर दिया—"मैं एक क्रांतिकारी होने के नाते, सैनिकीकरण को देशहित में समझता हूँ। सीमाओं पर, देश में, सिख, गोरखा व अन्य हिन्दुओं की सैन्य टुकड़ियाँ रहने से ही हिन्दुओं का हित संभव है।" गवर्नर जनरल लार्ड लिनलिथगो वीर सावरकर के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पत्रकारों को बताया—"अण्डमान में अनेक वर्षों तक बन्दी रहने के बाद भी सावरकर का न तेज कम हुआ है, न उनके विचार ही किंचित् मात्र भी परिवर्तित हुए हैं। युद्ध के प्रश्न पर वह भारतीय-हित को आगे रखकर विचार करते हैं।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसरी बार भी वीर सावरकर हिन्दू महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। दिसम्बर १९३९ में कलकत्ता अधिवेशन की उन्होंने अध्यक्षता की। कलकत्ता में उनका अद्वितीय व अनन्य भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने अधिवेशन के समय हिन्दू राष्ट्र नेपाल के महाराजा से भेंट की। उन्होंने कहा—"हिन्दू राष्ट्र नेपाल पर प्रत्येक हिन्दू को गर्व है। नेपाल एक स्वतन्त्र हिन्दू राष्ट्र के रूप में हमारा सीमा प्रहरी है। भारत व नेपाल दोनों की संस्कृति हिन्दू है, राष्ट्र हिन्दू है। दोनों को एक ही माता के पुत्रों की तरह रहना चाहिए, तभी दोनों का हित है।"

कलकत्ता अधिवेशन के बाद उन्होंने दक्षिणी भारत का भ्रमण किया। कर्नाटक में उनकी अध्यक्षता में हिन्दू परिषद का आयोजन हुआ। कर्नाटक से मद्रास पहुँचने पर हिन्दू महासभा की ओर से आयोजित एक विराट महासभा में भाषण करते हुए उन्होंने चेतावनी दी—"अहिंसा के ठेकेदार बने कांग्रेसी मुस्लिम साम्प्रदायिकता से गठजोड़ करके जो 'पाकिस्तान' बनाने का षड्यन्त्र रच रहे हैं, यह हिन्दुस्तान के इतिहास में एक भारी कलंक सिद्ध होगा। देश के प्रत्येक हिन्दू को पाकिस्तान की माँग का डट कर विरोध करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।"

मद्रास में उनके ओजस्वी भाषणों का जनता पर भारी प्रभाव पड़ा। उन्होने एक अन्य सभा में छत्रपति शिवाजी के संघर्षमय जीवन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

मद्रास से वह केरल गए। त्रावणकोर के महाराजा ने उनका भव्य स्वागत किया। चन्दनचेरी नगरपालिका की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र भी भेंट किया गया। मदुरा पहुँचने पर उन्होंने मीनाक्षी देवी के दर्शन किए। समस्त केरल प्रदेश में उनके ओजस्वी भाषणों से हिन्दू जनता में जागृति की लहर दौड़ गई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेताजी सुभाष को प्रेरणा

वीर सावरकर ने 'हिन्दू युवक सेना में अधिकाधिक संख्या में भर्ती हों' का नारा हिन्दू महासभा के अधिवेशन में दिया था। सैनिकीकरण के उन उद्घोष से देश के अनेक प्रसिद्ध नेता आकर्षित हुए।

देशगौरव नेताजी सुभाषचन्द्र बोस वीर सावरकर के क्रांतिकारी तेजस्वी जीवन से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने उनके १८५७ के स्वातन्त्र्य समर ग्रंथ से भी भारी प्रेरणा प्राप्त की थी।

२२ जून, सन् १९४० को अचानक श्री सुभाषचन्द्र बोस वीर सावरकर से भेंट करने 'सावरकर सदन' (बम्बई) पहुँचे। दोनों देश-भक्तों ने घंटों तक देश की स्वाधीनता के प्रश्न पर भी बातचीत की।

श्री सुभाष बाबू ने कहा कि—"मैं चाहता हूँ कि हम भारत के प्रमुख नगरों में जो अंग्रेज सत्ताधीशों के स्टेचू खड़े हुए है, उन्हें तोड़ने का काम प्रारम्भ करके अपने आंदोलन का श्रीगणेश करें। सबसे पहले कलकत्ता में हालवेल का स्टेचू नष्ट किया जाए, ऐसी मेरी योजना है। इससे जहाँ भारतीय जनता में चेतना उत्पन्न होगी वहां ब्रिटिश शासन समझ जायेगा कि जनता जब विदेशियों के स्टेचुओं तक को स्वीकार नहीं करती तो ब्रिटिश शासन को स्वीकार कैसे करेगी?"

वीर सावरकर ने नेताजी की योजना सुनी तो उसका चेहरा गम्भीर हो उठा। उन्होंने नेताजी से कहा—"आपकी राष्ट्रनिष्ठा से मैं सुपरिचित हूँ। किन्तु, आप जैसा श्रेष्ठ सेनानी कुशल संगठक केवल हॉलवेल का पुतला नष्ट करने के कारण वर्षों तक जेल में सड़कर मर जाये, इससें कुछ लाभ होगा, मैं नहीं समझता। सच्ची राजनीति तो यह है कि शत्रु को मारे, स्वयं नहीं मरे। रासबिहारी बोस जैसे अनेक क्रांतिकारी ब्रिटिश साम्राज्य को चकमा देकर देश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से निकल भागे और विदेशों में जाकर जिस प्रकार उन्होंने भारत की स्वाधीनता का आंदोलन चलाया, उसी प्रकार आप कुछ क्यों नहीं करते ? आप विदेश जाकर सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाइये। समस्त हिन्दू सैनिक समय पड़ने पर आपकी सहायता को तत्पर रहेंगे।"

वीर सावरकर की महान् योजना को सुनते ही सुभाष बाबू ने उसी दिन आजाद हिन्द सेना के निर्माण की शपथ ली।

नेताजी ने गुप्त रूप से काबुल होते हुएर्ए वदेशों को प्रस्थान किया और सिंगापुर में 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना की। सुभाष बाबू ने २५ जून, सन् १९४४ को सिंगापुर रेडियो से अपना संदेश देते हुए कहा—

"When due to misguided political whims and lack of vision, almost all the leaders of the Congress Party have been decrying all the soldiers in the Indian army as mercenaries, it is heartening to know that Veer Savarkar is fearlessly exhorting youths of India to enlist in the armed Forces. The enlisted youths themselves provide us with trained men and soldiers for our Indian National Army."

अर्थात्—जबकि भ्रमित राजनीति विचारों और अदूरदर्शिता के कारण कांग्रेस दल के लगभग सभी नेता भारतीय सेना के सिपाहियों को किराये का टट्टू कहकर बदनाम कर रहे थे, उस समय सबसे पहले वीर सावरकर ने निर्भीकता से भारतीय युवकों को सेना में भर्ती होने के लिए आह्वान किया। वीर सावरकर की प्रेरणा पर भारतीय सेना में भर्ती हुए युवक ही हमारी आजाद हिंद सेना के सिपाही बने है।"

श्री सुभाष बाबू ने वीर सावरकर के १८५७ के स्वातंत्र्य समर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रंथ को अपनी ओर से प्रकाशित कराकर आजाद हिंद सेना के सैनिकों में वितरित कराया। सुभाष बाबू का गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू आदि के सिद्धान्तों पर किंचित विश्वास न रहा। कांग्रेसी नेताओं की अदूरदर्शिता से वे सुपरिचित हो गए व वीर सावरकर के सिद्धांतों में उनकी दृढ़ निष्ठा हो गई।

सेना में भर्ती होने का आह्वान

जुलाई, १९४० में वीर सावरकर ने शिमला में वायसराय ने भेंट की। भेंट में वीर सावरकर ने वायसराय से स्पष्ट कह दिया—'हिंदू अखण्ड हिन्दुस्तान की स्वाधीनता के लिए हर प्रकार से संघर्ष करते रहेंगे।"

दिसम्बर, १९४० में मदुरा में अ० भा० हिंदू महासभा का अधिवेशन हुआ तो वीर सावरकर पुनः उसके अध्यक्ष निर्वाचित ए। भीषण ज्वर होते हुए भी उन्होंने विशाल जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा—

"हिंदुओं को अहिंसा, चरखा व सत्याग्रह के प्रपंच से सावधान रहना चाहिये। सम्पूर्ण अहिंसा की नीति आत्मघाती नीति है, एक बड़ा भारी पाप है। हिन्दुओं को इस समय अधिकाधिक संख्या में सेना में भर्ती होना चाहिए। सैनिकीकरण से शस्त्र-विद्या की प्राप्ति होगी और इसी विद्या के आधार पर हिन्दू जाति वीर व अपराजेय बन सकती है।"

वीर सावरकर के इस भाषण का अहिंसा के पुजारी कांग्रेसी नेताओं ने विरोध किया। गांधीजी ने एक लेख में लिखा—"सेना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में भरती होने व शस्त्र-विद्या प्राप्त करने का सुझाव ठीक नहीं है। हमें तो सत्य, अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही स्वाधीनता प्राप्त करनी है।" सावरकर ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि "सत्य, अहिंसा से ब्रिटिश साम्राज्य को ध्वस्त करने की कल्पना, किसी बड़े किले को बारूद की जगह फूंक से उड़ा देने का स्वप्न देखने के समान ही हास्यास्पद है। अत्याचार व आतंक पर आधारित ब्रिटिश साम्राज्य को ध्वस्त करने के लिए पहले उसकी नींव में बारूद ही लगानी पड़ेगी और यह १८५७ से लगाई जाती रही है।"

वीर सावरकर ने मदुरा अधिवेशन के पश्चात् स्वस्थ होते ही पाकिस्तान की माँग का विरोध करने के लिए अनेक नगरों का दौरा किया। कलकत्ता की विराट सभा में उन्होंने 'अखण्ड भारत' का नारा लगाया। श्री आशुतोष मुखर्जी सभागृह का शिलान्यास करते हुए उन्होंने कहा—"हिन्दू जनता कांग्रेस की भारत को खण्डित करने की नीति से सावधान रहे। हमें मुसलमानों से देश की अखंडता का सौदा कदापि न करना चाहिये।"

नेहरूजी को करारा उत्तर

सन् १९४१ में मुस्लिम लीग की योजनानुसार आसाम को मुस्लिम बाहुल्य-क्षेत्र बनाने के षड्यन्त्र से, बाहर से आ-आकर मुसलमान बसने लगे तो वीर सावरकर ने सबसे पहले इस भीषण खतरे की चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि "यदि आसाम में मुसलमानों की संख्या बढ़ जाने दी तो भविष्य में देश के लिए वह भारी खतरा सिद्ध होगा। मुसलमान हिन्दुओं को भगाकर नये अस्तित्व का निर्माण करने का षड्यन्त्र रचेंगे।" वीर सावरकर के भाषण पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जवाहरलाल नेहरू ने टिप्पणी करते हुए—"आसाम में खाली जगह पड़ी है। मुसलमान वहाँ जाकर बस रहे हैं। प्रकृति नहीं चाहती कि कहीं रिक्त जगह पड़ी रहे।" वीर सावरकर ने नेहरू जी की टिप्पणी का करारा जवाब देते हुए सभा में कहा—

"जवाहरलाल नेहरू न दार्शनिक हैं, न शास्त्रज्ञ। उन्हें मालूम नहीं कि प्रकृति घुस आई विषाक्त वायु को दूर हटाना चाहती है।"

वीर सावरकर की यह भविष्यवाणी अब सत्य सिद्ध हो रही है। गांधी-नेहरू की अदूरदर्शिता व मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के कारण आसाम में अवैध पाकिस्तानियों द्वारा घुसकर उसे मुस्लिम बाहुल्य बनाकर, नये पाकिस्तान की माँग का षड्यन्त्र रचा जा रहा है।

भागलपुर का संघर्षमय अधिवेशन

वीर सावरकर पाँचवीं बार भी हिन्दू महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। २५ दिसम्बर, १९४१ को अधिवेशन भागलपुर में करने की घोषणा की गई।

बिहार सरकार के अंग्रेज अधिकारियों ने आदेश दिया—'२१ दिसम्बर को मुसलमानों की बकरा ईद है; अतः साम्प्रदायिक दंगा होने के भय से अधिवेशन पर रोक लगाई जाती है।' हिन्दू महासभा अधिवेशन की स्वागत समिति के मन्त्री ने वीर सावरकर से इस विषय में विचार-विनिमय किया। वीर सावरकर ने स्पष्ट घोषणा की—"हम बिहार सरकार के इस अन्यायपूर्ण आदेश को मानने के लिए कदापि तैयार नहीं हैं। हम उसको ठुकराकर अधिवेशन २५ दिसम्बर को ही भागलपुर में करेंगे।" उन्होंने बिहार के गवंनर को भी अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्णय की सूचना दे दी।

जब बिहार सरकार अधिवेशन के लिए स्वीकृति देने को तैयार न हुई तो वीर सावरकर ने २४ दिसम्बर को समस्त भारत में 'भागलपुर दिवस' मनाने का आह्वान किया। समस्त देश में 'भागलपुर दिवस' मनाकर हिन्दू जनता ने बिहार सरकार के अन्याय-पूर्ण आदेश के प्रति घोर रोष प्रकट किया व कई हजार तार वाय-सराय से पास भेजे।

भागलपुर में अधिवेशन की बड़ी जोरदार तैयारियाँ होने लगीं। एक विशाल पंडाल बनाया जाने लगा। इसी बीच पुलिस ने बिहार प्रान्तीय हिन्दू महासभा के कार्यालय पंर अधिकार कर लिया व पंडाल को तोड़ डाला। पुलिस के इस कुकृत्य से समस्त भागलपुर जिले में हड़ताल हो गई। स्थान-स्थान पर सभाएँ करके पुलिस के कुकृत्य की घोर निन्दा की गई।

पुलिस ने हिन्दू महासभाई नेता पं० राघवाचार्य शास्त्री को गिरफ्तार कर लिया। उनकी गिरफ्तारी से जनता में और भी अधिक रोष व्याप्त हो गया। समस्त भागलपुर में पुलिस-ही-पुलिस नजर आने लगी।

जैसे ही अधिवेशन का दिन पास आया कि हिन्दू नेताओं की गिरफ्तारियाँ प्रारम्भ कर दी गईं। अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री कुमार गंगानंदजी सिंह को २३ दिसम्बर को ही दरभंगा में गिरफ्तार कर लिया गया। उसी दिन लगभग १०० हिन्दू सभाई नेता गिरफ्तार करके भागलपुर जेल में नजरबन्द कर दिये गए।

वीर सावरकर हिन्दू सभा के अनेक नेताओं व कार्यकर्ताओं के साथ भागलपुर के लिए चल दिये। २४ दिसम्बर को वह गया रेलवे स्टेशन पहुँच गये। गया के रेलवे स्टेशन पर ही उन्हें पुलिस के एक भारी दस्ते ने बंदी बना लिया। बंदी होते समय वीर सावरकर ने अपने संदेश में कहा—"मेरी यही अभिलाषा है कि कल भागलपुर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में अधिवेशन अवश्य किया जाय।"

२५ दिसम्बर को दफा १४४ होते हुए भी भागलपुर में हिन्दू महासभा का विशाल जुलूस निकाला गया। भागलपुर में उस दिन पूरी हड़ताल रही। प्रत्येक मकान पर हिन्दू सभा का ध्वज लगा हुआ था। समस्त भागलपुर नगर 'वीर सावरकर की जय', 'हिन्दू महासभा की जय', 'पाकिस्तान नहीं बनेगा' के गगनभेदी उद्घोषों से गूंज उठा। पुलिस ने जुलूस पर लाठी चार्ज किया, घुड़सवार पुलिस जनता को कुचलती रही। इस भीषण संघर्षमय वातावरण में भी अधिवेशन स्थल पर ही वीर सावरकर का लिखित भाषण लोकमान्य तिलक के पौत्र श्री केतकरजी नें पढ़ा।

पुलिस ने तुरन्त गिरफ्तारियाँ आरम्भ कर दी। हिन्दू महासभा के डा० मुंजे, श्री आशुतोष लाहिड़ी, पं० चन्द्रगुप्त वेदालंकार आदि अनेक प्रमुख नेता व सैकड़ों कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गए। भागलपुर स्टेशन पर ही डा० गोकुलचन्द नारंग को गिरफ्तार कर लिया गय।। डा० श्यामप्रसाद मुखर्जी को भी भागलपुर आते समय मार्ग में ही रोक लिया गया।

२५ दिसम्बर को ही भागलपुर सेन्ट्रल जेल में डा० मुंजे की अध्यक्षता में एक भव्य सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में जेल में बन्दी सभी हिन्दू सभाई नेता व कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

भागलपुर के संघर्षमय अधिवेशन का समस्त देश पर भारी प्रभाव पड़ा। वीर सावरकर की दृढ़ता, निर्भीकता एवं तेजस्विता से समस्त हिन्दूराष्ट्र प्रभावित हो उठा। अंग्रेज-कांग्रेसी एवं मुस्लिम-लीगी भागलपुर अधिवेशन का तेजस्वी रूप देखकर काँप उठे।

छठी बार भी वीर सावरकर अ० भा. हिन्दू महासभा के अध्यक्ष चुने गए और १९४२ में उन्होंने कानपुर अधिवेशन की अध्यक्षता की। कानपुर अधिवेशन में उन्होंने हिन्दूराष्ट्र को 'राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दू का सैनिकीकरण करो' यह मन्त्र दिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्होंने हिन्दू जनता को 'अखण्ड भारत' की रक्षा के लिए मर मिटने का आह्वान किया।

महात्मा तिलक की कांग्रेस

२८ मई, सन् १९४३ को अमरावती में महाराष्ट्र प्रान्तीय हिन्दू महासभा की ओर से वीर सावरकर की ६०वीं वर्षगांठ बड़े समारोहपूर्वक मनाई गयी। उन्हें हिन्दू जनता की ओर से तीन लाख रुपये की थैली भेंट की गयी। उस अवसर पर किसी ने उनसे प्रश्न कर दिया कि 'आपने कांग्रेस में सम्मिलित होना अस्वीकार क्यों कर दिया जब कि आपके प्रेरणास्रोत श्री तिलक जी भी कांग्रेस में थे?' वीर सावरकर ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—

"यह बात सही है कि महात्मा तिलक कांग्रेस में थे। लेकिन यह भी सही है कि महात्मा तिलक की कांग्रेस ने किसी पक्ष के साथ, पक्षपात का बर्ताव नहीं किया। उस समय 'बैटेज' नहीं दिया गया था, और न देशभक्ति को बाजारू रूप। 'बिना अहिंसा से स्वाधीनता असंभव है' इस पगली भाषा का उच्चारण तक उन दिनों किसी ने नहीं किया था। महात्मा तिलक कांग्रेस में थे और मैंने तिलक जी से देशभक्ति की शिक्षा-दीक्षा ली है, और उन्हीं की शिक्षा-दीक्षा पर मैं आज तक चल रहा हूं। मुझे विश्वास है कि उनके सिद्धान्तों से मैंने कभी व्यभिचार नहीं किया। मैं हमेशा निष्पक्ष व निर्भीक विचारों के पक्ष में रहा हूँ। हिन्दू महासभा तो महात्मा तिलक की नीति पर ही पूर्ण रूपेण चल रही है। यदि कांग्रेस महात्मा तिलक की नीति पर ही चलती रहती, तो मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उसमें सम्मिलित हो जाता।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सावरकर जी के उपर्युक्त विचार तर्कपूर्ण व अकाट्य थे। श्री लोकमान्य तिलक का जहाँ सशस्त्र क्रान्ति में विश्वास था, वहाँ वह हिन्दुत्व को मुस्लिम तुष्टीकरण और बलिदान करने के भी कड़े विरोधी थे। जब महाराष्ट्र में मुसलमानों ने मस्जिदों के सामने बाजा न बजने देने का आन्दोलन प्रारम्भ किया व गोहत्या की मांग की तो लोकमान्य तिलक जी ने मुसलमानों की उस शरारत का डट कर विरोध किया था। महात्मा तिलक की कांग्रेस व गांधी-नेहरू की कांग्रेस में आकाश-पाताल का अन्तर था।

'पाकिस्तान' योजना का विरोध

'मुसलमानों को साथ लिये बिना स्वराज्य मिलना कठिन ही नहीं—असम्भव है।' गांधीजी के इस अदूरदर्शितापूर्ण नारे ने जिन्ना आदि मुस्लिम लीगियों में पृथकता की भावना का निर्माण किया। इधर कांग्रेसी नेता हिन्दू मुस्लिम एकता की मृगमरीचिका में फंसे रहे, उधर मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिये एक स्वतंत्र देश 'पाकिस्तान' के निर्माण का आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया।

गांधी जी ने घोषणा की 'पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा।' किन्तु दूसरी ओर गांधी जी मुसलमानों को सन्तुष्ट करने में आवश्यकता से कहीं अधिक लग गये।

वीर सावरकर ने जब गांधी जी व कांग्रेस की इस आत्मघाती नीति को देखा तो उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा—"पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा' की घोषणा करने वाले नेता एक दिन मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिये, पाकिस्तान की योजना को स्वीकार कर लेंगे। अतः हिन्दुओं को इनके आश्वासनों में नहीं फंसना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिये।"

वीर सावरकर की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और सन् १९४४ में राजाजी (राजगोपालाचार्य) ने गांधी जी को कुछ शर्तों के साथ भारत-विभाजन के समर्थन के लिये तैयार कर लिया। जिन्ना दूसरों की शर्त को माने बिना, अपनी सम्पूर्ण माँगों को पूर्ण करवाते हुए भारत-विभाजन चाहते थे।

गांधी जी द्वारा भारत-विभाजन का समर्थन किये जाने से समस्त देश में क्षोभ की लहर दौड़ गई। अनेक देशभक्त कांग्रेसियों ने भी उनके इस कार्य पर चिन्ता प्रगट की। वीर सावरकर ने हिन्दू महासभा के कार्यकारी प्रधान डा० मुखर्जी को गांधी जी के पास भेजकर भारत-विभाजन की आत्मघाती नीति का दिग्दर्शन कराया। मुखर्जी ने बताया कि भारत-विभाजन से समस्त भारत की और विशेषकर बंगाल की भारी क्षति और नरसंहार होगा।

वीर सावरकर ने हिन्दू महासभा को आदेश दिया कि 'समस्त देश में पाकिस्तान योजना विरोधी सभायें करके कड़ा विरोध प्रगट किया जाय।' अनेक स्थानों पर पाकिस्तान योजना के विरोध में सबल प्रदर्शन किये गये, सभाओं व जुलूसों का आयोजन किया गया।

वीर सावरकर, क्रांतिवीर श्री आशुतोष लाहिड़ी, देवता-स्वरूप भाई परमानन्द, डा० मुंजे आदि हिन्दू नेताओं ने पाकिस्तान योजना का कटकर विरोध किया तथा हिन्दू जनता को विरोध करने की प्रेरणा दी।

वीर सावरकर ने पाकिस्तान योजना के विरुद्ध देश का जनमत जागृत करने के लिये ७ और ८ अक्तूबर, सन् १९४४ को हिन्दू महा-सभा भवन, नयी दिल्ली में एक विशाल 'अखंड भारत सम्मेलन' का आयोजन किया। सम्मेलन डा० राधाकुमुद मुखर्जी की अध्यक्षता में हुआ। इस ऐतिहासिक सम्मेलन में पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जी महाराज, भरतपुर के महाराजा, श्री जमनादास मेहता, मास्टर तारासिंह, धर्मवीर भोपटकर, डा० मुंजे, क्रांतिवीर श्री आशुतोष लाहिड़ी, डा० गोकुलचन्द नारंग, जगद्गुरु वल्लभाचार्य, गोस्वामी कृष्णजीवन जी महाराज, श्री खापर्डे एवं 'कल्याण' के सम्पादक श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार आदि धर्माचार्यों, नेताओं व विद्वानों के अतिरिक्त देश के सभी प्रान्तों के प्रतिष्ठित नेता एवं हजारों कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

वीर सावरकर ने सम्मेलन में ओजस्वी भाषण करते हुए कहा—"भारत को खंडित करके पाकिस्तान बनाने की माँग करके मुस्लिम लीग ने समस्त हिन्दुओं के स्वाभिमान को खुली चुनौती दी है। कांग्रेसी नेताओं की अहिंसा एवं तुष्टिकरण की आत्मघाती नीति के कारण ही देश को खण्ड-खण्ड, अंग-भंग करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है। देश के प्रत्येक हिन्दू को अपने राष्ट्र की अखण्डता की रक्षा के लिये सर्वस्व होम करने के लिए तत्पर रहना चाहिये।"

इस ऐतिहासिक सम्मेलन का देश पर भारी प्रभाव पड़ा। जब जनता ने स्थान-स्थान पर कांग्रेसी नेताओं को काले झण्डे दिखाये, उनके विरुद्ध प्रदर्शन किए तो उन्होंने जनरोष से बचने के लिये पाकिस्तान का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। चुनाव आयें तो कांग्रेस को 'अखण्ड भारत' का आश्वासन देकर ही चुनाव लड़ना पड़ा। उस समय वीर सावरकर ने हिन्दू मतदाताओं को चेतावनी दी—"कांग्रेसी नेता चुनाव में तुम्हारे मत लेने के लिए ही 'अखण्ड भारत' का नारा लगा रहे हैं। चुनाव के बाद ये कांग्रेसी नेता पुनः पाकिस्तान का समर्थन करके देश के साथ विश्वासघात करेंगे।"

वीर सावरकर की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और आगे चलकर गांधी जी, रामगोपालाचारी, जवाहरलाल नेहरू आदि कांग्रेसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेताओं ने पाकिस्तान का समर्थन किया। पाकिस्तान बना, न किसी के शरीर के टुकड़े हुए न किसी कांग्रेसी नेता ने भारत माता को कटते देखकर आह तक की।

'सत्यार्थ प्रकाश' पर प्रतिबन्ध का विरोध

सन् १९४४ में बिलासपुर में हिन्दू महासभा के वार्षिक अधिवेशन में भी वीर सावरकर ने उपस्थित होकर हिन्दूराष्ट्र का मार्गदर्शन किया।

कराची में हुए मुस्लिम लीग के अधिवेशन ने आर्य समाज की पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' के चौदहवें समुल्लास को इस्लाम धर्म के विरुद्ध बताते हुए जब्त करने का प्रस्ताव पास किया। सिन्ध के मन्त्रिमण्डल ने सत्यार्थप्रकाश से १४वाँ समुल्लास हटा देने की घोषणा की तो देश के आर्य समाजियों में क्षोभ की लहर दौड़ गयी। २० फरवरी, सन् १९४४ को दिल्ली में एक विशाल आर्य सम्मेलन ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के प्रयास की कड़ी भर्त्सना की। भारत के वायसराय को हजारों तार भेजकर इस अन्यायपूर्ण कदम का घोर विरोध किया गया।

हिन्दू महासभाई नेता देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी ने केन्द्रीय असेम्बली में सिंध सरकार द्वारा 'सत्यार्थ प्रकाश' पर लगाई पाबन्दी की कड़ी भर्त्सना करते हुए कहा—"सिन्ध के मुस्लिम मन्त्रिमण्डल ने आर्यसमाज की धार्मिक पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाकर समस्त हिन्दू जाति को ही चुनौती दी है। यदि यह मान लिया जाय कि चौदहवें समुल्लास को इस्लाम धर्म के खण्डन के कारण प्रतिबन्धित कर दिया जाये तो कुरान का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो प्रत्येक शब्द ही हिन्दुओं के विरुद्ध पड़ता है। समस्त कुरान को भी जब्त क्यों न किया जाय ?"

वीर सावरकर ने एक सार्वजनिक सभा में घोषणा की—"जब तक सिन्ध में सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी लगी है, तब तक कांग्रेस शासित प्रदेशों में कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की प्रबल माँग की जानी चाहिये।"

सावरकर जी ने भारत के वायसराय और सिन्ध के गवर्नर को तार देकर कहा—"सिन्ध सरकार द्वारा 'सत्यार्थ प्रकाश' पर प्रतिबन्ध लगाये जाने से साम्प्रदायिक वैमनस्य उत्पन्न होगा। यदि सत्यार्थ प्रकाश से प्रतिबन्ध न हटाया गया तो हिन्दू कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने का आन्दोलन प्रारम्भ कर देंगे। अतः मैं केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करता हूँ कि वह सत्यार्थ प्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध को अविलम्ब रद्द करे।"

इतना ही नहीं 'सत्यार्थ प्रकाश' से प्रतिबन्ध हटवाने के लिये वीर सावरकर ने स्वयं वायसराय से २७ नवम्बर १९४४ को भेंट की व प्रतिबन्ध हटाने की माँग की।

विश्वासघात की चेतावनी

सन् १९४६ में भारत में सार्वजनिक चुनाव हुए तो वीर सावरकर ने अस्वस्थ होते हुए भी हिन्दू महासभा को आदेश दिया कि वह केवल 'पूर्ण स्वाधीनता व अखण्ड भारत' के सिद्धान्तों को सामने रखकर चुनाव लड़े। सावरकरजी ने मतदाताओं को नारा दिया—"कांग्रेस को वोट पाकिस्तान को वोट है।" जब कांग्रेसी नेताओं ने हिन्दू मतदाताओं में पाकिस्तान के प्रति घोर विरोध देखा तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जवाहरलाल नेहरू ने कलकत्ता की सभा में भाषण करते हुए कहा --"कांग्रेस का हमेशा विरोध करने वाली मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक है। हम उससे कदापि समझौता नहीं करेंगे। न भारत के टुकड़े ही होने देंगे।"

वीर सावरकर ने उस समय एक वक्तव्य द्वारा पुनः चेतावनी दी—"ये कांग्रेसी नेता हिन्दू मतदाताओं को अपने चंगुल में फँसाने के लिये ही मुस्लिम लीग को साम्प्रदायिक बता रहे हैं। यह इनका ढोंग है। कांग्रेसी नेता गांधीजी की तरह अपने आश्वासनों के पक्के नहीं है। गांधीजी स्वयं मुसलमानों को खुश करने के लिए आश्वासनों की बलि चढ़ा देते हैं।"

देश का दुर्भाग्य था कि हिन्दू मतदाता कांग्रेस के झूठे आश्वासनों के भ्रम में फँस गये। कांग्रेस चुनाव जीत गई, किन्तु चुनाव जीतने के साथ ही कांग्रेस ने पुनः वही मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अपना लिया। वीर सावरकर की भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। कांग्रेसी शासन ने मुस्लिम लीग के सम्मुख घुटने टेक कर पाकिस्तान स्वीकार कर लिया।

अगस्त, सन् १९४६ में मुस्लिम लीग ने नौआखाली, कलकत्ता, व अन्य स्थानों पर हिन्दुओं के विरुद्ध 'जिहाद' प्रारम्भ कर दिया। गुंडों ने हिन्दुओं पर अमानवीय अत्याचार किये। हिन्दुओं की सम्पत्ति को फूंक कर राख बनाया जाने लगा। हिन्दू महिलाओं का अपहरण किया गया। उनके साथ बलात्कार किया गया। वीर सावरकर उस समय अस्वस्थ थे, किन्तु फिर भी उन्होंने बंगाल व नौआखाली में हिन्दुओं पर हुए अत्याचार का समाचार सुना तो उनका हृदय काँप उठा। उन्होंने रुग्ण शैया से एक वक्तव्य देते हुए कहा—"हिन्दुओं को इन अत्याचारों का दृढ़ता से प्रतिकार करना चाहिये। 'अहिंसा' व 'सहिष्णुता' जैसी मूर्खतापूर्ण नीति को त्यागकर, गुंडों को उन्हीं की भाषा में जब तक उत्तर न मिलेगा वे बाज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न आयेंगे।"

हिन्दुओं ने जब मुस्लिम लीगी गुंडों के आक्रमणों का प्रतिकार किया तब जाकर वे शान्त हुए।

जिस समय तीन जून, १९४७ को भारत-विभाजन की घोषणा करते हुए श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा—"भारत में विद्यमान हिन्दू और मुस्लिम समस्या को सदैव के लिये समाधान करने हेतु ही हम भारत का विभाजन स्वीकार कर रहे हैं," उस समय वीर सावरकर ने स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की थी—"हिन्दू-मुस्लिम समस्या के समाधान के रूप में देश को खण्ड-खण्ड करने वालों को मैं चेतावनी देता हूँ कि देश के बटवारे से यह समस्या सुलझने के स्थान पर और भी अधिक उलझ जायेगी। पाकिस्तान की स्थापना होते ही यह समस्या और भी तीव्र रूप धारण कर लेगी।"

वीर सावरकर की यह भविष्यवाणी अक्षरश: सत्य सिद्ध हुई।

१५ अगस्त, १९४७ को भारत के खंड-खंड, टुकड़े-टुकड़े करके पाकिस्तान बना दिया गया। बंगाल, नौआखाली, लाहौर, सिंध, मुलतान, झंग आदि में लाखों हिन्दुओं को मौत के घाट उतार डाला गया, हिन्दू ललनाओं को बिल्कुल नंगी करके बीच बाजार में नर-पिशाचों ने जुलूस निकाले। लाखों हिन्दुओं को भागकर शरणार्थी के रूप में दर-दर का भिखारी बनना पड़ा।

अखण्ड भारत के स्वप्नद्रष्टा, महान् देशभक्त वीर सावरकर ने मातृभूमि के अंग-भंग, खण्ड-खण्ड, टुकड़े-टुकड़े होते देखे तो उनका हिन्दू हृदय चीत्कार कर उठा। उन्होंने आंखों से अश्रु बहाते हुए कहा—"यह भयंकर दुष्परिणाम कांग्रेस की कायर व तुष्टि-करण की आत्मघाती नीति का ही कुफल है। यदि हिन्दू कांग्रेस के 'अहिंसा' व 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई' के भ्रामक नारों में न फँसते तो भारत अखण्ड रूप में ही स्वाधीन होता। मातृभूमि के खण्ड-खण्ड करने की माँग रखने वालों के षड्यन्त्र को ही खण्ड-खण्ड कर दिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाता।"

काश ! हिन्दू समाज वीर सावरकर की वर्षों पूर्व की गई चेतावनीमय भविष्यवाणी पर ध्यान देकर इन 'अहिंसा' के पुजारी नेताओं के भ्रामक नारों से सावधान हो गया होता तो भारत माता के अंग-भंग न होते। किन्तु देश का दुर्भाग्य था कि हिन्दू समाज ने अपने-पराये की पहचान न की तथा यह गलत मार्ग का ही अनुसरण करता रहा।

लालकिले में बन्दी

महात्मा गांधी 'हिन्दू-मुस्लिम एकता' के अपने स्वप्न को पूरा करने के लिये मुसलमानों का पक्ष लेते रहे। जब नौआखाली, मुलतान, झंग आदि में मुस्लिम गुण्डों ने हिंदू ललनाओं को बिल्कुल नंगा करके, उनके जुलूस निकाले, सड़कों पर बलात्कार किया तो हिन्दुओं ने भी कुछ स्थानों पर मुस्लिम गुण्डागर्दी का प्रतिकार किया। गांधी जी बराबर हिन्दुओं की ही आलोचना करते रहे। मुसलमानों को उन्होंने एक बार भी दोषी नहीं बताया।

इसी बीच गांधीजी ने पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपया दिलाने के लिये दिल्ली में आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। उनके आमरण अनशन ने पाकिस्तान से भागकर आये, दर-दर के भिखारी बने हिन्दुओं के घावों पर नमक छिड़कने का काम किया। पाकिस्तान के अत्याचारों से त्रस्त हिन्दुओं ने जब 'महात्मा जी' को, अत्याचारी पाकिस्तानियों को ५५ करोड़ रुपया दिलाने के 'पुनीत' कार्य के लिये आमरण अनशन करते देखा, तो उनमें क्षोभ की लहर दौड़ गयी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अचानक ३० जनवरी, सन् १६४८ को दिल्ली की प्रार्थना सभा में महाराष्ट्र हिन्दू महासभा के एक प्रमुख कार्यकर्ता व साप्ताहिक 'अग्रणी' पत्र के सम्पादक नाथूराम गोडसे ने गांधीजी पर गोली चलाकर उनकी हत्या कर दी।

कांग्रेसी शासन ने हिन्दू महासभा व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का प्रभाव समाप्त करने के लिये हिन्दू सभा व संघ के नेताओं व कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारियाँ प्रारंभ कर दीं। वीर सावरकर पर गांधी हत्याकाण्ड की प्रेरणा देने का झूठा आरोप लगाकर, उनको बन्दी बना लिया गया। बम्बई में अहिंसावादी कांग्रेसी नेताओं ने स्वाधीनता संग्राम के जन्मजात योद्धा वीर सावरकर के मकान पर हिंसात्मक आक्रमण भी किया।

वीर सावरकर को नाथूराम गोडसे, आप्टे, करकरे, डा० परचुरे मदनलाल पाहवा, गोपाल गोडसे आदि अभियुक्तों के साथ लालकिले में बन्दी कर दिया गया। न्यायालय में उन पर गांधी हत्याकाण्ड की प्रेरणा देने के आरोप में एक वर्ष तक मुकदमा चला।

कांग्रेसी शासन द्वारा वीर सावरकर को गांधी हत्याकाण्ड में फँसाये जाने से समस्त देश की हिन्दू जनता में चिन्ता व रोष व्याप्त हो गया। हिन्दू जनता ने लगभग एक लाख रुपया 'सावरकर बचाव फण्ड' के लिये दिया।

एक वर्ष एक मुकदमा चलाये जाने के बाद न्यायाधीश श्री आत्माचरण ने फरवरी, १६४६ में वीर सावरकर को ससम्मान आरोप मुक्त कर दिया। समस्त देश में उनके रिहा होने के समाचार से भारी प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। स्थान-स्थान पर सभाएँ करके खुशी मनायी गयी।

वीर सावरकर जी लालकिले के चक्रव्यूह से मुक्त होते ही सीधे कलकत्ता में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अधिवेशन में पहुँचे। लगभग दो लाख व्यक्तियों ने उनका भव्य स्वागत किया। समस्त कलकत्ता नगर 'स्वातंत्र्य वीर सावरकर की जय' के उद्घोषों से गूंज उठा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंचम परिच्छेद

गांधी हत्या-काण्ड से आरोप-मुक्त होने के बाद वीर सावरकर अस्वस्थ रहने लगे। अस्वस्थ अवस्था में भी वह अपने वक्तव्यों द्वारा देश को हिन्दुत्व की प्रेरणा देते रहे। नेहरू-लियाकतअली समझौता हुआ तो वीर सावरकर ने इस समझौते को व्यर्थ का नाटक बताते हुए उसकी आलोचना की। नेहरू-लियाकतअली समझौते के समय कांग्रेसी शासन ने वीर सावरकर व अन्य हिन्दू महासभाई नेताओं व कार्यकर्ताओं को बन्दी बना लिया। कुछ दिनों बाद वे कारागृह से मुक्त कर दिए गए।

अभिनव भारत समापन समारोह

१० मई, सन् १९५२ को पूना में क्रान्तिकारियों की प्रख्यात संस्था 'अभिनव भारत' का समापन समारोह हुआ। उस समारोह देश-भर के सैकड़ों क्रान्तिकारियों ने भाग लिया। वीर सावरकर ने लाखों व्यक्तियों को सम्बोधित करते हुए अपने ओजस्वी भाषण में कहा—

"स्वतन्त्रता प्राप्त हुई नहीं, स्वतन्त्रता को बड़े-बड़े बलिदान देकर प्राप्त किया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्त हुई कहना बिल्कुल गलत है।"

वीर सावरकर इस ऐतिहासिक समारोह में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी ज्ञात-अज्ञात योद्धाओं को श्रद्धांजलि अर्पित कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही रहे थे कि भारत विभाजन का स्मरण आते ही उनका हृदय रो पड़ा। उन्होंने जब अपनी प्यारी सिन्धु नदी का स्मरण किया तो वह फूट-फूटकर रो पड़े। उन्होंने कहा—

"ऐ सिन्धु ! मुक्त करेगी तुझे महाराष्ट्र की रक्त बिन्दु।

"आज तीन चौथाई भारत स्वतन्त्र हुआ है, मुक्त हुआ है। परन्तु मेरी सिन्धु नदी, तथा सिन्ध प्रांत छीन लिये गए। हम अपनी सिन्धु को भूल नहीं सकते। सम्पूर्ण विश्व का द्वेष मोल लेकर भी हम अपनी सिन्धु से सम्बन्ध-विच्छेद सहन न करेंगे।

"सिन्धु रहित बिन्दु, अर्थ रहित शब्द, निष्प्राण देह, यह सब असंभव है, व्यर्थ है। ऐ सिन्धु नदी ! महाराष्ट्र तो एक अर्से से तेरे अमिट प्यार में पागल बना बैठा है। एक काल था जब तू हमसे दूर चली गई थी, बिछुड़ गई थी। तब परतंत्रता के बन्दीवास से तुझे मुक्त करने के लिए महाराष्ट्र की चतुरंग सेना उत्तर दिशा पर चढ़ आई थी। उत्तर दिग्विजय प्राप्त करने के लिए बाजीराव नर्मदा पार कर चंबल तक जा पहुंचा था। वह दिल्ली पर भी चढ़ बैठा। हमारे जयिष्णु घोड़ों ने मां जमुना का जल पिया था, गंगा का पावन-पवित्र पय प्राशन किया था, जिसके बल पर वह आगे बढ़ पाए थे। वे सतलुज पार कर गए, जेहलम तर गए, म्लेच्छों को पदाक्रान्त करके वे अटक पार पहुँचे और वहाँ भगवा हिन्दू ध्वज लहरा दिया। तेरे तीर पर, तेरा पावन पवित्र पय आकंठ प्राशन करने पर ही उनकी विजय तृष्णा क्षण भर शान्त हुई।

'ऐ सिन्धु ! मां सुरसेविनी सिन्धु ! तेरे ही पवित्र तट पर हमारे प्राचीनतम वैदिक महर्षियों ने वेदों की प्रथम ऋचाओं का साम-गायन किया था। जिसके पुण्य सलिल से हमने संध्यावन्दन की, अर्घ्य दिया और जिसे असीम आदर से देवताओं में स्थान दिया,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस पर सुन्दर-सुन्दर काव्य सुमनों की अंजलि अर्पण की, ऐसी पुण्यसलिला माँ सिन्धु ! तुझे हम कैसे भुला दें ? तुझे अन्य जन भले ही भुला दें किन्तु, यह महाराष्ट्र, अकेला महाराष्ट्र, फिर एक बार उठकर तुझे पुनः विमुक्त करके ही रहेगा। इससे मैं कहता हूँ—

"ऐ सिन्धु ! मुक्त करेगी तुझे महाराष्ट्र की रक्त-बिन्दु।"

वीर सावरकर द्वारा सिन्धु नदी का आह्वान, स्मरण किए जाने पर श्रोता भी फूट-फूटकर रो पड़े थे। उस समय क्रान्तिकारियों ने भारत को पुनः अखण्ड कराने के लिए संघर्षरत रहने की शपथ ग्रहण की थी।

राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दू का सैनिकीकरण करो

सन् १६५५ में जोधपुर में अ० भा० हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ तो वीर सावरकर अस्वस्थ होते हुए भी हिन्दू राष्ट्र को अपनी ओजस्वी वाणी का पुनः रसास्वादन कराने अधिवेशन में सम्मिलित हुए। अधिवेशन में उन्होंने अपना 'राजनीति का हिन्दूकरण—और हिन्दू का सैनिकीकरण करो' महान मन्त्र दोहराते हुए सिंहगर्जना की—

"जब तक देश की राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दू का सैनिकीकरण न किया जाएगा तब तक भारत की स्वाधीनता, उसकी सीमायें, उसकी सभ्यता व सुरक्षित कदापि न रह सकेगी। मेरी तो हिन्दू युवकों से यही प्रार्थना है, आदेश है कि वे अधिकाधिक संख्या में सेना में भर्ती होकर शस्त्र-विद्या का ज्ञान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त करें जिससे कि समय पड़ने पर अपनी स्वाधीनता की रक्षा में योग दे सकें।"

सत्याग्रह नहीं शस्त्राग्रह

गोआ को पुर्तगाली साम्राज्यवादियों की पराधीनता से मुक्त कराने का सबसे पहले उद्घोष वीर सावरकर ने ही किया था। उन्होंने अहमदाबाद अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण में कहा था—

"हम हिन्दुस्तान की पूर्ण स्वाधीनता चाहते हैं। 'फ्रेंच हिन्दुस्तान', 'पोर्तुगीज हिन्दुस्तान' इन नामों का उच्चारण भी हमारे कानों के लिए असह्य एवं हमारी मूर्खता का प्रतीक है। इस कृत्रिम और बलात किए हुए राजकीय विभाजन को हमें पूरी तरह से समाप्त करके अखण्ड हिन्दुस्तान बनाने की शपथ लेनी चाहिए। हम हिन्दुओं को दृढ़ता के साथ घोषित करना चाहिए कि कश्मीर से रामेश्वरम् तक एवं सिन्धु से आसाम तक अखण्ड, एक संयुक्त एवं अभिन्न हिन्दुस्तान ही हमें मान्य होगा। हमें गोआ, पांडिचेरी आदि को पुर्तगाली दासता से मुक्त कराने के लिए भी संघर्ष करना होगा।"

सन् १९५५ में जब गोआ-मुक्ति आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो समस्त देश के सत्याग्रही जत्थे गोआ की ओर बढ़ने लगे। मेरठ हिन्दू महासभा का एक जत्था जब गोआ जाते समय मार्ग में बम्बई रुककर वीर सावरकर जी से आशीर्वाद लेने पहुँचा तो उन्होंने जत्थे के उपनेता और दैनिक 'प्रभात' (मेरठ) के संपादक श्री विनोद जी से कहा—

"आप क्रांति भूमि मेरठ से इतनी दूर गोआ को मुक्त कराने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की अभिलाषा से गोलियाँ खाने, बलिदान देने आए हो, यह आप लोगों की देशभक्ति का परिचायक है। किन्तु सशस्त्र पुर्तगाली दानवों के सम्मुख आप निःशस्त्र, खाली हाथ, मरने को जाओ, यह नीति न मैंने कभी ठीक समझी, न अब ठीक समझता हूँ। जब आप लोगों के हृदय में बलिदान देने की महान् भावना है तो आप लोग हाथों में राइफलें लेकर क्यों नहीं जाते ? शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर जाओ और दुश्मन को मार कर मर जाओ।"

सावरकर जी ने फिर कुछ देर तक रुककर उनसे कहा—"गोआ की मुक्ति का काम तो सरकार को सेना को सौंप देना चाहिए। सशस्त्र सैन्य कार्यवाही से ही गोआ मुक्त होगा। सत्याग्रह के स्थान पर शस्त्राग्रह से ही सफलता मिलेगी।"

वीर सावरकर की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। सन् १९६१ में गोआ को सशस्त्र कार्यवाही से ही मुक्त किया जा सका। गोआ की मुक्ति का समाचार सुनकर वीर सावरकर का हृदय प्रफुल्लित हो उठा। उन्होंने अपने निवास-स्थान पर इस विजयोत्सव की खुशी में भगवाध्वज फहराया।

'बुद्ध' कि 'युद्ध' ?

१० मई, १९५७ को १८५७ के स्वातन्त्र्य-समर की शताब्दी दिल्ली में बड़े समारोहपूर्वक मनाई गई। वीर सावरकर अस्वस्थ होते हुए भी इस ऐतिहासिक समारोह में भाग लेने दिल्ली पधारे थे। दिल्ली में उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया।

रामलीला मैदान में आयोजित एक विराट सभा में उन्होंने सिंहगर्जना करते हुए कहा—"हमारे सम्मुख दो आदर्श हैं। एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदर्श है बुद्ध का, दूसरा है युद्ध का। हमें बुद्ध या युद्ध में से एक को अपनाना होगा। यह हमारी दूरदर्शिता पर निर्भर है कि हम बुद्ध की आत्मघाती नीति को अपनायें या युद्ध की विजय-प्रदायिनी वीर नीति को।"

११ मई, १९५७ को दिल्ली में वीर सावरकर ने देश के विभिन्न भागों से आए हुए हिन्दू सभाई कार्यकर्ताओं को जलपान पर बुलाकर कहा—"आप लोग धन्यवाद के पात्र हैं कि जो आज की विषम व विपरीत परिस्थितियों में भी हिन्दू ध्वज के नीचे डटे हुए खड़े हैं। गत २० वर्षों में जिन्होंने मुझे नेता मानकर, अपमान और दरिद्रता को सहकर भी हिन्दू समाज को बलवान बनाने के हेतु कष्ट उठाए, उन्हें मैं कुछ भी नहीं दे सका। अपना सबकुछ बलिदान करके भी आप मेरे साथ हैं। आपकी दृढ़ता, अडिगता व सिद्धान्त-निष्ठा देखकर मैं प्रसन्न हूँ। इस हिन्दू ध्वज को कन्धे पर रखकर आगे बढ़िए। मैं जानता हूँ कि यह संघर्ष आसान नहीं है। लेकिन मैं पूर्ण आशावादी हूँ, निराशावादी नहीं। आप लोग पूर्ण आशा व विश्वास के साथ आगे बढ़ियेगा। अन्तिम विजय हमारी है। मैं केवल यह चाहता हूँ कि आप में से प्रत्येक व्यक्ति केवल एक बात का चिन्तन करता रहे कि—"मैं यदि अकेला रहूँगा तब भी अपने 'अखण्ड हिन्दूराष्ट्र' की पुनर्स्थापना के लिए आखिर तक संघर्षरत रहूँगा।"

मृत्युंजय समारोह

१४ जनवरी, सन् १९६१ को पूना में सर्वदलीय समिति की ओर से 'स्वातन्त्र्यवीर सावरकर मृत्युंजय समारोह' बड़ी धूमधाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से मनाया गया। वयोवृद्ध नरकेसरी स्वातन्त्र्यवीर का हार्दिक व भव्य स्वागत प्रायः सभी संस्थाओं के नेताओं ने किया। क्रांतिवीर सेनापति बापट की अध्यक्षता में स्वागत समारोह सम्पन्न हुआ।

समाजवादी नेता श्री एम. एम. जोशी, श्री लोकमान्य तिलक के पौत्र श्री जयंतराव तिलक एम. एल. ए., सेनापति बापट, श्री भाऊराव मोडक, श्री ग. वि. केतकर आदि नेताओं ने वीर सावरकर की प्रशस्ति में भाषण देते हुए उन्हें स्वाधीनता संग्राम का अजेय व पराक्रमी सेनानी बताया।

चीन के आक्रमण का आघात

वीर सावरकर का स्वास्थ्य दिनों-दिन गिरता ही गया। अस्वस्थ अवस्था में भी वह प्रतिदिन राष्ट्र की सामजिक समस्याओं पर गहन चिंतन करते रहे। साहित्य का अध्ययन एवं लेखन-कार्य उनका किंचित् भी बन्द न हो पाया।

अक्तूबर, सन् १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो वीर सावरकर के हृदय को भारी आघात लगा। 'सावरकर सदन' (बम्बई) की एक कोठरी में उपेक्षित पड़े वयोवृद्ध क्रान्तिवीर अपने राष्ट्र पर विदेशियों का आक्रमण देखकर कराह उठे। उन्होंने भारी हृदय से कहा "काश ! 'अहिंसा', 'पंचशील' व 'विश्वशान्ति' के भ्रम में फँसे ये शासनाधिकारी मेरे सुझाव को मानकर सबसे पहले राष्ट्र का सैनिकीकरण कर देते तो आज हमारी वीर व पराक्रमी सेना चीनियों को पीकिंग तक खदेड़ कर, उनका मद चूर-चूर कर डालती। किन्तु अहिंसा व विश्वशान्ति की काल्पनिक उड़ान भरने वाले ये 'महापुरुष' न जाने कब तक देश के सम्मान का, अहिंसा की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कसौटी पर कसकर परीक्षण करते रहेंगे ?"

सावरकर जी ने चीन के आक्रमण के बाद पुनः एक वक्तव्य द्वारा राष्ट्र का सैनिकीकरण किए जाने का जोरदार सुझाव दिया। उन्होंने कांग्रेसी नेताओं की 'अणुबम कदापि न बनायेंगे' की घोषणा को मूर्खतापूर्ण व आत्मघाती बताते हुए कहा—"भारत के शासनाधिकारियों को यह अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए कि आज के युग में 'जिसकी सेना (शक्ति) उसका राज्य सुरक्षित है' का सिद्धान्त ही व्यावहारिक है। यदि हमारे शत्रु चीन के पास अणुबम है, हाइड्रोजन बम है, तो हमें उसके मुकाबले के लिए उससे भी अधिक शक्तिशाली बमों के निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहना ही चाहिए। 'हम अणुबम कदापि न बनायेंगे' की घोषणा मूर्खता व कायरपन का ही परिचायक है।"

चीन के आक्रमण के बाद जब प्रच्छन्न कम्युनिस्ट श्री कृष्ण मेनन को रक्षा मन्त्री के पद से हटाकर श्री यशवन्तराय चह्वाण को रक्षामन्त्री नियुक्त किया गया तो वीर सावरकर ने श्री चह्वाण को बधाई व आशीर्वाद भेजते हुए कहा—

"आप वीर भूमि महाराष्ट्र के निवासी हैं, अतः मुझे विश्वास है कि आपके दृढ़ नेतृत्व में हमारा रक्षा विभाग अविलम्ब शक्तिशाली व दृढ़ नीति अपनाकर, राष्ट्र की स्वाधीनता की रक्षा में पूर्ण समर्थ होगा ?"

चीन के आक्रमण के बाद जब भारत सरकार ने सेना बढ़ाने की घोषणा की, सैन्य-सामग्री बनाने के कारखाने प्रारम्भ किए तो वीर सावरकर को प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा—"कम-से-कम २५ लाख सैनिकों की नियमित सेना बनाओ और उसे आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से लैस करो।" उन्होंने देश के प्रत्येक युवक को भी आवश्यक सैनिक-शिक्षा दिए जाने का सुझाव दिया।

सन् १९६५ में पाकिस्तान ने कच्छ पर आक्रमण किया तो भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीर सावरकर के हृदय को भारी दुःख हुआ। रोग शैया पर पड़े-पड़े ही वह कच्छ पर हुए आक्रमण से आँसू बहाते रहे। कांग्रेसी शासन की पाक तुष्टीकरण की नीति पर विचार करके उनका हृदय दुखित होता रहा। कांग्रेसी शासन ने कच्छ के प्रश्न पर पाकिस्तान से समझौता किया तो वीर सावरकर ने रोग शैया से ही 'कच्छ समझौते' को 'पाकिस्तान के सामने पुनः आत्मसमर्पण' करना बताया।

लाहौर पर आक्रमण से प्रसन्न

अगस्त, १९६५ में कश्मीर को पाकिस्तान द्वारा हड़पने का षड्-यन्त्र पकड़ा गया और प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने समय पर ही सावधान होकर, कश्मीर से लेकर कच्छ तक भारतीय सेना को आगे बढ़ने का जो आदेश दिया तो समाचार सुनते ही रोग शैया पर पड़े वयोवृद्ध सावरकर जी के चेहरे पर प्रसन्नता व उल्लास की आभा दौड़ गई। दूसरे दिन भारतीय सेना के रणबांकुरों द्वारा लाहौर की तरफ कूच करने का समाचार सुनते ही वीर सावरकर आनन्द विभोर हो उठे। वे भीषण बीमारी में भी भारतीय सेना के वीर रणबांकुरों द्वारा पाकिस्तानी सेना को डोगराई, कारगिल, हाजीपीर दर्रे से पीछे खदेड़ने, पाक के पैटन टैंकों के धुर्रे उड़ाने, पाक विमानों को चूर-चूर करने के समाचार पढ़कर भारी प्रसन्नता के साथ उल्लसित हो उठते। अपनी शैया के पास दीवार पर लटके भारत के नक्शे पर अंगुली रखकर कहते—"इस जगह शत्रु हमारे जाल में घिर जायेगा। तनिक तेजी से यदि हमारी विजयवाहिनी सेना बढ़ी और बस एक बार लाहौर हाथ में आ गया, तो फिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रावलपिंडी क्या, काबुल तक हम मंजिल मार सकते हैं।" भारतीय सेना की सफलता के समाचार से अखण्ड भारत के स्वप्नद्रष्टा के हृदय में अपना अखण्ड भारत का स्वप्न साकार होने की आशा की किरण छिटक पड़ी। उनकी बीमारी शरीर से भाग खड़ी हुई। उन्हें लगा कि उनकी 'मेरी अन्त्येष्टि सिन्धु नदी के पवित्र तट पर हो' आकांक्षा भी पूर्ण होगी। एकाएक कांग्रेसी नेता वीर मार्ग को त्याग-कर अपने प्रेरणास्रोत गांधी जी के मार्ग पर चल पड़े। रूस के कूटनीतिक दबाव में फँसकर, विजय ध्वज लिए, शत्रुओं को रौंदती हुई विजयवाहिनी सेना को युद्ध विराम का आदेश दे दिया गया। रणबांकुरों के बढ़ते हुए कदमों के रुकने के साथ-साथ वीर सावर-कर की प्रसन्नता, उत्साह चकनाचूर हो गया। ताशकन्द समझौते से पूर्व ही उन्होंने मुर्झाये हुए चेहरे से गम्भीर व चिन्तित होकर कहा—

"हजारों हिन्दू युवकों ने अपना बलिदान देकर जो विजयश्री प्राप्त की, उसे ये गांधीवादी नेता गँवा देंगे, अब इनसे किंचित् भी आशा करना व्यर्थ ही है।" उसी दिन से वीर सावरकर का हृदय घोर निराशा व उदासीनता से भर गया और ताशकन्द समझौते के उस भारी आघात ने अन्त में उन्हें हमसे छीनकर ही छोड़ा।

मृत्यु को आत्म-समर्पण

ताशकन्द समझौते ने वीर सावरकर की समस्त आशाओं पर ही पानी फेर दिया। उन्होंने घोर निराशा से घिर कर मृत्यु के सम्मुख आत्म-समर्पण कर दिया। उन्होंने दवा लेना बिलकुल बन्द

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर दिया।

उनके पुत्र श्री बिश्वास सावरकर, भतीजे श्री विक्रम सावरकर एवं निजी सचिव श्री बाल सावरकर ने डाक्टर से कहकर दवा चाय में मिलाकर दिलवाई, किन्तु न जाने कैसे उन्हें आभास हो गया और उन्होंने कहा—"चाय में दवा देते हो तो चाय भी नहीं पिऊंगा। मैं अब जिन्दा रहना नहीं चाहता। क्या करना है अब मुझे जीवित रहकर? जो मेरा कर्त्तव्य था, उसे निभा चुका।"

एक दिन अपने निजी चिकित्सक डा० साठे से उन्होंने कहा—"साठे, अब औषधोपचार की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम मेरे परम स्नेही और मेरे चिकित्सक रहे हो। आज तक मैं तुम्हारी सब बातें मानता आया हूं, अब तुम मेरी अन्तिम बात मान लो। मुझे कोई ऐसी दवा दो कि जिसके बाद मुझे फिर न बोलना पड़े।"

डा० साठे ने वयोवृद्ध स्वातन्त्र्यवीर के उपर्युक्त शब्द सुने तो उनका हृदय भर आया।

शंकराचार्य को प्रणाम

द्वारकाशारदापीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी अभिनवसच्चिदानन्द तीर्थ ने संदेश भेजा कि वे स्वातन्त्र्यवीर को देखने के लिए 'सावरकर सदन' आना चाहते हैं। सावरकर जी ने पत्र पढ़वाया तो तुरन्त उत्तर लिखवाया—"वस्तुतः तो मुझे ही आपके दर्शनार्थ आपके पास आना चाहिए था, पर अब यह सम्भव नहीं है, अतः क्षमा प्रार्थी हूं।" तो शंकराचार्य जी ने लिखा—"नियम के अपवाद भी होते हैं।" इस पर फिर वीर सावरकर ने लिखवाया—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"आप पधारिये, पर आपका उचित स्वागत हम लोगों से कैसे होगा ?" सावरकर जी ने तुरन्त अपने निजी सचिव श्री बाल सावरकर व श्री अप्पा कासार को पास बुलाकर कहा—"शंकराचार्य जी महाराज के लिए फूल-मालाएँ तैयार करो और उनका योग्य स्वागत किया जाना चाहिए तथा उनके चरणों में मेरा सादर प्रणाम कह देना।"

मृत्यु से दो दिन पूर्व भी सावरकर जी के हृदय में अपने धर्माचार्य के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा थी !

ज्योतिपुंज बुझ गया

२६ फरवरी, १९६६ को उनकी स्थिति और भी अधिक गंभीर हो गई। डाक्टरों ने आक्सीजन दी, इंजैक्शन दिए, किन्तु सब बेकार। दोपहर के लगभग ११ बजे स्वातन्त्र्य वीर माँ के चरणों में लीन हो गए। हिन्दू राष्ट्र का ज्योतिपुंज बुझ गया। समस्त हिन्दू राष्ट्र शोकग्रस्त हो उठा। समस्त देश में शोक की लहर दौड़ गयी।

वीर सावरकर कह गये थे—'मेरे निधन पर हड़ताल करके, काम-काज बन्द करके राष्ट्रीय हानि न की जाये।' कितनी उत्कट भावना थी राष्ट्रीय हित की उनके हृदय में ?

२७ फरवरी को सायंकाल उनकी शवयात्रा निकाली गई। हिंदू महासभा के कृपाणकुंडलीनी अंकित भगवाध्वज में उनके पार्थिव शरीर को लपेटकर मोटरगाड़ी में रखा गया। लाखों व्यक्तियों ने अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की अपने स्वाधीनता संग्राम के जन्मजात योद्धा को, वज्रपुरुष को, शक्तिपुत्र को। और देखते-ही-देखते वीर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरुष का वज्र शरीर बिजली की चिता में जलकर भस्मीभूत हो गया। लकड़ियों की चिता में भला उन वज्र से निर्मित अस्थियों को भस्मीभूत करने की सामर्थ्य कहां थी!

वीर सावरकर को यद्यपि अपने कट्टर हिन्दुत्वनिष्ठ विचारों के कारण कांग्रेसी शासन की उपेक्षा अन्तिम समय तक सहन करनी पड़ी, किन्तु भविष्य में भारत का इतिहास वीर सावरकर को इस युग का सर्वोत्कृष्ट देशभक्त, क्रांतिकारियों के मुकुटमणि, हिन्दूराष्ट्र के महान स्वप्नद्रष्टा एवं त्याग और बलिदान की साकार प्रतिमा के रूप में अवश्य प्रदर्शित करेगा। 'सावरकर' किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर त्याग, तपस्या, तत्त्वनिष्ठा, लोकोत्तर धैर्य, अदम्य विश्वास, अद्वितीय प्रज्ञा, अभिजात प्रतिभा, स्वातन्त्र्य-प्रेम का पर्यायवाची है। 'सावरकर' उस कौस्तुभ मणि का नाम है जिसके महाकवि, साहित्यकार, तत्त्वज्ञ, क्रांतिकारी, स्वातन्त्र्य वीर आदि अनेक तेजोमय पहलू हैं और जिसके प्रकाश को कांग्रेसी शासन की अपेक्षा नीति तो क्या लोह का आवरण भी दबाये रखने की क्षमता नहीं रखता। 'सावरकर' भारत के इतिहास में 'तेजस्वी हिन्दूराष्ट्र पुरुष' के रूप में युगोंयुगों तक अमर रहेंगे।

अन्तिम वसीयत

वीर सावरकर ने मृत्यु से पूर्व 'मृत्युपत्र' (वसीयत) लिखा। अपने मृत्युपत्र में उन्होंने स्पष्ट लिखा, 'मेरे श्राद्ध का धन बचाकर हिन्दू धार्मिक संस्थाओं को दान में दिया जाये।' इतना ही नहीं उन्होंने अपनी वसीयत में यह भी घोषणा की—"मैं अपने निजी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोष से ५ हजार रुपये शुद्धि आन्दोलन के लिए भेंट करता हूं। हिन्दुओं को शुद्धि आन्दोलन को सुचारू रूप से चलाते रहना चाहिए।"

उनकी उपर्युक्त अन्तिम इच्छा से यह स्पष्ट हो जाता है कि वीर सावरकर अन्तिम समय तक हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन किये जाने से चिन्तित रहे और उन्होंने स्पष्ट रूप से हिन्दुओं को शुद्धि आन्दोलन चलाने की प्रेरणा दी। वीर सावरकर ने सदैव "धर्मान्तर याने राष्ट्रान्तर' का उद्‌घोष देकर हिन्दुओं को चेतावनी दी कि यदि भारत में मुसलमान ईसाइयों की संख्या बढ़ गयी तो विदेशी तत्त्वों को भारत को पुनः अपने शिकंजे में जकड़ने का अवसर प्राप्त हो जायेगा।

वीर सावरकर एक क्षण के लिये भी देश के उत्पादन एवं दैनिक व्यवस्था में बाधा पड़ते देखना नहीं चाहते थे। इसीलिए उन्होंने अन्तिम व्यवस्था में स्पष्ट लिखा, "मेरी मृत्यु पर न हड़ताल की जाये, न किसी भी कार्यक्रम में बाधा डाली जाये, जिससे देश की हानि होती हो।" वह तथाकथित देशभक्त नेताओं की मृत्यु पर होने वाली शोक के नाम पर दैनिक जीवन को अस्तव्यस्त करने की परम्परा के कड़े विरोधी थे। वह अपने नाम पर, अपनी मृत्यु के उपलक्ष्य में एक क्षण के लिये भी राष्ट्रीय हानि को पसन्द नहीं करते थे। उनकी अन्तिम वसीयत भी देशभक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत थी।

वीर सावरकर को देश पर सर्वस्व निछावर करने के पश्चात् दृढ़ आत्मविश्वास था कि उन्होंने अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर लिया। उन्होंने मृत्यु को सम्बोधित करते हुए कहा—"मैंने पितृ और मातृ-ऋण को ब्याज सहित बेबाक किया है। इस जीवन पर अब किसी का, किसी भी रूप में ऋण नहीं रहा। ऐ मृत्यु ! अब यह जीवन केवल तुम्हारे लिए ही शेष है। तुम इसे चाहे जब खुशी के साथ ले जाओ।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्होंने दृढ़ विश्वास के साथ लिखा—

"मेरा वंश सम्पूर्ण मानव-जाति की सेवा में खेत रहा है। मैंने अपने संकल्प के अनुसार प्रत्येक दिवस के कार्य को किये बिना सूर्य को अस्त न होने दिया। अपने समस्त कर्त्तव्यों की पूर्ति की चेष्टा मैंने भरसक की है। अपने कृतकार्यों से मेरा जीवन सम्पन्न बना है। धार्मिक, सामाजिक, वांशिक कर्त्तव्यों का पालन मैंने किया है। मृत्यु के पश्चात् होने वाली अवस्था में सुयोग निवास पाने के लिये मैंने अपने कर्मों से ही अग्रिम किराया दे रखा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं अपने कर्मों के बल पर एक अच्छी-सी कोठी प्राप्त करूँगा।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमर सेनानी सावरकर

सामयिक चेतावनियां व महत्त्वपूर्ण विचार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेरूबाड़ी का दान न हुआ होता ।

वीर सावरकर ने पूना में १४ जनवरी, १९६१ को लक्ष-लक्ष श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा—

"हम स्वतन्त्र हो गए किन्तु देश मुर्झा गया प्रतीत होता है। प्रश्न यह है कि यह मुर्झाहट कौन लाया ? स्वतन्त्र होने पर वह कैसे आई ?"

"उदगीर का युद्ध जीतने वाले यशस्वी हिन्दू सेनापति भाऊ साहब पेशवा समाप्त हुए और अंग्रेज भी चले गए, फिर भी भाग्य-नगर (हैदराबाद) का निजाम जीवित था, समाप्त नहीं हुआ था। स्वर्गीय सरदार पटेल जैसा लौहपुरुष मैदान में आया और उसने निजाम को सत्ता से नीचे गिरा दिया। जवाहरलाल नेहरू हृदय से निजाम को काटने के लिए तैयार नहीं थे, किन्तु सरदार पटेल ने दृढ़ता के साथ यह पुनीत कार्य कर डाला ? उस समय ऐसी निराशा व मुर्झाहट न थी, प्रसन्नता की लहर व्याप्त थी। फिर आज ही जवाहरलाल नेहरू द्वारा बेरूबाड़ी का पाकिस्तान को 'दान' करने पर यह मुर्झाहट कहाँ से आई ? स्वर्गीय पटेल होते तो बेरूबाड़ी का 'दान' न होने देते, मुर्झाहट को पास न फटकने देते। निजाम को विषैला नाग समझकर सरदार पटेल ने सत्ता से तो हटा दिया, किन्तु फिर भी उसका फन पूरी तरह से नहीं कुचला जा सका। यदि भविष्य में अयूब खाँ जैसे शत्रु ने भारत पर हमला किया तो निजाम मौका पाते ही फुंकार कर अवश्य उठ खड़ा होगा और दुश्मन की मदद करेगा।

"आज हमें कम-से-कम यह सन्तोष फिर भी है कि निजामी राजसत्ता के समान रामपुर व भोपाल के नवाब भी समाप्त हो गए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८०० से १२०० वर्ष तक मुसलमान और अंग्रेजों के स्वाधीन रहे ये भूप्रदेश आज मुक्त हो गए, कम-से-कम यह देखकर तो हृदय संतोष अनुभव करता ही है।"

मुझे उपाधि नहीं चाहिए

वीर सावरकर 'देशभक्ति' के बदले कोटे, परमिट, पद व उपाधियां प्राप्त करने के प्रबल विरोधी रहे। उन्होंने निस्वार्थ देशभक्ति को ही वास्तविक देशभक्ति बताते हुए कहा—

"मुझे शासन ने कोई उपाधि प्रदान नहीं की, मेरा जब्त किया गया मकान वापस नहीं किया, इसलिए कुछ व्यक्ति रुष्ट हैं। किन्तु मुझे कभी किसी उपाधि की अभिलाषा नहीं रही। तीन चतुर्थांश भारत स्वतन्त्र हुआ देखकर ही हम लोगों ने सब कुछ पा लिया। क्रान्ति की उपासना जिस समय 'पागलपन' समझी जाती थी, उस समय उसकी उपासना हम क्रान्तिकारियों ने समर्पण बुद्धि से की। सैकड़ों युवक फांसी पर लटक गए, उन्हें किसी भी चीज की अभिलाषा न थी। वे लोग स्वतन्त्रता आन्दोलन के वास्तविक व महान् सैनिक थे। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् मुझे कोई मन्त्री बनायेगा, कोटा-परमिट व जागीर देगा, यह कल्पना तक उनके मनों में नहीं आई। जीवित रहकर स्वाधीनता का उपभोग करने की अभिलाषा भी उन्हें न थी। तुलना की जाय, तो कहना पड़ेगा कि वे निरे देशभक्त थे, आजादी की नींव के वास्तविक पत्थर थे। उस समय उनके हृदय में यही अभिलाषा थी कि मैं मरूंगा और पीछे से विजयध्वज लिए आ रही सेना का मार्ग निष्कंटक करूंगा। केवल देशभक्ति की भावना के ऐसे मस्तानों से भरे जहाज के जहाज अन्दमान गए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मुझे घानी खींचने का काम देकर तेल निकालने लगाया। मैं मन-ही-मन कहता—'मेरे इन कष्टों का क्या उपयोग ?' मैं तेल निकालता हूं और ये प्रतिनिधि उसे खा जाते हैं। परन्तु नहीं, उस तेल के प्रत्येक बिन्दु से भारत में आग की ज्वालायें धधक उठी थीं। अन्दमान में अनेक फांसी चढ़े, कष्ट सहते रहे, किन्तु अपने पथ से विचलित न हुए। स्वातन्त्र्य-युद्ध में बलिदान होने वाले हुतात्माओं के त्याग के फलस्वरूप ही आज कुछ लोग मन्त्री हो गए, अध्यक्ष हो गए, सत्ता पर अधिकार जमाकर बैठ गये। किन्तु हम तो सन्तुष्ट हैं। हमने पदों, सत्ता व कुर्सियों के स्वार्थ के लिए संघर्ष थोड़े ही किया था ?

"आज राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जितने सुखी हैं, उससे कहीं अधिक सुखी मैं हूं। आज मेरे दर्शन हेतु हजारों हजार लोक 'दर्शन लेकर रहेंगे' ऐसा हठ करते हैं। क्या यह हमारे कार्य की विजय का सूचक नहीं है ? जनता के अनुपम, अगाध प्रेम का मूल्य राजमुकुट एवं सरकारी उपाधियों से कहीं अधिक है।"

वास्तव में वीर सावरकर ने निस्वार्थ व समर्पण बुद्धि की भावना से ही सिर पर कांटों का ताज पहना था। वे 'ए' क्लासों की जेलों में, ६ महीने रहकर मक्खन टोस्ट उड़ाने वाले, विजली के पंखों में मजे उड़ाने वाले 'देशभक्त' नहीं थे। उन्होंने अपनी देशभक्ति को कोटा-परमिटों व पदों के बदले बेचकर कलंकित न होने दिया।

'हमें आक्रामक बनना होगा'

वीर सावरकर ने जब देखा कि चीन व पाकिस्तान हमारी सीमाओं पर आक्रमण की तैयारियां कर रहे हैं और कांग्रेसी शासन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गूंगा-बहरा व अन्धा बना, सब कुछ सहन कर रहा है तो उनका देश-भक्त हृदय कराह उठा। उन्होंने जनवरी, १९६१ में एक वक्तव्य देते हुए कहा—"मैं चिन्तित रहता हूं कि स्वाधीनता तो मिल गई, पर उसका भविष्य क्या होगा ? इस देश की रक्षा कौन और किस तरह करेगा ? आज की नामर्द और रोती सूरत कांग्रेस-सत्ता अपना यह दायित्व किस तरह निभायेगी ? चीन भारत की सीमाओं पर आक्रमण कर रहा था, क्या यह बात पं॰ नेहरू नहीं जानते थे ? चीन ने हमारी सीमा में ४०० मील लम्बे रास्ते और लोह मार्ग बांधे, क्या इसका शासन के गुप्तचर विभाग को पता न था ? किन्तु केवल भय के खातिर उन्होंने इसका उच्चार तक नहीं किया। पहले से ही यदि हमने 'आक्रामक नीति' अपनाई होती तो यह आपत्ति हम पर कदापि न आती। यदि हम स्वतन्त्र होते ही सर्वप्रथम सीमाओं का निश्चय कर 'नो मैन्स लैण्ड' में घुसकर उसे 'हिन्दू मैन्स लैण्ड' बना देते तो यह आपत्ति ही न आ पाती।'

वीर सावरकर अस्वस्थ रहते हुए भी समय-समय पर देश को, देश के राजनीतिक नेताओं को चेतावनी देते रहे, मार्गदर्शन करते रहे, किन्तु सत्ता मद में चूर नेताओं ने उनके सुझावों पर किंचित् भी ध्यान न दिया, जिसका परिणाम १९६२ में चीन के भारी आक्रमण के रूप में सामने आया।

हिन्दू युवकों को प्रेरणा

वीर सावरकर बचपन से ही शस्त्र-विद्या एवं वीर भावना के प्रति आकृष्ट रहे। उन्होंने हजारों युवकों को प्रेरणा देकर सेना में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भर्ती करवाया। चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो उन्होंने पूना की विराट सभा में युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा—

"देश स्वतन्त्र हुआ, किन्तु आगे क्या? यह प्रश्न आज सबके समक्ष खड़ा है। प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा का दायित्व देश के नवयुवकों पर है। देश के और विशेषकर महाराष्ट्र के हिन्दू नौजवान जल सेना, भूसेना एवं वायुसेना में प्रयत्नतः प्रवेश करें; अद्ययावत शस्त्रास्त्र-विद्या हस्तगत करें। संशोधन के फलस्वरूप संसार में जो भी आधुनिकतम, नवीनतम अस्त्र तैयार हुआ हो, उसे आत्मसात् करें, स्वयं नवीन अस्त्रों की खोज करें। भीरु, डरपोक या अहिंसा के पागलपन में फँसे लोग यह कर न सकेंगे। महाराष्ट्र में गोआ-मुक्ति आन्दोलन प्रारंभ होते ही केवल गोलियाँ खाने के हेतु जहाँ सैकड़ों की संख्या में नवयुवक सिर पर कफन बाँधकर निकल पड़े; क्या वहाँ वे गोलियाँ मारने के हेतु सेना में प्रवेश नहीं करेंगे? हमारा कर्तव्य है कि हम नवयुवकों का इसमें मार्गदर्शन करें।"

दो वर्ष में रूस की तरह शक्तिशाली

वीर सावरकर भारत को आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से लैस एवं रूस, चीन व अमेरिका की तरह अण्वास्त्रों से सुसज्जित राष्ट्र बनाना चाहते थे। उन्होंने सन् १९६१ में एक लेख में लिखा था—"मुझे राष्ट्राध्यक्ष होने की किंचित् भी अभिलाषा नहीं है। किन्तु कल्पना करो कि यदि किसी प्रकार मुझे सत्ता हस्तगत हो गई तो मैं केवल दो वर्ष के अन्दर-अन्दर भारत को ख्रुश्चेव के रूस से भी प्रबल शक्तिशाली कर दिखाऊँगा। अद्ययावत सेना से देश की शक्ति बढ़ाऊँगा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और फिर यदि वैसा ही समय आया तो आवश्यकता पर, जिस तरह खुश्चेव ने राष्ट्रसंघ में अपना जूता हाथ में लिया, ठीक उसी तरह मैं मेरा बूट हाथ में लेकर शत्रु देशों को चुनौती दूंगा। किसी देश की धाक उसकी सैनिक सिद्धता पर निर्भर रहती है। ख्रुश्चेव की धाक रूस के अण्वास्त्रों के कारण है।"

एक बार राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने सर्वोदयी नेताओं के प्रभाव में आकर 'सभी शस्त्रों को समुद्र में डुबाकर भारत की सेना भंग कर देनी चाहिये' ऐसा आत्मघाती वक्तव्य दिया था। उस समय वीर सावरकर ने राष्ट्रपति महोदय के वक्तव्य को देश के लिए खतरनाक बताते हुए कहा था—"राजेन्द्र बाबू को यह न भूलना चाहिए कि राष्ट्र की स्वाधीनता की रक्षा के लिए सबसे पहली व महत्त्वपूर्ण आवश्यकता शस्त्रास्त्रों से सज्जित सेना की होती है। बिना सेना के छोटे-से-छोटा शत्रु देश भी देश को पराधीन बना लेगा।"

बाद में जब चीन ने सन् १९६२ में भारत पर आक्रमण किया तो राजेन्द्र बाबू की आँखें खुलीं और अपने वक्तव्य पर पश्चात्ताप भी हुआ।"

'मुहम्मदपंथी हिन्दू' भ्रामक विचार

एक बार सन् १९६२ में, मेरठ में एक राजनीतिक दल के नेता ने हिन्दू की व्याख्या करते हुए कहा—"जिस प्रकार 'कबीरपंथी हिन्दू', 'दादूपंथी हिन्दू', 'नानकपंथी हिन्दू', सनातनी हिन्दू', 'आर्य-समाजी हिन्दू' एवं अन्य पंथों के व्यक्ति हिन्दू हैं उसी प्रकार मुसल-मान 'मुहम्मदपंथी हिन्दू' हैं। भारत में रहने वाला प्रत्येक नागरिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी भी धर्म, मजहब व मत को मानते हुए भी वह हिन्दू ही है।"

हिन्दू की व्याख्या में 'मुहम्मदपंथी हिन्दू' यह नई बात थी। लेखक के पिताजी (भक्त रामशरणदासजी 'पिलखुवा') की वीर सावरकरजी से पुरानी मित्रता रही थी। जब भक्त रामशरणदास जी ने वीरजी को पत्र लिखकर 'मुहम्मदपंथी हिन्दू' पर उनके विचार जानने चाहे तो उन्होंने उत्तर में लिखा—

"आर्य समाजी, कबीर पंथी, सिख, बौद्ध, आदि धर्म तो भारत में ही उत्पन्न हुए, उनके प्रवर्तक हिन्दू ही थे, उनकी पुण्य भूमि, तीर्थ-स्थल, भारत में ही हैं, अतः वे जन्मजात हिन्दू हैं। किन्तु मुसलमानी मजहब, उसके प्रवर्तक मुहम्मद व ईसाई मजहब के प्रवर्तक ईसा तो विदेशों में ही पैदा हुए। उनकी पुण्यभूमि भारत में नहीं उन्हें हिन्दू किस प्रकार कहा जा सकता है? जो काशी, मथुरा, अयोध्या से घृणा करके मक्का-मदीना को अपना तीर्थ माने उसे 'मुहम्मदपंथी हिन्दू' बताना कोरा भ्रम ही है।"

'धर्मान्तर याने राष्ट्रान्तर'

वीर सावरकर ने धर्मान्तर को राष्ट्रान्तर बताते हुए स्पष्ट कहा—

"धर्म परिवर्तन के इस षड्यन्त्र की ओर पैनी दृष्टि से देखते रहो। केवल परमार्थ की चर्चा, केवल द्वैत और अद्वैत का विवाद अथवा चेतन-अचेतन वस्तुओं का अनुसंधान का अर्थ धर्म नहीं है। धर्म का अर्थ है व्यवहार। धर्म अर्थात इतिहास, धर्म अर्थात् राष्ट्र और इस धर्म का त्याग किसने किया है? यदि इंग्लैंड का राजा प्रोटेस्टेंट न हो तो उसे त्यागपत्र देना पड़ता है। अमरीका के प्रेजि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डेण्ट को प्रोटेस्टेंट बाइबिल की शपथ ग्रहण करनी पड़ती है। मध्य-पूर्व का हरेक छोटा-छोटा राष्ट्र भी धर्म प्रधान है। इस सारे जगत् में भ्रमण किए हुए लोग हैं। मिशनरियों से हमें धर्म निरपेक्षता की गप्पें हांकने से क्या लाभ ? मनुष्य धर्म-रहित जीवन ही नहीं रह सकता है। धर्म यह प्रचण्ड सामर्थ्य है, धर्महीन स्टालिन को भी मह मान्य करना पड़ा।

"आज हमारे देश में विदेशी ईसाई मिशनरियों ने धूम मचाई है। गोवा और त्रावणकोर में दंगे कराकर उन्होंने धर्म परिवर्तन कराया है। अन्य स्थानों से शिक्षा, ओपधि, अन्न आदि मार्गों से वे धर्म परिवर्तन करा रहे हैं। किन्तु 'धर्मान्तर माने राष्ट्रान्तर' है। धर्म परिवर्तन का अर्थ राष्ट्रीयता का परिवर्तन है। हिन्दुओं में सहिष्णुता का पागलपन बहुत बढ़ गया है। विदेशियों ने प्रचारित किया है कि हिन्दू धर्म के समान सहिष्णु धर्म नहीं है। हिन्दू धर्म अंशतः सहिष्णु है और अंशतः असहिष्णु। न्याय से सहिष्णुता और अन्याय से असहिष्णुता यह हिन्दू धर्म का पाठ है। अन्याय से सहिष्णुता यह कायरता है। इसलिए हिन्दुओ ! ईसाई धर्म प्रचारकों की गतिविधियों का साहस से प्रतिकार करना चाहिए। हिन्दू सभा, आर्य समाज आदि हिन्दुत्वनिष्ठ संस्थाओं को ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा खड़ा करना चाहिये। हिन्दुओं को मिशनरियों का बहिष्कार करना चाहिए। समय रहते सावधान होने से धर्मान्तरान्तर्गत राष्ट्रान्तर का संकट टल सकता है।"

वीर सावरकर ने भारत के पुराने इतिहास का गहन अध्ययन करने के पश्चात् लिखा—"हिन्दू जब तक हिन्दू है, तभी तक वह भारत की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग कर सकता है, सर्वस्व होम कर सकता है। वह अपनी प्यारी मातृभूमि, परम पवित्र पुण्यभूमि के लिए प्राण देकर 'स्वर्ग' व मोक्ष-प्राप्ति की कामना कर सकता है। किन्तु यदि वह धर्म परिवर्तन करके मुसलमान या ईसाई हो गया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो फिर वह क्यों व्यर्थ ही मिट्टी के ढेर की रक्षा के लिए प्राण देगा ? उसकी पुण्यभूमि भी बदलकर काशी से मक्का-मदीना हो जायेगी। अत: यह निश्चयपूर्ण समझ लेना चाहिए कि इस 'देश का सच्चा राष्ट्रीय, वास्तविकता भक्त हिन्दू ही है, हिन्दू ही रहेगा।

'हिन्दू' ही वास्तविक देशभक्त

जिस समय स्वाधीनता से पूर्व कांग्रेसी, 'हिन्दू' शब्द को सांप्रदायिक बताकर जनता में हिन्दुत्व के प्रति घृणा उत्पन्न कर रहे थे उस समय वीर सावरकर ने कहा कि साम्प्रदायिक हिन्दू नहीं अपितु तुष्टिकरण की नीति को अपनाकर देशद्रोही तत्वों को बढ़ावा देने वाले स्वयं साम्प्रदायिक हैं। गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू आदि नेता 'हिन्दू नहीं, हिन्दुस्तानी कहो' का प्रचार कर रहे थे। वीर सावरकर ने हिन्दुओं को ही इस देश का सच्चा राष्ट्रीय, देशभक्त एवं हितैषी बताते हुए घोषणा की—

"हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिए सन् १९५६ से प्रारम्भिक संघर्ष में किसने सच्चा त्याग किया ? हिन्दुओं ने अथवा मुसलमानों ने ? अण्डमानं में कौन गए ? हिन्दू अथवा मुसलमान ? जिस बंगाल की सत्ता के सूत्र आज मुसलमानों के हाथों में हैं, उस बंगाल से प्रज्वलित (स्वतन्त्रता के) हवन कुण्ड में कौन समिधा बने ? वे मुसलमान न थे—हिन्दू थे। सत्याग्रह संग्राम में बलिदान होने वाले भी कौन हैं ? मुसलमान ? नहीं, नहीं‼ हिन्दू। अण्डमान की भूमि खोद कर देखो और वहाँ प्राप्त होने वाली हुतात्माओं की अस्थियां देखो। उन सारों पर 'हिन्दू, हिन्दू' ये अक्षर ही अंकित देखोगे।

"अतएव यह सिद्ध है कि हिन्दुस्तान् के उद्धारार्थ आत्मार्पण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दुओं ने किया है। यह देश हिन्दुओं का ही है फिर आज तक हम जो कुछ करते रहे, वह आगे हम अकेले न कर सकेंगे यह मनो-दौर्बल्य क्यों ? और यदि यह कहने के कारण लोग मुझे जातीयवादी —'फिरकापरस्त' कहेंगे तो कहने दो। मुझे चिन्ता नहीं। उन लोगों की उस कल्पित—मानी हुई राष्ट्रीयता की अपेक्षा इस जातीयवाद —साम्प्रदायिकता को ही मैं भूषणास्पद मानता हूँ। हिन्दुओं को इस मानसिक दुर्बलता का त्यागकर अपनी शक्ति से स्वराज्य प्राप्त करने का साहस ग्रहण करना चाहिए। कारण, मुसलमानों को इस देश की स्वतंत्रता देखने की अभिलाषा नहीं है। वे तो इसे पाकिस्तान बनाने की आकांक्षा से प्रेरित हैं। सीमा-संलग्न मुसलमान राष्ट्रों ने आपस में संधि की है और यदि कल किसी विश्वयुद्ध में फँसकर इंग्लैंड दुर्बल हुआ तो ये लोग हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिए अफगानिस्तान को आमंत्रित कर सकते हैं। फिर वह आने वाला नया राज्य क्या स्वराज्य होगा ? कदापि नहीं। जहाँ हिन्दू संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन होगा वहीं स्वराज्य है। इस प्रकार का स्वराज्य स्थापित करना कांग्रेस की नीति नहीं है और इस कारण हिन्दू महासभा को ही यह कार्य करना होगा। यह पापिनी आशंका न कीजिए कि क्या यह ध्येय सिद्ध होगा ? उसे सिद्ध करने का निश्चय कीजिए। प्रयत्नों का कृपाण-धारण कीजिए। यशापयश की चिन्ता न कीजिए। यदि यश प्राप्त न हुआ तो भी ध्येय के लिए प्रयत्नों की परिसीमा करते-करते प्राणार्पण करने का समाधान आपको प्राप्त होगा। जिन्होंने परिस्थिति के सामने सिर झुकाकर अपनी कन्याओं और बहिनों को विधर्मियों के जनानखाने में भेज दिया, वे नाम—शेष हो गए। दुनिया से उनके नाम मिट गए। पर स्वतन्त्रता के लिए राज्य त्यागकर बनवास स्वीकार करने वाले हिन्दू सूर्य महाराणा प्रताप का नाम संसार में अमर है। यह अमरता प्राप्त करने के लिए, अत्याचारियों के अत्याचारों के शिकार बने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुए पूर्वजों के लिए समाधान के लिए भी तो कम-से-कम यह कीजिए।"

गोली का उत्तर गोली से दो

सावरकर समय-समय पर अपने लेखों व वक्तव्यों द्वारा कांग्रेसी शासन की आत्मघाती नीतियों का विरोध करके, उचित सुझाव व मार्गदर्शन देते रहे। पाकिस्तानी हमले, चीन की सैनिक तैयारियाँ नागाओं का षड्यन्त्र, परिवार नियोजन, आन्दोलन आदि सभी सामयिक समस्याओं पर वीर सावरकर ने अपने अनुभवी व दूरदर्शी विचारों द्वारा मार्गदर्शन किया। उन्हें न शासन से कुछ स्वार्थ था, न पदवी न आर्थिक सहायता प्राप्त करनी थी, न वे भयभीत होना सीखे थे। अतः नागा समस्या, पाकिस्तानी आक्रमण एवं परिवार नियोजन पर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने जनवरी, १९६४ में कहा था—

गत दस वर्षों में निर्देश करने योग्य अच्छी घटनायें न हुईं। सरदार पटेल ने सारे देशी राज्यों को नष्ट कर राष्ट्र को संगठित किया। यह एक घटना छोड़कर वर्तमान सत्ताधारियों ने दूसरा कौन-सा भला काम किया है?

नागा लोग पाकिस्तान से सम्पर्क कर आसाम में उपद्रव मचा रहे हैं। पाकिस्तान का उपद्रव अभी तक नियन्त्रित न हो सका। योजनाओं की आड़ में गत दस वर्षों में अपने घर भरने के अतिरिक्त महत्त्व का कार्य वर्तमान राज्यकर्ताओं ने नहीं किया है। यदि सच्चे त्यागी, युयुत्सु और वीर लोगों को सत्ताधारी पदों पर निर्वाचित किया जाता तो भारत आज संसार में एक बड़ा राष्ट्र हो जाता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब हमारी पीढ़ी के नेतृत्व की प्रतीक्षा करते हुए और हमारे लिए दीर्घायुष्य की कामना करते हुए आप निष्क्रिय न बैठिए। हमारा काम अब हो चुका है। कम-से-कम मुझे समाधान है कि मैंने अपने कर्तव्य को पूर्णतः निभाया है। कविता में सागर को प्रदत्त धमकी भी सच होकर देश स्वतन्त्र हो गया है। भाषा-शुद्धि, लिपि सुधार, अस्पृश्यता निवारण आदि मेरे द्वारा प्रचारित आंदोलन भी पर्याप्त सफल हो गए हैं। अपना कर्तव्य पूरा करने का समाधान मुझे प्राप्त है। यदि मेरी पीढ़ी के क्रांतिकारियों के प्रतिनिधि के रूप में मुझे राष्ट्र का वर्तमान युवक-वर्ग कुछ देना चाहता ही हो तो मुझे केवल इतना ही आश्वासन मात्र दीजिए कि "आप लोगों का कार्य हम भी करते रहेंगे, इस देश की स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखेंगे और अधिक प्राप्ति हेतु प्रयत्न करेंगे।'

"यह न समझिए कि देश स्वतन्त्र होने से वह स्वतन्त्रता अमर होती है। वह इंग्लैंड पुनः आपको पराधीन करने की इच्छा रखता है। चीन और पाकिस्तान तो प्रतिदिन आप पर गोली गाल रहे हैं। आप गोली का उत्तर गोली से क्यों नहीं दे रहे हैं? पर आज तो एक प्रकार से बुद्धि ही नष्ट हो गई है। जिस समुद्र के तट पर आप सदा वायु सेवन के हेतु जाते हैं, उस समुद्र को सारे के सारे अरबी समुद्र कहते हैं। क्या यह समुद्र अरवों के बाप का है? यह आपका समुद्र है। उसे सिन्धु सागर कहो अथवा अन्य नाम से पुकारो पर उसे 'अरवी समुद्र' न कहो। आपके देश में निवास-स्थान की कमी है। इसलिए आप संतति नियोजन करते हैं और पाकिस्तान से सहस्रों मुसलमानों को यहां लाकर उन्हें वसा रहे है। क्या यह नीति है? इस प्रकार की आत्मघातिनी बुद्धि का त्याग कर सैनिक शक्ति के उपासक वनो।

"किसी यूरोपियन देशभक्त ने अपनी मृत्युशिला पर लिखा है कि इस देश में मुझसे अधिक पराक्रमी देशभक्त निर्माण होंगे। मेरी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी यही इच्छा है। पराक्रमी और वीर पुरुष इस देश में निर्माण होकर देश की सैनिक, जल, नभ और अस्त्र शक्ति वृद्धिगत हो और रूस, अमरीका के समान यह देश बलशाली हो।"

हमारी यह दुर्बल नीति

वीर सावरकर कांग्रेसी शासन की कायर व हिन्दू-विरोधी नीति का समय-समय पर विरोध करके देश का मार्गदर्शन करते रहे। जब सरकार ने कैलास मानसरोवर की तीर्थ यात्रा पर रोक लगाई तो उन्होंने २४ जनवरी, सन् १९६१ को एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा—

संसद में घोषणा करके कैलाश-मानसरोवर की यात्रा पर प्रधानमन्त्री नेहरू जी ने रोक लगाई। उन्होंने कहा—"चीन के खतरे के कारण वह रोक लगाई गई।' हिन्दुओं को अपने महान् पवित्र तीर्थ की यात्रा से भी वंचित कर दिया गया। सरकार को यह चाहिए था कि भारतीय सेना को तीर्थ-यात्रियों की सहायता के लिए तैनात करके तीर्थयात्रा सम्पन्न कराई जाती। दूसरी ओर वर्षों से हज यात्रा के लिये भारत के निधिकोष से करोड़ों रुपया दिया जा रहा है और हमारी यात्रा पर रोक लगाई गई है। यह अवस्था देश के दुर्बल नेतृत्व का ही प्रतीक है।

"पर जवाहरलाल नेहरू सहजीवन एवं सह-अस्तित्व जैसी मोहक व आत्मघाती कल्पना के भक्ष्य बन गये। सहजीवन दो किस्म का होता है। एक तो वह जो सबल, तुल्यबल देशों में हुआ करता है और दूसरा जो व्याघ्र और बकरी का होता है। हमारे भाग यह दूसरी किस्म का सहजीवन ही क्यों आया? इस पर जरा विचार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करो। बस इसका एक ही कारण है। हमारा सामर्थ्य, नीति दृढ़ व प्रभावशाली नहीं है। जो चीन फार्मोसा को मुक्त न करा सका और न माकोव जैसा छोटा-सा द्वीप पुर्तगाल से न ले सका वह भारत का सहस्रों मील हड़प जाना है, इस घटना का एक ही अर्थ है—'हमारी शक्ति की उसे धाक नहीं, भय नहीं।' 'हम किसी भी स्थिति में युद्ध नहीं करेंगे', 'गोलियों का जवाब विरोधपत्रों द्वारा देंगे' ऐसी जिनकी घोपणा हो, भय कौन और क्यों करेगा ?"

साहित्यकारों से

वीर सावरकर मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए, किन्तु उन्होंने साहित्य सम्मेलन के मंच से भी साहित्यकारों व साहित्य प्रेमियों को राष्ट्र को सबल व शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करने में योग देने की प्रेरणा दी। उन्होंने मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहा—

शस्त्राचारी बनो !

"आने वाले दस वर्षों में सुनीत (Sonet) बनाने वाला एक भी युवक निर्माण न हुआ तो चलेगा, पुनः-पुनः साहित्य सम्मेलन न हुए तो हानि नहीं, परन्तु दश-दश सहस्त्र युवक, सैनिकों के वीर भेष में कंधों पर नई राइफलें रखकर, राष्ट्र के मार्ग में शिविर में टप-टप करते हुए संचलन करते दृष्टिगोचर होने चाहिए। कम-से-कम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रन्थालयों की संख्या के बराबर, बौद्धिक महाविद्यालयों की संख्या के बराबर नगर-नगर में सैनिक महाविद्यालय भी व्यस्त अवस्था में दिखाई देने चाहियें। फिर कभी-कभी उन्होंने एक-दो उपन्यास अथवा प्रेम गीत पढ़ा अथवा सुनीत बनाया तो कोई हरकत नहीं है।

"नेपोलियन भी रणभूमि पर मनोरंजन के लिए सीटी बजाता था। "दिल्ली के बादशाह की दाढ़ी जलाकर" लौटने के पश्चात् मस्तानी के अंत:पुर में प्रथम बाजीराव पेशावर यदा-कदा एकाध पान खा लेते थे। परन्तु जीवन-पर्यन्त केवल वृक्ष के पत्ते ही चूसने और 'तमाशा' में खड़कने वाले तबले सुनने वाले द्वितीय बाजीराव के ब्रह्मावर्त्त का स्वरूप राष्ट्र को प्राप्त हो यह मेरी आँखों से नहीं देखा जाता।

"साहित्यकारो ! आज के समान प्रसंग पर साहित्यकारों का केवल यही कर्त्तव्य है। यह केवल मेरा ही कहना नहीं है, अपितु साहित्यकारों के सम्राट महर्षि व्यास भी कहते हैं कि—

अमर्याद् प्रवृत्ते च
शत्रुभिस्संगरे कृते।
सर्वे वर्णाश्च वृश्येयु:
शस्त्रवन्तो युधिष्ठिर ॥

"कारण यदि केवल साहित्य की दृष्टि से ही विचार किया तो भी यही सत्य है "शस्त्रेण रक्षते राष्ट्रेशास्त्र चिंता प्रवर्तते !"

स्वराज्य के ठेकेदार ये कांग्रेसी !

कांग्रेस शासन द्वारा प्रचारित पाठ्य पुस्तकों में 'स्वाधीनता केवल गांधीजी की विशुद्ध अहिंसा एवं सत्याग्रह आन्दोलन के कारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही प्राप्त हुई है' ये शब्द पढ़कर सावरकर को भारी दुःख हुआ। कांग्रेसी शासन द्वारा स्वाधीनता के लिए बलिदान हुए हजारों हुतात्माओं की उपेक्षा वह सहन न कर सके। सन् १९६१ में वीर सावरकर ने 'क्या स्वराज्य का श्रेय केवल कांग्रेस को है?' शीर्षक एक लेख लिखा। वह उसमें अनेक उदाहरण देकर लिखते हैं—

"अपनी पाठ्य पुस्तकों द्वारा यह सरकार विद्यार्थियों को सिखाती है कि गांधी जी की कांग्रेस ने भारत का शासन अंग्रेजों के हाथ से नि:शस्त्र क्रांति द्वारा लिया। किन्तु असल में हुआ यह कि हमारी शक्तिशाली सेना ने जब तलवार म्यान से निकालकर भारत की स्वतन्त्रता के उद्देश्य से अंग्रेजों पर वार करना शुरू किया और साथ ही अपने दूसरे साथियों को भी इसके लिए उकसाने लगे तो अंग्रेज घबरा गये और उन्होंने स्वतन्त्रता 'दान' करने की बात बनाना शुरू कर दिया। यह ऐतिहासिक तथ्य स्वयं ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री ने भरी पार्लियामेंट में स्वीकार किया है।

"इधर १९५८ के अगस्त मास में एक प्रसिद्ध जापानी ग्रंथकार श्री जे. जी. ओहसावा ने "दि टू ग्रेट इण्डियन्स इन जापान" नामक पुस्तक प्रकाशित की है। उसमें उन्होंने रासबिहारी बोस का चरित्र-चित्रण करते हुए उनके जापान में किये गये अभूतपूर्व क्रान्तिकारी कार्यों का वर्णन किया है।

"दूसरे महायुद्ध के अवसर पर जब जापानी सेना ने सिंगापुरपर चढ़ाई की और अंग्रेज एवं अंग्रेजों की भारतीय सेना से उनका युद्ध छिड़ गया तब सेनापति रासबिहारी बोस की आजाद हिन्द सेना अंग्रेजी सेना से लड़ी थी। उस प्रसंग में उक्त पुस्तक में साफ लिखा है कि कैसे सिंगापुर में जापान के खिलाफ लड़ने वाली ब्रिटिश सैन्य भारतीय सिपाही और अफसर रासबिहारी बोस के स्फूर्तिजनक वक्तव्य के बाद आई. एन. ए. में हजारों की संख्या में शामिल हो गये थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"यह एक तीसरे ही व्यक्ति के लिखित विचार हैं। अब हम "दि इण्डिपेन्डेन्स ऑफ इण्डिया ऐक्ट" पास करते समय तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमन्त्री सर क्लीमेट एटली ने क्या कहा इस पर विचार करें। जो अंग्रेज भारत के स्वातन्त्र्य युद्ध में भारत के विरोधी थे, और जिनके साथ लगभग सौ वर्ष तक संघर्ष करके हमने यह स्वतन्त्रता पाई है, सर क्लीमेट एटली उन्हीं अंग्रेजों के प्रधान मन्त्री थे।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री की साक्षी

"जब ब्रिटिश संसद में यह बिल पेश हुआ तब हिन्दुस्तान पर से अपना साम्राज्य हटाने की बात से दुःखी होकर साम्राज्यवादी सर विन्सेंट चर्चिल ने पूछा—'क्या यह ऐक्ट पास कर लेने की अपेक्षा दूसरा कोई मार्ग नहीं, जिससे भारतवर्ष को स्वतन्त्र न करके अपने लिये बचाया जा सके।' इसका उत्तर प्रधान मंत्री ने दो-तीन वाक्यों में इस प्रकार दिया :

'भारतवर्ष को स्वतन्त्रता देने का कारण यह है कि वहाँ की सेना अब अंग्रेजों के प्रति केवल रोटी के लिए वफादार नहीं रही और ब्रिटेन के पास अब उतनी ताक़त नहीं रही कि हिन्दुस्तानी सेना को दबाये रख सके।'

'न तो ब्रिटेन के प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली ने ही और न ही किसी संसद सदस्य ने यह कहा कि 'अहिंसा के तत्त्वों से हमारा हृदय परिवर्तन हो गया है।' और न यही कहा कि साम्राज्यवाद अन्याय है, अतः हम भारतवर्ष को स्वतन्त्र किये दे रहे है।' इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि सन् १९०६ से १९४७ तक क्रांतिकारी पक्षों ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतीय सेना में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह फैलाया और दोनों ही महायुद्ध में क्रांतिकारियों ने विदेशों से शस्त्र सहायता लेकर अंग्रेजों से स्वातन्त्र्य युद्ध छेड़ा। अंग्रेजों ने हमें स्वतन्त्रता 'दान' में नहीं दी है वरन् क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता के दीवानों ने उसे उनसे छीना है।"

'अहिंसा' राष्ट्र के पराजय का कारण

वीर सावरकर ने हिन्दुओं को गांधी जी की 'अहिंसा' से सावधान करते हुए घोषणा की थी—

गांधीवादी विचारधारा की जड़ है अत्यधिक अहिंसा। किन्तु मेरे मतानुसार पराकोटि की अहिंसा एक भीषण पाप है। वह व्यवहार में नहीं आ सकती।

"सज्जनों के साथ सज्जनता से व्यवहार करना पुण्यकारक है। लेकिन जो अपने देश पर आक्रमण करने के लिये आता है, उसको शस्त्र के कड़ा उत्तर देने में हिन्दू संस्कृति पाप नहीं बताती, पुण्य बताती है। गांधीवादी कहते हैं—'हम न किसी से द्वेष करेंगे तो हिंसा करने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।' इस प्रकार के विचार भीरुता व भ्रम के ही परिचायक हैं। तुम लोग द्वेष करना छोड़ दोगे, लेकिन दूसरे द्वेष नहीं करेंगे, इसकी हामी कौन दे सकता है? द्वेष, यह क्रिया केवल प्रतिक्रिया नहीं है। स्वयं अपना अस्तित्व कायम रखना तथा राष्ट्र को जीवित रखना यह हमारा परम कर्तव्य है। उस कर्तव्य की पूर्ति करने के लिए जो हिंसा अनिवार्य होगी वह भी पुण्यकारक ही मानी जायेगी। यह बात ध्यान देने योग्य है कि चोरी की हानियां बताने एवं धार्मिक उपदेश देने मात्र से चोर नष्ट नहीं हो जाते। दंड व शक्ति के बल पर ही चोरों को नियन्त्रण में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया जा सकता है। आत्यंतिक अहिंसा के व्यवहार से हिंसा प्रबलतर बन जायेगी। आत्यंतिक अहिंसातत्व का प्रचार करने वाले व्यक्तियों को मैं या तो मूर्ख समझता हूं, या दुष्ट। आत्यंतिक अहिंसा के विचार केवल दुर्बल व कायरों के मुख को शोभा देते हैं। हमारे प्रेरणास्रोत प्रभु श्रीराम एवं श्रीकृष्ण हैं।' वे हमसे कहते हैं कि 'शस्त्र लेकर दुष्टों का मूल नाश करो', 'आततायियों को बिना सोचे-विचारे मार डालो' यह हमारे वेदों की आज्ञा है। यह हमारा धर्म है। हमारे पूर्वज, सभी देवी-देवता, अवतार, राजा-महाराजा सशस्त्र थे, बड़े-बड़े भयंकर शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित थे।"

हिन्दुत्व हमारा प्राण

वीर सावरकर ने हिन्दू और हिन्दूराष्ट्र के गौरव पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए एक लेख में लिखा—

"हमें एक हिन्दू राष्ट्र चाहिये इसलिए हम हिन्दू एक राष्ट्र हैं। हमें हिन्दू नाम से ही जीवित रहना और इसी नाम से मरना पसन्द है। इसलिए हम हिन्दू हैं। नदी पहले और पुल बाद में, वैसे ही इच्छा पहले, राष्ट्र पहले और व्याख्या बाद में। सिकन्दर ग्रीक ने आकर जिन ब्राह्मणों के टुकड़े किए, मुसलमानों ने गुरु तेग बहादुर का सर उड़ाया, मतिदास के मस्तक पर आरी रखने पर भी जब वह हिन्दुत्व छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ इसीलिए उसे जैसे का तैसा खड़ा-खड़ा ही चीर डाला गया, बन्दा वीर का मांस तप्त लोहे का गज भोंक-कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला गया, शम्भाजी की आंखें फोड़ीं, जीभ काट डाली, हरपाल को छील डाला, कवि कुलेश को जीजान से मार डाला, टीपू के हाथों अपना धर्म परिवर्तन न हो इसलिये जिन वीरों ने अपनी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीभ खींचकर प्राण दिये, इन हुतात्माओं ने जो प्राण त्याग किये वे हिन्दू शब्द तुम्हारी पुस्तकीय व्याख्या तथा व्याकरण की मात्रा की गलती न होने पाये इसलिये किये थे क्या ? नहीं ! बिल्कुल नहीं! ! हिन्दुत्व के अतिरिक्त उन्हें जीवन ही नहीं भाता था, वे जीना ही नहीं चाहते थे—"धर्म हेतु साका तिन किया, सर दिया पर शिरह नहीं दिया।" उनकी तीव्र इच्छा उनकी हिन्दुत्व की व्याख्या, उनका हृदय ही उनका व्याकरण !

"हिन्दुओ ! अपना राष्ट्र गत दो सहस्र ऐतिहासिक वर्षों तक जो जीवित रह सका वह केवल यदृच्छया जीवित रह गया इसलिए ही जग सका, ऐसा जो कहते हैं वे मूर्ख अथवा लुच्चे हैं। हम जीवित रहे क्योंकि जीवित रहने के लिए हम ही सब से योग्य थे। (We survived because we proved fittest to survive.) उन परिस्थितियों से जूझने के लिए जो जो भूलना आवश्यक था वह हम भूल गये और जो कुछ अपनाना आवश्यक था वह सीखे भी। और इसलिए उन परिस्थितियों पर भी विजय पाकर जीवित रह सके।

"संसार पर विजय पाता हुआ सिकन्दर आया, उसके पास हम से बहुत कुछ अधिक था। उसने उस हिसाब से आक्रमण किया किन्तु शीघ्र ही चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने ग्रीकों की शस्त्र-संघटना समेत उन्हें आत्मसात् कर लिया। जो अपने मण्डल में कच्चा था उसे निकाल कर पक्का कर लिया।

"ग्रीकों से सवाई होकर उन्हें केवल सिन्धु पार ही नहीं अपितु हिन्दुकुश के भी उस पार मार कर भगा दिया। हूण आये, शक आये। उन्होंने समस्त एशिया, आधा योरुप विध्वस्त किया था, इतने वे बलशाली थे। उनके धड़ाके से ही आधा भारत कांप उठा था। किन्तु दो शतक तक निरंतर जूझते हुए, उनसे लड़ने के लिए जिन नए शस्त्रों की, नए अनुसन्धानों की आवश्यकता थी उन्हें शीघ्रा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिशीघ्र अपना कर, उन हूणों के प्रबलतम सम्राट का शिरच्छेद किया। एक के पीछे एक अनेक समर में शकों की धज्जियां उड़ा दीं, विक्रमादित्यों, हूणरियों और शकारियों की परंपरा को परंपरा निर्माण करके भारतीय विजय के जयस्तम्भ स्थान-स्थान पर खड़े कर दिए, वे आज भी साक्षी दे रहे हैं। उस समय, उस पीढ़ी में हम जो पुनः-पुनः बलशाली और श्रेष्ठ हो सके वह इसीलिए कि हमने अपने दांव, आचार, दोष, व्यंग एकदम चटाक से बदल डाले। सत्ययुग का जो टिकने वाला सा नहीं प्रतीत हुआ उसे कलिवर्ज्य ठहराया और जो नया सीखने योग्य हुआ उसे कलिग्राह्य ठहराया। स्मृति में जो परिवर्तन इष्ट था उसे किया, जो बिगड़ गया था उसे सुधार दिया और जीवित रहे। क्षत्रियों ने रणाग्नि में और ब्राह्मणों ने शुद्धिकरण यज्ञाग्नि में यवन-हूण शकों को जलाकर ऐसा भस्म किया, उदरसात् कर लिया कि इस समस्त भारतवर्ष में ग्रीक अथवा हूण अथवा शक कोई नाम मात्र को शेष न रहने पाये। बाद में मुसलमान उठे। उन्होंने सीरिया, ईरान, बेबिलोन, अफ्रीका नहीं के बराबर कर दिया। हम इनकी जयिष्णु वृत्ति के सामने कम पड़ गए। बड़ा प्रलय का समय आया, फिर भी छह सौ साल तक हम उनसे जूझे पर दम न छूटने दिया। अन्त में मुसलमानों के लड़ने के लिए पर्याप्त साधन सामग्री एवं सामर्थ्य हम अपनाने में लाये; उन्हीं के शस्त्रास्त्र उन्हीं के दांव-पेच सीखकर उन्हीं के हथियार छीन कर हिन्दुस्तान भर में हिन्दू मात्र जाग उठा! मुहम्मद कासिम से लेकर सन् १६२७ तक साधारणतः जहां-जहां हिन्दू-मुस्लिम थे, वहां हिन्दू का पराभव निश्चित था, परन्तु सन् १६२७ से १७९५ तक जहां-जहां मुस्लिम आये वहां-वहां हिन्दू ने उन्हें पछाड़ दिया। सिख, राजपूत, गुरखा, बुंदेला, मराठा हिन्दुओं के लक्षावधि वीरों का मानो वन का वन उठ खड़ा हुआ। सारा हिन्दुस्तान पुनरपि हिन्दू समाज के अधीन लाया गया। शत-शत युद्धों में हिन्दुओं ने एक के पीछे एक विजय प्राप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की, पंजाब में सिक्खों का राज्य, नेपाल में गुरखे और दिल्ली से त्रिचनापल्ली—तंजोर तक मराठों का राज्य !

"अतएव, हम जीवित रहे तो विजर होकर। परिस्थिति से टक्कर ले सके इसलिए जीवित रहे। किन्तु यह जितना सत्य है उतना ही सत्य यह भी है कि इससे आगे भी वर्तमान परिस्थिति से टक्कर लेने में हम टिक सकेंगे। केवल आज तक जीवित रहे इसलिए बैठे-बैठे अब भी जीवित रह सकेंगे सो नहीं। अब हमारा सामना विज्ञान से है। इसलिए जो-जो रूढ़ियाँ, आचार, शास्त्र, शस्त्र विज्ञान के ढांचे में जो-परख कर सोलह आने ठीक उतर सकेगा, वही आज के समय का हमारा हिन्दू धर्म। जो-जो हल्का, काम टिकाऊ, उसे जलाकर भस्म कर दो; वही इस युग का अधर्म, इस काल का कलि-वर्ज्य। सौभाग्य से अपने हिन्दू राष्ट्र की नैसर्गिक शक्ति फिर उद्दीपित होती हुई दिखाई दे रही है। यदि तनिक धैर्य के साथ और विज्ञान के हथियार से ही विज्ञान से लड़ेंगे तो संकट से छिड़ी हुई लड़ाई में हम निश्चित विजय होकर रहेंगे, हिन्दू रहकर जीतेंगे। जब मरना होगा तब तो सेनानी सदाशिवराव भाऊ के समान मरेंगे या गुरुगोविंदसिंह के समान ! किन्तु कायर के समान हिन्दू से अहिन्दू होकर नहीं, कदापि नहीं !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सावरकर साहित्य

वीर सावरकर ने जहाँ देश की स्वाधीनता के लिए अपने जीवन का अधिकांश समय अण्डमान की कोठरियों में बिताया, स्वातन्त्र्य युद्ध के योद्धा के रूप में स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की आराधना की, वहाँ मां सरस्वती की आराधना में भी वे किसी से पीछे न रहे।

सावरकरजी ने भारतीय युवकों को युग-युगों तक राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देने के लिए कई हजार लेख, कवितायें, निबन्ध आदि लिखे तथा दर्जनों महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की भी रचना की।

वीर सावरकर के साहित्यिक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने साहित्य के प्रत्येक अंग पर अपनी लोह लेखनी का सफल प्रयोग किया। काव्य, महाकाव्य, खंडकाव्य, एकांकी, नाटक, उपन्यास आदि सभी विषयों पर उन्होंने सफल कृतियाँ, साहित्य समाज को भेंट कीं।

वीर सावरकर ने अल्पायु में ही वीर रस से ओतप्रोत रचनायें लिखनी प्रारम्भ कर दी थीं। उनकी अनेक ओजस्वी कवितायें छात्रावस्था में ही मराठी पत्रों में प्रकाशित हुईं।

लन्दन जाने के बाद वीर सावरकर ने भारतीय युवकों को सशस्त्र क्रान्ति के तत्त्वज्ञान की शिक्षा देने के उद्देश्य से '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' ग्रन्थ लिखा। इस महान ऐतिहासिक ग्रन्थ ने ऐसा तहलका मचाया कि ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें ही चरमरा उठीं। इस ग्रन्थ को कई बार जब्त किया गया।

लन्दन में ही वीर सावरकर ने 'मैजिनी का जीवन चरित्र' लिखा। उन्होंने 'सिखों का स्फूर्तिदायक इतिहास' भी लिखा, जिसे ब्रिटिश शासन ने तुरन्त जब्त कर लिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो आजीवन कारावासों का दण्ड देकर सावरकर जी को अण्डमान भेज दिया गया तो वे अण्डमान में भी कोल्हू चलाने के बाद बचे समय में साहित्य आराधना करने लगे। लेखन सामग्री के अभाव में जेल की दीवार पर, पत्थर के नुकीले टुकड़े से उन्होंने काव्य लिखा। 'कमला' और 'गोमान्तक'[१] नामक दो खण्ड काव्य उन्होंने अण्डमान में ही लिखे। 'गोमान्तक' में उन्होंने गोआ की पृष्ठभूमि में पुर्तगाली ईसाई पादरियों द्वारा हिन्दुओं पर किये गये लोमहर्षक अत्याचारों का चित्र चित्रित किया। 'गोमान्तक' की, देश के अनेक प्रसिद्ध कवियों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

वीर सावरकर ने अण्डमान के जेल-जीवन पर आधारित 'कालापानी' नामक एक सुन्दर उपन्यास भी लिखा। 'कालापानी' मराठी एवं हिन्दी में प्रकाशित हुआ।

महार हरिजन जाति की एक वीर महिला द्वारा धर्म रक्षा व अपने सतीत्व की रक्षा के लिए आततायी का कृपाण से सामना किये जाने की घटना पर आधारित उन्होंने 'उःशाप' नामक नाटक लिखा। 'समस्त खड्ग' व 'उत्तर क्रिया' ये दोनों नाटक भी उन्होंने लिखे।

क्रमानुसार साहित्य परिचय

वीर सावरकर जी ने लगभग ५० पुस्तकें लिखीं। उनकी सूची निम्न प्रकार है—

१. 'गोमान्तक' काव्य का हिन्दी भाषा में उपन्यास के रूप में रूपांन्तर श्री माधवराव मूले ने किया है। तथा यह उपन्यास भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) जोसेफ मैजिनी : (मराठी) सन् १९०७ में लन्दन में यह ग्रंथ लिखा गया। प्रकाशित होते ही अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया। सन् १९४६ में प्रतिबन्ध हटने पर पुनः दूसरा संस्करण निकला।

(२) १८५७ का स्वातन्त्र्य समर (अंग्रेजी, मराठी, हिन्दी, गुजराती और तमिल में प्रकाशित)। सन् १९०८ में लन्दन में लिखा गया। प्रकाशन के पूर्व १९१० में अभिनव भारत ने प्रकाशित किया। ला० हरदयाल ने अमरीका में प्रकाशित कराया। बाद में सरदार भगतसिंह ने गुप्त रूप से प्रकाशित कराया।

(३) 'सिक्खों का स्फूर्तिदायक इतिहास' (मराठी)। सन् १९१० में पैरिस में लिखा। प्रकाशित होने से पूर्व ही जब्त कर लिया गया।

(४) 'हिन्दुत्व' (अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, बंगाली व गुजराती में प्रकाशित)। सन् १९२३ में रत्नागिरी कारागृह में लिखा गया।

(५) 'हिन्दू पदपादशाही' (अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, तेलुगू)। यह ऐतिहासिक ग्रंथ भी रत्नागिरी में लिखा।

(६) 'मांझी जन्मठेप' (अंग्रेजी, मराठी, गुजराती व अब हिन्दी में भी प्रकाशित)। इस ग्रंथ में वीर सावरकर ने अण्डमान कारावास की रोमांचकारी कहानी बड़ी रोचक भाषा में प्रस्तुत की है। सन् १९२७ में यह प्रकाशित हुआ और जब्त कर लिया गया। १९४६ में पुनः प्रकाशित हुआ।

(७) 'रानफुलें' (मराठी खण्ड काव्य)। अण्डमान में कोल्हू चलाते समय इस काव्य की ओजस्वी पंक्तियां मुखरित हुई!

(८) 'गोमान्तक' (खण्ड काव्य)। 'रानफुले' १९२३ में मराठी में प्रकाशित हुआ और 'गोमान्तक' १९२४ में प्रकाशित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ। 'गोमान्तक' गोआ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया खण्ड काव्य है। सुप्रसिद्ध विद्वान साहित्याचार्य पं० बालशास्त्री हरदास ने संस्कृत में अनुवाद किया। श्री माधवराव मुले ने अभी गत दिनों में हिन्दी में अनुवाद किया।

(९) 'अण्डमान की गूंज' (मराठी, अंग्रेजी, हिन्दी)। अण्डमान की कालकोठरी से लिखे गए ओजस्वी व मार्मिक पत्रों का संग्रह। सन् १९२५ में प्रकाशित हुआ।

(१०) 'मालकयत्याचें (मराठी)। मालाबार में मोपलों के विद्रोह पर लिखा गया यह उपन्यास सन् १९२७ में प्रकाशित हुआ।

(११) 'उ:शाप' (मराठी) ; अत्यन्त मार्मिक व सफल नाटक। सन् १९२७ में प्रकाशित हुआ।

(१२) 'उत्त र क्रिया' (मराठी)। पानीपत पर हारने के पश्चात् केवल १२ वर्षों में मराठों ने अपना संगठन दृढ़ बनाकर किस प्रकार पानीपत पराजय का प्रतिकार लिया, इस ऐतिहासिक तथ्य पर आधारित यह नाटक सन् १९२६ में प्रकाशित हुआ।

(१३) 'सन्यस्त खड्ग' (मराठी)। भगवान बुद्ध के जीवन एवं आत्मघातक राजनीतिक तत्त्व ज्ञान पर आधारित नाटक।

(१४) 'नेपाल' (मराठी)। स्वतन्त्र हिन्दूराज्य नेपाल का स्वर्णिम इतिहास। सन् १९२८ में प्रकाशित।

(१५) 'मराठी भाषा की शुद्धि'—मराठी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में घुसे हुए अंग्रेजी, अरबी व अन्य परकीय शब्दों के बहिष्कार के विषय में तर्कपूर्ण विवेचन। सन् १९२८ में प्रकाशित।

(१६) 'काके पानी काला' (मराठी)। अण्डमान के जीवन पर आधारित यह उपन्यास सन् में १९३७ प्रकाशित हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाद में 'कालापानी' नाम से हिन्दी में भी प्रकाशित हुआ।

(१७) 'सावरकर की कवितायें' (मराठी)। कविताओं का संग्रह।

(१८) 'सावरकरांच्या गोष्ठी' (मराठी कहानियाँ)।

(१९) 'हिन्दू राष्ट्र दर्शन' (मराठी-अंग्रेजी)।

(२०) 'आत्मचरित्र' (मराठी।

(२१) 'हिन्दुत्व के पंचप्राण' (मराठी-हिन्दी)। हिन्दू संगठन के पाँच मौलिक तत्वों का विवेचन।

(२२) 'तेजस्वी तारे' (मराठी)। प्रमुख क्रांतिकारियों के रेखा-चित्रों का संग्रह।

(२३) 'गान्धी गड़वड़' (मराठी)। गांधी जी के तत्वज्ञान पर प्रबल प्रहार।

(२४) 'रणसिंह रणभेरी' (मराठी)—ऐतिहासिक निवन्धों का संग्रह।

(२५) 'विज्ञाननिष्ठ निबन्ध' (मराठी)। विज्ञाननिष्ठ, बुद्धि-प्रामाण्यवादी निवन्धों का संग्रह।

(२६) 'सहा सोनेरी पाने' (मराठी)। भारतीय इतिहास के इन स्वर्णिम पृष्ठों में हिन्दुओं की वीरता का रोचक वर्णन सावरकर जी ने वड़ी ललित भाषा में किया है।

वीर सावरकर का हिन्दी साहित्य में भले ही अधिक महत्त्व न हो किन्तु मराठी के अग्रणी साहित्यकारों में उनकी गणना की जाती है। उनकी रचनाओं की भारत के ही नहीं अपितु विश्व के अनेक साहित्यकारों ने भी प्रशंसा की है।

वीर सावरकर की रचनाओं की यह विशेषता रही है कि वे केवल मनोरंजन, या पाठकों को मुग्ध करने के उद्देश्य मात्र से नहीं लिखी गईं। उन्होंने जो कुछ लिखा देशभक्ति की प्रेरणा देने के लिए लिखा, हिन्दुत्व का यशोगान करने के उद्देश्य से लिखा। उनकी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रचनाओं का एक-एक शब्द राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है।

नागपुर विश्वविद्यालय ने उनके मराठी साहित्य से प्रभावित होकर उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया था। महाराष्ट्र प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद को भी वीर सावरकर सुशोभित कर चुके हैं। मराठी के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं मराठी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री माडखोलकर ने सावरकर साहित्य के सम्बन्ध में लिखा है—"सावरकर ने अपने यौवन में अण्डमान का दर्शन एवं अनुभव करके भी अपनी कविता को भय-विह्वल न होने दिया। उसका ओज प्रतिपक्षयों के आसुरी आघातों द्वारा भी दुर्दमनीय सिद्ध हुआ, मानो वज्र सिद्ध करने के उपरान्त महर्षि दधीचि की शेष दिव्य अस्थियों में से विधाता ने सावरकर जी की प्रतिमा का निर्माण किया हो।"

वीर सावरकर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक साहित्य-आराधना में लीन रहे। अभी गत दिनों हिन्दी में उनका 'भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ' पुस्तक प्रकाशित हुई। वह 'हिन्दू राष्ट्र का बृहद् इतिहास' लिखना चाहते थे।

सावरकर साहित्य युग-युगों तक भारतीयों को देशभक्ति की, हिन्दुत्व की अमिट प्रेरणा देता रहेगा।

▭ ▭ ▭

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिन्तक श्री गुरुदत्त की एक अन्यतम रचना

परित्राणाय साधूनाम्

महाभारत की कथा को आधार बनाकर लिखे गए
श्री गुरुदत्त के तीन उपन्यास
अवतरण, सम्भवामि युगे-युगे तथा विनाशाय च दुष्कृताम्
अब एक जिल्द में अनुपम साज-सज्जा के साथ पुनः प्रकाशित।

महाभारत का युद्ध अब तक के हुए युद्धों से भी अधिक भीषण था, जिसमें कहा जाता है कि १८ दिन में लगभग पचास लाख योद्धा मारे गए थे। फिर भी यह एक धर्म-युद्ध था। क्यों और कैसे?

महाभारत की कथा को आधार बनाकर लिखा गया कदाचित् यह सर्वप्रथम उपन्यास है जो सन् १९६० में प्रथम बार छपा था।

महाभारत की कथा को प्रस्तुत किया गया है संजय के मुख से। संजय प्रत्यक्षदर्शी था न केवल महाभारत युद्ध का प्रत्युत कौरवों-पाण्डवों के जीवनपर्यन्त चलने वाले वैमनस्य तथा संघर्ष का।

एक अनुपम कथानक, हिन्दी के मूर्धन्य कथाकार गुरुदत्त द्वारा अन्यतम ढंग से प्रस्तुत।

तीनों उपन्यास एक ही जिल्द में, पृष्ठ संख्या ८६८ (डिमाई आकार में) सम्पूर्ण कपड़े की सुदृढ़ जिल्द—

मूल्य ३९५ रुपये

यह रचना साहित्यकार गुरुदत्त—प्रतिनिधि रचनाएँ
खण्ड पाँच के रूप में भी प्रकाशित हुई है।

हिन्दी साहित्य सदन

२ बी.डी. चैम्बर्स, १०/५४, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-११०००५ फोन : २३५५३६२४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिन्तक श्री गुरुदत्त की अनुपम रचना

गंगा की धारा

अब एक जिल्द में अनुपम साज-सज्जा के साथ पुनः प्रकाशित

मूल्य : सजिल्द २८० रुपए

इस देश में बसी समाज की संस्कृति और आचार-संहिता गंगा की पावन धारा की भाँति अनन्तकाल से चली आ रही है। इस पर भी यह पवित्र है, स्वच्छ है, मधुर है और रोग-नाशक है, अपने स्रोत के समीप ही। हुगली की धारा है तो गंगा ही की, परन्तु इसमें बहुत कुछ मल-मूत्र, कीचड़ और कचरा मिल गया है। इस कारण यदि इस धारा से लाभ उठाना है तो इसका पान गंगोत्री में जाकर ही करना होगा।

भारत एक अति उन्नत देश था और यहाँ के रहने वालों की आचार-संहिता अति श्रेष्ठ थी। इस पर भी यह देश और इसमें रहने वाली जाति एक सहस्र वर्षों से मध्य एशिया की बर्बर जातियों के पाँवों की ठोकरें खा रही है।

एक सहस्र वर्ष की दासता के होने पर भी, वैचित्र्य यह है कि जहाँ अन्य देशों में मुसलमान शासकों ने बहुत ही अल्पकाल में पूर्ण जनता को इस्लाम के सामने नतमस्तक कर दिया था, वहाँ भारत में मुसलमान शासक एक सहस्र वर्ष तक शासन करने पर भी, बहुत ही अल्पसंख्या में जनता को इसलाम के झण्डे-तले ला सके हैं।

शेष तो यह एक उपन्यास है। पात्र काल्पनिक हैं। इतिहास को ठीक-ठीक रखने का यत्न किया गया है। इसमें सत्य है तब की हिन्दुओं की दयनीय दशा।

मुसलमान अभी भी यहाँ हैं। अभी भी पाकिस्तान है, जहाँ तबलीग का दौर वेग से चल रहा है और हिन्दू अभी भी अपने को वैसा ही असहाय पाता है, जैसा उस काल में था, जब की यह कथा है।

यह रचना

साहित्यकार गुरुदत्त—प्रतिनिधि रचनाएँ (खण्ड दस)

के रूप में भी प्रकाशित हुई है।

हिन्दी साहित्य सदन

२ बी.डी. चैम्बर्स, १०/५४, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,

नई दिल्ली-११०००५ फोन : २३५५३६२४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं विचारक श्री गुरुदत्त की
गीता की विवेचना में से अनुपम रचना

श्रीमद्भगवद्गीता

सरल सुबोध भाषा भाष्य
मूल्य १२० रुपये

एक अध्ययन
मूल्य : १२०.००

जिस जाति को धरोहर में गीता का ज्ञान मिला हो, उस जाति के घटक आज मरने से भयभीत हों तो यह आश्चर्य की बात है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम गीता को ऐसा ज्ञान मानते हैं जिसकी आवश्यकता वृद्धावस्था में मृत्यु के किनारे बैठे हुए पड़ती है।

वास्तव में गीता-ज्ञान मनुष्य को कर्म-क्षेत्र में उतरने के समय मिलना चाहिए। गीता मुख्यतया कर्मयोग का ज्ञान है।

भगवद्गीता के ज्ञान की शुद्ध विवेचना में लिखी ये रचनाएँ अनुपम हैं।

हिन्दी साहित्य सदन

२ बी.डी. चैम्बर्स, १०/५४, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-११०००५ फोन : २३५५३६२४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतीय संस्कृति के उपासकों को एक अनुपम उपहार

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

साहित्यकार श्री गुरुदत्त के भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले निबन्धों का एक ही खण्ड में संग्रह।

वेद, पुराण, उपनिषद्, दर्शन शास्त्र, श्रीमद्भगवद्गीता, इतिहास, पुराण, मनुष्य, समाज, धर्म, इत्यादि विषयों पर विश्लेषणात्मक तथा प्रमाणसहित एवं युक्तियुक्त विवेचना अत्यन्त ही सरल भाषा में।

पाश्चात्य विद्वानों (?) तथा उनका अनुसरण करने वाले भारतीय लेखकों ने जो अपनी मिथ्या धारणाओं से समाज को भ्रमित तथा भ्रष्ट कर रहे हैं, उनका खण्डन करने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति का वास्तविक तथा उज्ज्वल रूप प्रस्तुत करने का यह एक अनुपम प्रयास है।

यह रचना पाठकों के लिए, समाज के लिए तथा भारतीय संस्कृति के उपासकों के लिए प्रेरणाप्रद सिद्ध होगी।

डिमाई आकार में, बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई।

मूल्य १५० रुपए।

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, डी. बी. गुप्ता मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005 फोन : 23553624

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh